# विषय सूची


| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | नगाड़ा नं. 1 | श्रीमत् से सद्गति, मनुष्य–मत से दुर्गति। | 2 |
| 2. | नगाड़ा नं.2 | बापदादा का वण्डरफुल नया पार्ट– धर्मराज शंकर प्रलयंकर | 4 |
| 3. | नागाड़ा नं.3 | प्रजापिता की सोल – शंकर द्वारा, त्रिमूर्ति शिव परमपिता परम + आत्मा का विचित्र नया पार्ट चल रहा है। | 12 |
| 4. | नगाड़ा नं.4, 5 | त्रिमूर्ति शिव परमात्मा के शरीर रूपी रथ–प्रजापिता की सोल–विश्वनाथ शंकर की विस्तृत पहचान। | 20 |
| 5. | नगाड़ा नं. 6 | विश्व महाराजन श्री लक्ष्मी–नारायण बनाम शंकर–पार्वती | 34 |
| 6. | नगाड़ा नं.7 | चतुर्भुजी ब्रह्मा द्वारा सृष्टि चक्र बनाम सुदर्शन चक्र फिर से घूमा | 39 |
| 7. | नगाड़ा नं.8 | संगमयुगी राधा–कृष्ण का पार्ट प्रत्यक्ष होने की यादगार ''जन्माष्टमी'' हैं। | 47 |
| 8. | नगाड़ा नं.9 | कल्पवृक्ष – अंधश्रद्धालु मात्र के लिये दिव्य बुद्धि और दिव्य दृष्टि का ईश्वरीय वरदान | 54 |
| 9. | नगाड़ा नं. 10 | सावधान! (यज्ञ में) भक्तिमार्गीय रावण–राज्य की शूटिंग चल रही हैं। | 74 |
| 10. | नगाड़ा नं.11 | सावधान! रावणराज्य की कलियुगी तामसी शूटिंग | 81 |
| 11. | नगाड़ा नं. 12 | रुद्र और रुद्र वत्सों के कर्मों की गुह्य गति का रहस्य | 88 |



- दिल्ली : ए-1, 351-352, विजय विहार, पो. रिठाला, दिल्ली-110 085 (0) 9891370007 (0) 9311161007
- कम्पिला : नेहरु नगर,गंगा रोड,ग्रा.पो. कम्पिल, जि.फर्रुखाबाद (यू.पी.) 207505 (0)9580568954, 8419089916

||ॐ शान्ति|| || परम+आत्मा प्रत्यक्षता बॉम्ब || शिवबाबा याद है।

# नगाड़ा नं. 1 (दिनांक 1.1.1979)

## श्रीमत से सद्गति, मनुष्य-मत से दुर्गति

श्रीमत क्या है? आबू से ब्रह्मा मुख से चलाई गई शिवबाबा की प्रमाणित मुरलियों को ही श्रीमत कहा जावेगा। इस मुरली की भेंट में किसी दीदी, दादी, दादा आदि मनुष्यमात्र की वाणी को शुभ राय ही कहा जावेगा, न कि श्रीमत; क्योंकि कोई भी छाती ठोक कर नहीं कह सकता कि मैं पावन, श्रेष्ठाचारी देवता या भगवान-भगवती बन चुका हूँ। अत: स्पष्ट है कि सभी आत्माएँ नम्बरवार पतित और भ्रष्ट हैं। नम्बरवार भ्रष्ट मनुष्यों की मत अर्थात् डायरैक्शन पर चलने वाले नम्बरवार भ्रष्ट ही बनेंगे। इसलिए शिवबाबा ने सावधान किया है "कोई भी देहधारी को गुरू न बनाओ।" (मु.3.4.75 पृ.3 मध्य); क्योंकि बाबा ने मुरली में बोला है -"परमपिता की ही श्रेष्ठ मत है, और सबकी है आसुरी मत। बाप है अकेला सत्य" ●"माया की प्रवेशता के कारण मनुष्य जो कुछ कहेंगे वह असत्य ही कहेंगे। जिसको आसुरी मत कहा जाता है । बाप की है ईश्वरीय मत। ......एक ईश्वर की मत को ही श्रीमत कहेंगे।" (मु. 8.3.73 पृ.1 आदि) ●"और सभी की मत है कुमत। कलियुगी आसुरी मत। उनसे कुमत ही बनेंगे।...... और कोई की मत ली तो धोखा खाया।" (मु.2.4.73 पृ.2 अंत, 3 आदि) ●"श्रीमत है ही एक परमपिता परमात्मा की। बाकी सभी (की) है आसुरी मत, जिससे असुर ही बनते हैं।" (मु.2.6.73 पृ.3 मध्य) ●"शूद्रकुल में है मनुष्य मत, ब्राह्मण कुल में है ईश्वरीय मत।" (मु.25.6.74 पृ.1 मध्य) ● अव्यक्त बाबा ने कहा है -"कहीं-2 श्रीमत शब्द कॉमन रीति प्रयोग करते हैं। वास्तव में बापदादा द्वारा बच्चों प्रति डायरैक्ट उच्चारे हुये महावाक्य ही श्रीमत हैं, जो बापदादा की डायरैक्ट मुरलियों द्वारा अब भी रोज़ मिलते रहते हैं। बाकी आत्माओं की आत्माओं के प्रति शुभ राय कहेंगे, न कि श्रीमत। इसलिए छोटे-बड़े भाई-बहनों द्वारा मिली हुई राय को श्रीमत कहना श्रीमत के महत्त्व को कम करना है।"

उन ब्रह्माकुमार-कुमारियों का बड़ा दुर्भाग्य है जो संगमयुगी लास्ट जन्म के अल्पकालीन पद, मान, मर्तबा और सुख-साधन, सामग्री के मोहान्धकार में फँसने के कारण ईश्वरीय वाणी की भी अवहेलना करके देहधारियों के डायरैक्शन पर चलने के लिए मजबूर हैं। यहाँ तक कि कैदियों की तरह उन बेचारों को किसी व्यक्ति विशेष से मिलने, बात-चीत करने या पत्र-व्यवहार करने की इज़ाज़त नहीं। महाभारत प्रसिद्ध जरासिंधी अर्थात् पुराने सिंधियों की जेल का साक्षात् पार्ट चल रहा है। यह उसी कल्पपूर्व की यादगार है, जबकि 5000 वर्ष पहले भी 16000 राजे-रानियाँ इन्हीं जराजीर्ण पुराने सिंधियों के अधीन बन पड़े थे और कल्प-2 अधीन बनते रहेंगे और जरासिंधियों

के पार्ट भी इसी तरह खुलते रहेंगे; क्योंकि बाबा ने कहा है- अंत में सबके पार्ट खुल जावेंगे। ●"जो (सूर्यवंशी) वर्से के अधिकारी बनते हैं उन्हों का सर्व के ऊपर अधिकार होता है। वह (श्रीमत के अलावा) कोई भी बात के अधीन नहीं होते।".......(अ.वा. 24.1.70 पृ.183 आदि) ●"(किसी) व्यक्ति (अर्थात् दीदी, दादी, दादा आदि) के व वैभव के अधीन रहने वाली आत्मा (खुद भी सर्व अधिकारी नहीं बन सकती और) अन्य आत्माओं को भी सर्व अधिकारी नहीं बना सकती।" (अ.वा.26.6.74 पृ.80 म.) ●"अधीन न होना अर्थात् शेर व शेरनी की चाल चलना।" (अ.वा.23.4.77 पृ.95 अंत)

बाबा ने कभी किसी बहन-भाई को डायरैक्शन देने के लिए निमित्त नहीं बनाया; क्योंकि इस सृष्टि-रूपी रंगमंच का एकमात्र डायरैक्टर शिवबाबा ही है। हम सब बच्चों को उसी डायरैक्टर के डायरैक्शन पर चलना है। किसी देहधारी के इशारों पर नहीं। बाबा ने दीदी, दादियों, दादाओं और टीचरों को यज्ञ एवं यज्ञवत्सों के प्रति सेवाधारी बनने के लिए निमित्त बनाया था। संगमयुग में राजाई चलाने के लिए निमित्त नहीं बनाया था। बाबा ने कहा है- "कई ब्र.कु.कु. में तो बड़ा देह-अभिमान है। उनको तो जैसे कि यहाँ पर ही राजाई चाहिए। .....बाप तो कहते हैं मैं सर्वेंट हूँ; परंतु बच्चों में देहअभिमान है जिससे ही गिर जाते हैं।"(मु.3.5.67 रही हुई प्वाइंट्स) ●"सेन्टर पर किसी को भी राजाई पर ना बैठना है।" (मु.4.10.73 पृ.4 मध्य)

यह सर्वविदित है कि "मुख्य प्रशासिका", "सह प्रशासिका" या "ज़ोनल इंचार्ज" जैसे टाइटिल भी बापदादा के दिये हुये नहीं हैं। बल्कि बापदादा की अवहेलना करते हुये कुछ व्यक्तियों की चापलूसी का परिणाम मात्र है; क्योंकि अव्यक्त बापदादा ने पहली अ.वाणी में (मनमोहिनी) दीदी को यज्ञ सेवा की देख-रेख के लिए निमित्त बनाया था जबकि कुमारिका दादी को उनका मददगार बनाया गया था। ●"बाक़ी आज से सभी के लिए कौन निमित्त है वह तो आप जानते ही हैं- दीदी तो है, साथ में कुमारका मददगार है।" (अ.वा.21.1.69 पृ.21 अंत, 22 आदि)

प्रश्न उठता है कि साकार बाबा की अनुपस्थिति में हम ब्रह्माकुमार-कुमारियों को किसके डायरैक्शन पर चलना चाहिए? इसका सीधा जवाब है 'मुरली के डायरैक्शन पर'; क्योंकि 'मुरली ही हमारी लाठी है, जिसके आधार से हमें चलना है। तभी तो मु.20.5.77 पृ.1 की वाणी में बाबा ने कहा है-**"मुरली द्वारा सर्व समस्याओं का हल मिल सकता है।"** साफ है कि व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिए भी किसी देहधारी गुरू के पास भटकने की दरकार नहीं। अत: बाबा ने 2.6.73 पृ.3 मध्य की मुरली में कहा था-"बाप कहते हैं जो धक्के खाते हैं वे मुझे नहीं जानते हैं। उनको पता नहीं है कि बाप (मुरली की पढ़ाई) पढ़ाकर वर्सा दे रहे हैं।"

● "गुरुओं ने तो सत्यानाश कर दी है। एक गुरू (ब्रह्मा) मर गया। फिर जो गद्दी पर बैठा उनको गुरू कर लेते (अर्थात् उन्हीं की मत पर चल पड़ते हैं)। यह

(ज्ञानमार्ग में) तो एक ही सद्गुरू है।" (मु. 19.9.73 पृ.3 अंत) ●"यह कोई साधू-संत आदि नहीं, जिसकी गद्दी चली आई है। यह तो शिवबाबा की गद्दी है। ऐसे नहीं कि यह (ब्रह्मा) जायेगा तो दूसरा कोई गद्दी पर बैठेगा।"(मु.20.5.77 पृ.3 मध्य)

बाबा ने 24.8.74 पृ.1 अंत की मुरली में कहा है-"दुर्गति कौन करता है? ज़रूर यह गुरू लोग ही कहेंगे।" अत: हम ब्राह्मणों की छोटी-सी दुनिया में भी देहधारी गद्दीनशीन गुरुओं से भी सावधान रहना चाहिए। इनकी सुनाई हुई बातों अथवा डायरैक्शन्स को मुरलियों से टैली किये बिना अंधश्रद्धापूर्वक अमल करने की भूल नहीं करनी चाहिए; क्योंकि बाबा ने हमें खुद सावधान किया है-"ब्रह्माकुमारियों की मत मिलती है सो भी (मुरली से) जाँच करनी होती है कि यह मत राइट है वा राँग है।" (मु.31.1.70 पृ.2 अंत) ●"तुम बच्चों को भी कब सुनी-सुनाई बात पर विश्वास नहीं करना चाहिए।......धूतियाँ ऐसे-2 खराब काम करते हैं, झूठी बातें बनाये औरों की दिल खराब कर देते।" (मु.18.8.70 पृ.3 आदि) ●"सुनी-सुनाई बातों पर ही भारतवासियों ने दुर्गति को पाया है।" (मु.30.1.71 पृ.4 आदि)

अब संगमयुग में श्रीमत की अवहेलना से होने वाली दुर्गति अर्थात् नीचा पद पाने की खराब शूटिंग से हमें अपने को बचाना है। नहीं तो हो सकता है कि "अहो प्रभु तेरी लीला" कहकर पश्चाताप करने वालों की लाइन में खड़ा होना पड़े; क्योंकि ●"(ब्रह्मा) मुखवंशावली है तो जो बाबा मुख से कहे वो मानना पड़े।" (मु.8.10.73 पृ.3 मध्यांत)

**ओमशान्ति। ओमक्रान्ति।**

**।।ॐ शान्ति।।      ।। परम+आत्मा प्रत्यक्षता बॉम्ब ।।      शिवबाबा याद है।**

# नगाड़ा नं. 2 (दिनांक 18.1.79)

# (दिल्ली में सन् 76 से)

## बापदादा का वण्डरफुल नया पार्ट - धर्मराज शंकर प्रलयंकर

### (1) दिल्ली में शिवबाबा का वण्डरफुल नया पार्ट-

1969 में ब्रह्मा बाबा के शरीर छोड़ने के बाद हम ब्रह्मा वत्सों ने यह समझ लिया कि अब परमपिता शिव वापस परमधाम चले गये हैं तथा ब्रह्मा बाबा सूक्ष्मवतन चले गये हैं; लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। शिवबाबा ने बच्चों से किये गये वादे को पूरा करने के लिए सिर्फ अपना मनुष्य शरीर रूपी रथ और सेवास्थान बदला है। शिवबाबा के साकार पार्ट परिवर्तन करने तथा सेवास्थान बदलने के सम्बंध में अव्यक्त बापदादा

द्वारा 18 जनवरी 78 की अ.वाणी में स्पष्ट घोषणा की गई थी-

●"बापदादा कब प्रत्यक्ष दिखाई देते, कब पर्दे के अंदर छिपा हुआ दिखाई देते; लेकिन बाप-दादा सदा (ज्ञानी तू आत्मा) बच्चों के आगे प्रत्यक्ष हैं। .......'बाबा चला गया' यह कह अविनाशी सम्बंधों को विनाशी क्यों बनाते हो। सिर्फ (ब्रह्मा से शंकर रूप में) पार्ट परिवर्तन हुआ है। जैसे आप लोग भी सेवा स्थान चेंज करते हो ना। तो ब्रह्मा+बाप ने भी सेवा स्थान (मधुबन से दिल्ली राजधानी बनाने के लिए) चेंज किया है।" (अ.वा.18.1.78 पृ.34 अंत, 35 आदि)

●"संगमयुग पर तक़दीर की रेखा परिवर्तन करने वाला बाप सम्मुख पार्ट बजा रहे हैं।" ( अ.वा. 9.9.75 पृ.99 मध्य)

●(नं.वार एक-2 करके बाप के सहयोगी बनने वाली) हज़ार भुजा वाले ब्रह्मा के रूप का वर्तमान समय पार्ट चल रहा है। तब तो साकार सृष्टि में इस (प्रैक्टिकल) रूप का गायन और यादगार है। भुजाएँ (रूपी बच्चे) बाप के बिना कर्तव्य नहीं कर सकतीं। भुजाएँ बाप को प्रत्यक्ष करा रही हैं। कराने वाला (साकार बाप) है तब तो कर रहे हैं।...........(दूसरे) बच्चे जुदाई का पर्दा डाल देखते रहते हैं। फिर ढूँढ़ने में समय गँवाते हैं। हाज़िर-हजूर को भी छिपा देते।.......बहलाने की बातें नहीं सुना रहे हैं। और ही सेवा की स्पीड को अति तीव्र गति देने के लिए सिर्फ स्थान परिवर्तन किया है। (कहाँ? दिल्ली की ओर) (अ.वा. ता.18.1.78 पृ.35 मध्य, 36 आदि)

शिवबाबा ने मुरलियों में कहा है कि वे तीन मूर्तियों द्वारा पार्ट बजाते हैं- ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश और विष्णु द्वारा पालना। जब ब्रह्मा का पार्ट समाप्त होता है तो शंकर का पार्ट प्रारम्भ हो जाता है। शंकर के पार्ट के लिए शिवबाबा ने साकार मुरलियों और अव्यक्त वाणियों में कई इशारे दिये हैं। **ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में शंकर का पार्ट तो सन् 1969 से ही आरम्भ हो चुका था; किन्तु शंकर के पार्ट की प्रत्यक्षता सन् 1976 से दिल्ली में हुई।** इस वर्ष को बाबा ने प्रत्यक्षता वर्ष के रूप में पहले ही घोषित कर दिया था। साथ ही 1976 को ब्रह्मा बाबा समेत सभी ब्रह्माकुमार-कुमारियों ने दस वर्ष पहले अर्थात् 1966 से ही दुनिया के विनाश का वर्ष भी घोषित कर दिया था, जबकि यह सारे दुनिया के स्थूल विनाश के लिए नहीं अपितु ब्राह्मणों की दुनिया में ज्ञान सूर्य के रूप में प्रत्यक्ष होने वाले पार्टधारी के मन-बुद्धि से विकारों और भ्रष्टाचार के अंत होने के प्रति इशारा था। **बेहद का बाप बेहद के बच्चों से बेहद की बातें करते हैं। उन बातों को हद की दुनिया में बुद्धि लगाने वाले बच्चे नहीं समझ सकते। वैसे भी दुनिया का हर कार्य सूक्ष्म में पूरा होने के बाद ही स्थूल में पूरा होता है।** जैसे मकान बनाने या बिगाड़ने की सूक्ष्म रूप-रेखा पहले बुद्धि और फिर काग़ज़ में बनाते हैं और फिर प्रैक्टिकल में करते हैं। तो यह सन् 76 से सम्पन्न होने वाली घोषणा भी ब्राह्मणों की ही सूक्ष्म संगमयुगी दुनिया की स्थापना और विनाश की घोषणा थी जो सन् 76 से प्रैक्टिकल में पूरी हो रही है।

ब्रह्माकुमार-कुमारियों ने सन् 1976 को धूमधाम से बाप के प्रत्यक्षता वर्ष के रूप में मनाया; किंतु न तो सारी दुनिया की आत्माओं के बीच बाप की प्रत्यक्षता हो सकी और न उनकी आशाओं के अनुरूप दुनिया का विनाश हुआ। अत: जब अधिकतर ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ 1976 में विनाश न होने पर निश्चय-अनिश्चय के संकल्पों से जूझ रहे थे और उनके मन में हाहाकार मचा हुआ था, ठीक उन्हीं दिनों दिल्ली में यमुना के कण्ठे पर यानी यमुना के किनारे के (शाहदरा-कृष्णानगर-चांदनी चौक-नोवेल्टी-साउथ-ग्रीनपार्क-महरौली आदि) सेवाकेंद्रों के भाई-बहनों के बुद्धिरूपी क्षेत्र में सत्यज्ञान अर्थात् सच्चखण्ड की स्थापना हो रही थी और उनकी बुद्धि जयजयकार के नारे भी लगा रही थी; क्योंकि उन्होंने पाण्डवपति भगवान के साकार पार्ट को ज्ञान के तीसरे नेत्र से पहचान लिया था। बाबा ने ता.14.5.70 पृ.2 के आदि की मुरली में कहा भी है-"शंकर क्या करते हैं? उनका पार्ट ऐसा वण्डरफुल है जो तुम विश्वास कर न सको।" अपने नये सेवास्थान दिल्ली के सम्बंध में बाबा ने कई मुरलियों और अव्यक्त वाणियों में इशारे दिये हैं,

●"बाबा ने बताया था दिल्ली में बिरला मंदिर में एक पत्थर लगा हुआ है जिसमें लिखा हुआ है भारत कब्रिस्तान (अर्थात् अज्ञानी) था। उनको धर्मराज ने परिस्तान (ज्ञानपरियों का स्थान) बनाया।" (मु.16.12.71 पृ.2 आदि)

●"बाबा ने बताया था कि बिड़ला मंदिर में भी लिखा हुआ है (धर्मराज ने) दिल्ली को परिस्तान बनाया था।" (मु.27.7.73 पृ.1 मध्य) वास्तव में यह कल्पपूर्व के वर्तमानकालीन धर्मराज के पार्ट की यादगार है।

●"देहली पर (यादव-कौरव-पाण्डव) सबको चढ़ाई करनी है। देहली की धरणी को प्रणाम ज़रूर करना है।......देहली के तरफ़ सभी की नज़र है। (साकार) बाप की भी नज़र है तो सर्व की भी नज़र है।.....देहली से सेवा की प्रेरणा मिलनी चाहिए। जैसे सेंट्रल गवर्मेंट है तो सेंटर द्वारा सर्व स्टेशन को डायरैक्शन मिलते हैं वैसे सेवा के प्लैन्स वा सेवा को नवीनता में लाने के लिए पार्लियामेंट होनी चाहिए।...... तो जैसे (राजधानी) स्थापना में नं.वन देहली रही वैसे विशेषताओं के गुलदस्ते में भी नम्बरवन बनना है।......जैसे मधुबन चरित्र भूमि है, मिलन भूमि है, बाप को साकार रूप में अनुभव कराने वाली भूमि है वैसे देहली की धरणी सेवा को प्रत्यक्ष रूप देने के निमित्त है तब देहली से आवाज़ निकलेगा। अभी सबकी बुद्धियों में यह संकल्प तक उत्पन्न हुआ है कि जो कुछ (यह मेले-मलाखड़े आदि) कर रहे हैं, जो चल रहा है उससे कुछ होना नहीं है, अभी सब सहारे टूटने लगे हैं; इसलिए ऐसे समय पर यथार्थ (साकार बाप का) सहारा अभी जल्दी ढूँढ़ेंगे। माँग करेंगे- ऐसी नई बात कोई सुनावे और आख़िरीन में चारों तरफ़ भटकने के बाद (दिल्ली में) बाप के सहारे के आगे सब माथा झुकावेंगे। समझे- अब देहली वालों को क्या करना है।" (अ.वा. ता.26.12.78 पृ.155,156,157)

## (2) ब्रह्माकुमारी गुलज़ार मोहिनी में सिर्फ ब्रह्मा बाबा प्रवेश करते हैं; शिवबाबा नहीं-

18 जनवरी, 1969 को ब्रह्मा बाबा के शरीर छोड़ने के पश्चात 21 जनवरी, 1969 से ब्र.कु. गुलज़ार मोहिनी के शरीर के द्वारा अव्यक्त वाणियाँ सुनाने का पार्ट आरम्भ हुआ। अव्यक्त वाणियों में 'बापदादा' शब्द के प्रयोग को ध्यान में रखते हुये ब्रह्माकुमार-कुमारियों ने समझ लिया कि गुलज़ार दादी के तन में परमपिता शिव और ब्रह्मा बाबा की आत्मा, दोनों ही प्रवेश करते हैं; लेकिन वास्तव में 1969 से पहले चली साकार मुरलियों तथा 1969 के बाद चली अव्यक्त वाणियों के आधार पर यह सिद्ध होता है कि ब्रह्माकुमारी गुलज़ार मोहिनी के तन में शिवबाबा नहीं आते, सिर्फ ब्रह्मा बाबा की आकारी अर्थात् सूक्ष्म शरीरधारी आत्मा ही उनमें प्रवेश करती है।

(i) अ.बापदादा ने कई बार कहा है कि बाप तो वानप्रस्थी अर्थात् वाणी से परे हो गया। जो वाणी से परे हो गया वह फिर वाणी में कैसे आवेगा?

(ii) 'बापदादा' शब्द का उच्चारण सिर्फ इसलिए किया जाता है कि हम बच्चों के मुक़ाबले ब्रह्मा बाबा अब भी बुद्धियोग से सदा शिवबाबा के साथ हैं।

(iii) शिवबाबा का दिव्य जन्म अर्थात् दिव्य प्रवेश होता है अर्थात् जिसके शरीर में प्रवेश करते हैं उस व्यक्ति को अपनी स्मृति रहती है। जैसे ब्रह्मा बाबा की आत्मा शिवबाबा की प्रवेशता के समय स्वयं भी मुरली सुनती थी। जबकि ब्र.कु.गुलज़ार को प्रवेशता के समय अपनी स्मृति नहीं रहती। उन्हें दुबारा अ.वाणी पढ़नी पड़ती है; क्योंकि उस समय उनकी अपनी आत्मा ब्रह्मा बाबा के सूक्ष्म शरीर के दबाव के कारण गुम हो जाती है। ता.12.7.73 पृ.3 की साकार मुरली के मध्य में बाबा ने कहा भी है- "घोस्ट भी आकर प्रवेश करते हैं। तो वह आत्मा हुई न। (परमात्मा नहीं हुई; क्योंकि) घोस्ट अपना कर्तव्य करते हैं तो उनका फिर पार्ट बन्द हो जाता।" परंतु ज्ञानी होने के कारण ब्रह्मा की सोल घोस्ट अर्थात् भूत-प्रेतात्माओं की तरह ईविल पार्ट नहीं बजाती।

(iv) शिवबाबा पतित तन में आते हैं। ब्र.कु.गुलज़ार तो आजन्म कुमारी रही है। कुमारी के पवित्र शरीर में ईश्वरीय नियमानुसार शिवबाबा की प्रवेशता सिद्ध नहीं होती। बाबा ने ता.15.10.69 पृ.2 की मु. के मध्य में कहा भी है- "(शिवबाबा) पवित्र कन्या के तन में आवें; परंतु कायदा नहीं है। बाप सो फिर कुमारी पर कैसे सवारी करेंगे?"

● "एकदम (कामी) काँटों को बैठ शिक्षा देते हैं। प्रवेश भी काँटे में किया है। ....... नं.वन काँटे में मैं आकर उनको नं.वन फूल बनाता हूँ।" (मु.26.2.74 पृ.2 अंत) (भला बताइये सन् 69 से नं.वन काँटा कौन है?)

(v) शिवबाबा ने अपना मुकर्रर रथ प्रजापिता ब्रह्मा को बताया है। ता.8.1.75 पृ.2 अंत की मुरली में कहा है - "मैं इस तन में प्रवेश करता हूँ। यह मुकर्रर तन है।

दूसरे कोई में (प्रत्यक्ष या व्यक्त रूप से) कब आते ही नहीं। हाँ, बच्चों में कब मम्मा, कब बाबा (बिंदु रूप स्टेज में) आ सकते हैं मदद करने (के) लिए।"

**(vi)** ब्रह्मा बाबा में शिव की प्रवेशता के समय किसी को पता नहीं चलता था। जबकि मधुबन में सूक्ष्म शरीरधारी ब्रह्मा बाबा की प्रवेशता का सबको पता पड़ जाता है; क्योंकि उनकी बैठक, नैन-चैन और मुख की आभा में परिवर्तन आ जाता है।

● "बाप...... जब आते हैं तो कोई को पता पड़ता है क्या? बाबा को पता पड़ता है क्या? ......नहीं, पता भी नहीं पड़ता। (रात्रि क्लास 5.3.73 मध्य)

स्पष्ट है कि ब्र.कु.गुलज़ार मोहिनी द्वारा शिवबाबा धर्मराज बाप का पार्ट नहीं बजाते। हाँ, आर-प्यार और मार की तीन नीतियों में से जो बड़ी माँ के रूप में पार्ट बजाने वाले ब्रह्मा के प्यार से नहीं सुधर सके उन्हें इस आर अर्थात् अरई लगाने वाले अव्यक्त बापदादा के पार्ट की भी ज़रूरत थी; परंतु जैसे मोटी चमड़ी के जानवर अरई की परवाह नहीं करते वैसे मोटी बुद्धि वालों को भी पता नहीं चलता कि उन्हें अरई लगाई जा रही है। उनके ऊपर फिर उबलते हुये (ज्ञान) जल की धाराएँ डालकर धर्मराज बाप के (ज्ञान) डंडों की पिटाई द्वारा खाल ही उधेड़ दी जाती है। इसलिए 22.10.70 पृ.310 के अंत की अ.वाणी में बाबा ने हम बच्चों को सावधान भी किया था- "अभी थोड़े समय के अंदर धर्मराज का रूप प्रत्यक्ष अनुभव करेंगे; क्योंकि अब अंतिम समय है।"

● बाबा ने मुरली में कहा है-"सजाएँ भी (सभी को) यहाँ ही (इसी दुनियाँ में) खानी होंगी।" (मु.16.9.68 पृ.4 अन्त)

## (3) राम की आत्मा ही यज्ञ के आदि और अंत में प्रजापिता तथा मध्य में शंकर का पार्ट बजाती है-

शिवबाबा ही प्रजापिता और ब्रह्मा की सोल द्वारा क्रमशः ज्ञानसूर्य बाप और ज्ञान चंद्रमा ब्रह्मा अर्थात् बड़ी माँ के रूप से प्रत्यक्ष होते हैं। इसलिए उस ज्योतिर्बिंदु को **"त्वमेव माता च पिता"** कहा जाता है। जन्म-मरण के चक्र में आने वाली छः/सातसौ करोड़ मनुष्यात्माओं के बीच सबसे पावरफुल अर्थात् परम मनुष्यात्मा को ही प्रजापिता कहा जाता है। उस प्रजापिता (दादा लेखराज के भागीदार) में सबसे पहले प्रवेश करके परमपिता शिव ने ब्रह्मा बाबा को हुये साक्षात्कारों के रहस्य को खोला था। उस प्रजापिता के साथ आदि में यज्ञ माता का पार्ट बजाने वाली कोई दूसरी थी। साथ ही दादा लेखराज के साथ-2 एक और माता ने भी साक्षात्कारों का रहस्य सुना था। ओम राधे सरस्वती (मम्मा), जिन्हें हम जगदम्बा के रूप में जानते और मानते हैं, बाद में यज्ञ में आई थीं। इस तरह बड़ी माता-ब्रह्मा के भी बुद्धि रूपी पेट में ज्ञान का बीज डालने वाला व्यक्ति परमपिता का मुकर्रर साकार रथ या सारी मनुष्य-सृष्टि का प्रजापिता, जगतपिता, विश्वपिता या सब आत्माओं में परम पार्ट बजाने वाला परम+आत्मा (परमात्मा) साबित हो जाता है। 'परम' शब्द का अर्थ ही है- सबसे बड़ा।

इसलिए 8.2.78 पृ.1 की मुरली आदि में कहा है-

**● "बेहद के भी दो बाप हैं। (एक शिवबाप, दूसरा प्रजापिता) तो माँ भी ज़रूर दो होंगी, एक जगदम्बा माँ, दूसरी यह (ब्रह्मा) भी माता ठहरी। (एक तो ब्रह्मा, दूसरी सरस्वती)"**

बेहद का साकार बाप प्रजापिता ब्रह्मा बिगर कोई होता नहीं। बेहद 500/700 करोड़ को कहा जाता है। इतनी सब मनुष्यात्माएँ ब्रह्मा को बाप नहीं मानतीं। अतः बड़ी माता ब्रह्मा अर्थात् जगदम्बा के स्वरूप को सिर्फ़ भारतवासी ही मानते हैं। सारे जगत या दूसरे धर्म के लोग नहीं मानते। यह ज्ञान-चंद्रमा ब्रह्मा ही 100 वर्ष की आयु पूरी होते-2 सम्पूर्ण बनकर संगमयुग के अंतकाल में दूसरा जन्म लेने वाले उसी प्रजापिता की सोल 'शंकर' में प्रवेश करता है। इसलिए आज भी शंकर के माथे पर चंद्रमा दिखाया जाता है और उनका कोई साकार बाप या जन्मस्थान भी नहीं दिखाया जाता; क्योंकि उस निराकारी स्टेज में स्थिर होने वाले के साकार शरीर द्वारा ही सब बापों (धर्मपिताओं) का बाप शिवबाबा संसार में प्रत्यक्ष होता है।

ता. 10.5.74 पृ.2 के अंत और 28 मई, सन् 1974 पृ.2 के अंत की मुरली के अनुसार यज्ञ के शुरू में मम्मा-बाबा को भी साकार में कन्ट्रोल करने वाली, डायरैक्शन देने वाली, रूहानी ड्रिल कराने वाली, टीचर हो बैठने वाली आत्मा ही प्रजापिता थी; क्योंकि बाप ही माँ को कन्ट्रोल करने का अधिकारी है, बच्चे नहीं। 'जो आदि में हुआ सो अंत में होना है' के नियमानुसार वह छुपा रुस्तम प्रजापिता की सोल बाद में बच्चों के सामने खुलकर विश्व की बादशाही का वर्सा दिलाने के लिए प्रैक्टिकल में प्रत्यक्ष हो जाती है। इसलिए ता.1.3.76 पृ.3 मध्य की मुरली में बाबा ने स्पष्ट कहा था कि ● "शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ब्र.कु.कुमारियों को वर्सा देते हैं। ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा ब्राह्मण कुल की रचना रचते हैं।" आदि में बीज बोने और अंत में वर्सा देने का पार्ट बाप का होता है। जबकि मध्य में जन्म देने, पालना करने और प्यार देने का पार्ट माता का होता है। माता का पार्ट मम्मा-बाबा द्वारा बखूबी निभाया गया; परंतु अभी अंत में फिर उसी निराकार बाप से प्रीतबुद्धि बच्चों को नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार वैजयंती माला में पिरोने, संगमयुगी विश्व की बादशाही का अविनाशी वर्सा देने का महान् कार्य शिवबाप को उसी प्रजापिता की सोल द्वारा इस जन्म में शंकर के नाम-रूप से सम्पन्न कराना है। जैसे सतयुगी राधा-कृष्ण की आत्माएँ अपने संगमयुगी 84वें जन्म में ब्रह्मा-सरस्वती के नाम-रूप से बेहद की माताओं का प्यार का पार्ट बजाती हैं ठीक वैसे ही राम-सीता की आत्माएँ अपने अंतिम 84 वें संगमयुगी जन्म में महाकाल और महाकाली या शंकर-पार्वती के नाम-रूप से तांडव नृत्य करने का पार्ट बजाती है। 'ताड़' धातु का अर्थ ही है- पिटाई करना। ज्ञानीजन ज्ञान डंडे का प्रयोग करेंगे और देहाभिमानी असुरों का काम है- बाहुबल का प्रयोग करना। जिसके पास जो प्रॉपर्टी होती है उसे उसका नशा रहता है। ज्ञान-योगबल वाले विश्व की बादशाही पा लेते हैं जबकि

बाहुबल वाले गँवाते हैं। इसी आधार पर देव और असुर, कौरव और पांडव अथवा राम या रावण सम्प्रदाय के अलग-2 पार्ट भी खुल जाते हैं।

राम और राम सम्प्रदाय की आत्माओं के बुद्धि रूपी तरकस में ज्ञान के नुकीले बाण भरे होंगे। प्रजापिता का पार्ट बजाने वाली यह राम की आत्मा ही यज्ञ के अंदर पूर्वजन्म में फेल हुई थी अर्थात् शुरू में ड्रामा का ज्ञान न होने के कारण सबसे पहले शिवपिता से बिछुड़ गई थी। अत: बाप के उस सिकीलधे, सबसे बड़े और अनन्य बच्चे को पूर्वजन्म की प्रारब्ध से इस दूसरी बार मिले ब्राह्मण जन्म में ऑटोमैटिक ज्ञान के तीर और पुरुषार्थ की कमान मिल जाती है। यह कोई त्रेतायुग में धनुष-बाण लेकर जन्म लेने की बात नहीं है। संगमयुगी प्रैक्टिकल पार्ट का गायन है। इसलिए वह आत्मा लास्ट में आने पर भी पूर्वजन्म की प्रारब्ध से फास्ट जाने के कारण अकेले योगबल से ही विश्व की बादशाही लेने की हाईजम्प लगाने में सफल हो जाती है। चूँकि राम के इस संगमयुगी दूसरे जन्म के शरीर में प्रवेश करके ही बिंदु रूप निराकार राम (शिव) और फर्स्टक्लास सीता (ब्रह्मा) अर्थात् बापदादा प्रैक्टिकल में स्वर्ग की स्थापना कर दिखाते हैं। अत: सतयुग को **रामपुरी या रामराज्य** कहा जाता है। (संदर्भ-मुरली 6.3.75 व 24.5.71) 'पतित-पावन सीताराम' या 'सर्व का सद्गति दाता राम' आदि गायन भी शंकर-पार्वती के नाम-रूप से पार्ट बजाने वाले इसी अंतिम 84वें जन्म के संगमयुगी शरीरों का ही गायन है। चौदह कला वाले त्रेतायुगी राम-सीता का नहीं।

## (4) सूक्ष्म आकारी स्टेज में रहने वाला साकारी शंकर अवश्य है-

जहाँ तक शंकर के पार्ट की बात है, मुरलियों में बाबा ने बताया है कि-"शंकर का इतना पार्ट नहीं"; लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि शंकर है ही नहीं। वास्तव में पार्ट जो देखने में आता है वह है कर्मणा और वाचा; परंतु शंकर को सदा याद में बैठा हुआ दिखाते हैं। कोई एक्टिविटी करते हुये नहीं दिखाते। वह तो सिर्फ़ योगबल से विश्व की बादशाही लेता है। उसके द्वारा विनाश की कल्याणकारी वाणी चलाने का पार्ट ब्रह्मा की सोल का है। जबकि बाक़ी बचे ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय धर्म की राजधानी स्थापना का पार्ट शिवबाबा का है- जो शंकर के शरीर द्वारा समय प्रति समय चलता रहता है। इस तरह शंकर का पार्ट बेशक नहीं है; परंतु शंकर अवश्य है। बाबा ने 26.2.73 पृ.1 की मुरली के अंत में कहा था-

- "शंकर द्वारा विनाश होना है। वह भी अपना कर्तव्य कर रहे हैं। ज़रूर शंकर भी है तब तो साक्षात्कार होता है।"
- "सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का भी मंदिर यहाँ है; क्योंकि आते तो हैं न।" (मु.25.6.73 पृ.1 अंत)
- "वहाँ (अमरनाथ में) तो शिव का चित्र दिखाते हैं। अच्छा, शिव किसमें बैठा? शिव और शंकर दिखाते हैं। शिव ने शंकर में बैठ कथा सुनाई। ऐसा हिसाब हो

जाता है।" (मु.6.10.76 पृ.3 मध्य)

कहीं-2 शंकर के अस्तित्व को नकारने वालों से बाबा ने डायरैक्ट सवाल किया है- ● "कुमारका! बताओ, शिवबाबा को कितने बच्चे हैं? कोई कहते हैं 500 करोड़। कोई कहते, एक बच्चा ब्रह्मा है। क्या शंकर बच्चा नहीं है? तब शंकर किसका बच्चा है? यह भी गुंजाइश है। मैं कहता हूँ शिवबाबा को दो बच्चे हैं; क्योंकि ब्रह्मा, वह तो विष्णु बन जाते हैं। बाक़ी रहा शंकर, तो दो हुये ना। तुम शंकर को क्यों छोड़ देते हो?" (मु.14.5.72 पृ.2 अंत)

अकसर यह प्रश्न भी उठाया जाता है कि बाबा ने पहले से इस नये पार्ट के बारे में क्यों नहीं बताया? उसका सीधा और साफ़ जवाब यह है कि **इस यज्ञ में जो पूजनीय देवता बनने वाले होंगे उन ब्राह्मणों को बाबा का इशारा ही काफ़ी होता है।** जबकि मनुष्य आत्माएँ कहने-सुनने से ही समझती हैं और यज्ञ के अंदर रहकर भी विकर्म करके सौगुणा पाप का बोझा चढ़ाने वाली आसुरी स्टेज को पाई हुई आत्माएँ बार-2 कहने पर भी न सुनती हैं, न समझती हैं और न मानती हैं। उन यादव वंशियों का तो धर्मराज शंकर ही मालिक है; क्योंकि बाबा ने शंकर को यादवों का हेड बताया है। साकार मुरलियों और अ.वाणियों में बापदादा के इस नये धर्मराज के पार्ट का स्पष्ट इशारा ब्राह्मण देवताओं को समय प्रति समय मिलता ही रहा है, जो इस प्रकार हैः-

●"मैं तो थोड़े समय (अधिकतम् 33 वर्ष) के लिए इनमें प्रवेश करता हूँ। यह (ब्रह्मा) तो पुरानी जूती है। पुरुष की एक स्त्री मर जाती है तो कहते हैं पुरानी जूती गई, अब फिर नई लेते हैं। यह भी पुराना तन है ना।" (मु.1.6.99 पृ.2 आदि) (यहाँ स्पष्ट है कि आगे चलकर नया नौजवान तन लेने का शिवबाबा का इरादा पहले से ही था।)

●"एक दिन टेलीविजन भी निकलेगा; परन्तु सभी तो देख नहीं सकेंगे। देखेंगे, बाबा मुरली चला रहे हैं। आवाज़ भी सुनेंगे।" (मु.23.8.73 पृ.3 आदि)

●"बाप (शिव) भी साकार से आकारी बना, आकारी से फिर निराकारी (बिंदु) और फिर साकारी बनेंगे।" (अ.वा.15.9.74 पृ.131 मध्य)

●"यह तो शिवबाबा का रथ है ना। (जो रथ) सारे वर्ल्ड को हैविन बनाने वाला है।" (मु.11.1.75 पृ.3 मध्य) लखपति दादा लेखराज (ब्रह्मा) के रथ द्वारा तो सारी दुनिया हैविन बनी नहीं। तो ज़रूर किसी न किसी बैगरी शरीर रूपी रथ द्वारा ही यह कार्य सम्पन्न होगा; क्योंकि "फुल बैगर टू फुल प्रिंस" तो शंकर जैसा मस्त कलंकीधर फ़क़ीर ही बनेगा। बाक़ी के लाख, करोड़, अरब तो मिट्टी में मिल जावेंगे।

●"घबराओ मत! बैकबोन बापदादा, सामना करने के लिए किसी भी व्यक्त तन द्वारा समय पर प्रत्यक्ष हो ही जावेंगे और अब भी हो रहे हैं।" (अ.वा.16.1.75 पृ.16 आदि)

पीठ पीछे पिलर के रूप में सदा लगी रहने वाली हड्डी को यहाँ 'बैकबोन

बापदादा' कहा गया है। कहते हैं ना पिलर अर्थात् खंभा फाड़कर हिरण्यकश्यप रूपी दुश्मनों का सामना करने के लिए कल्प पहले भी भगवान प्रत्यक्ष हुये थे। सो अब भी कहा कि 'किसी भी' अर्थात् साधारण से साधारण व्यक्ति द्वारा समय आने पर प्रत्यक्ष हो ही जावेंगे। हालाँकि यज्ञ में आस्तीन के साँप बनकर घुसे बैठे दुश्मनों का सामना करने का यह ईश्वरीय कर्तव्य सन् 74/75 से चल रहा है जबकि अ. बापदादा ने कहा था कि-"आगे चलकर बापदादा भी स्पष्ट चैलेंज देंगे, तब क्या कर सकेंगे?'' इसलिए सन् 75 की अ.वा. में कहा कि "अब भी प्रत्यक्ष हो रहे हैं"; परंतु पहचानने की बात है। आगे चलकर बिल्कुल ही प्रत्यक्ष हो जावेंगे। ज्ञान चंद्रमा ब्रह्मा भी धीरे-2 ही नं.वार (बच्चों) को प्रत्यक्ष हुआ; परंतु चंद्रमा के शीतल प्रकाश में कीड़े-मकोड़े भी पलते रहते हैं। जबकि ज्ञान सूर्य के तीक्ष्ण प्रकाश में वही कीड़े-मकोड़े तिलमिलाते हैं और तड़प-2 कर नष्ट हो जाते हैं।

बलिहारी है उन पवित्र रहने वाले ऋषियों-मुनियों की जो फीके पड़ने वाले सितारों और छिपते हुये (ज्ञान) चंद्रमा की स्थिति को देखकर सूर्य निकलने से पहले ही पहचान लेते हैं कि इस दिशा से अर्थात् इस स्थान से, इतने समय बाद (ज्ञान) सूर्य प्रत्यक्ष होने वाला है। ऐसे ज्ञानीजन पहले से ही अज्ञान निद्रा छोड़कर सूर्य के सम्मुख होकर अर्थात् प्रीतिबुद्धि होकर अमृतवेले का तीव्र पुरुषार्थ करने लग पड़ते हैं। सूर्य के प्रत्यक्ष होने के बाद तो सारी दुनिया ही जाग जाती है। उस समय हम बच्चों ने भी पहचाना तो क्या बड़ी बात हुई? ज्ञान सूर्यवंशी बच्चे तो पहले से ही पहचान लेंगे।

**ओमशांति। ओमक्रांति:।**

**।।ॐशान्ति।। ।। परम+आत्मा प्रत्यक्षता बॉम्ब ।। शिवबाबा याद है।**

# नगाड़ा नं.3 (शिवरात्री सन् 79)

# प्रजापिता की सोल शंकर द्वारा, दिल्ली में डायरैक्ट त्रिमूर्ति शिव परमपिता परम+आत्मा का विचित्र नया पार्ट चल रहा है

अ.बापदादा ने ता.28.12.78 की अ.वा. के पृ.159 और 161 के मध्य में कहा है- "लास्ट (ज्ञान) बॉम्ब अर्थात् परमात्म बॉम्ब है बाप की प्रत्यक्षता का। जो देखे, जो (बाप के डायरैक्ट) सम्पर्क में आ करके सुने उन्हीं द्वारा यह आवाज़ निकले कि बाप आ गए हैं, डायरैक्ट ऑलमाइटी अॅथॉर्टी का कर्तव्य चल रहा है। ....... अंतिम पावरफुल बॉम्ब परमात्म प्रत्यक्षता अब शुरू नहीं की है।.......सिखाने वाला

डायरैक्ट ऑलमाइटी है, ज्ञानसूर्य साकार सृष्टि पर उदय हुआ है यह (बात) अभी गुप्त है। (क्योंकि दूसरी ओर मधुबन में ज्ञान चंद्रमा ब्रह्मा अभी तक अस्त नहीं हुआ)....... इस अंतिम बॉम्ब द्वारा......हरेक (ब्राह्मण) के बीच बाप प्रत्यक्ष होगा। (संगमयुगी) विश्व में विश्वपिता स्पष्ट दिखाई देगा।"

संगमयुग में ही विश्व महाराजन बनने वाले इसी विश्वपिता के लिए बाबा ने सन् 6.8.70 की अव्यक्त वाणी में कहा था- "जब विश्वराजन बनेंगे तो विश्व (अर्थात् 500/700 करोड़) का बाप ही कहेंगे ना। विश्व के राजन विश्व के बाप हैं ना।"

दादा लेखराज ब्रह्मा ने अलौकिक ब्राह्मण परिवार को माँ का प्यार तो दिया; लेकिन वो ना तो विश्वपिता और ना ही विश्वराजन के रूप में दुनिया के सम्मुख प्रत्यक्ष हुये। वो तो केवल अगले कल्प में सतयुग में 9 लाख देवी-देवताओं के पहले महाराजन श्री नारायण के रूप में राज्य करेंगे। इसलिए उन्हें विश्वपिता या विश्व महाराजन नहीं कहा जा सकता है। स्पष्ट है कि किसी और ब्राह्मण बच्चे के द्वारा ही विश्वपिता दिखाई देगा। ता.28.9.74 पृ.3 की मुरली के मध्य में कहा भी है- "(ब्रह्मा की संतान) ब्राह्मण भी यहाँ ही हैं। जिसको ग्रेट-ग्रेट ग्रैंड फादर कहा जाता है।" क्योंकि यज्ञ के शुरू में मम्मा-बाबा को भी डायरैक्शन देने वाली प्रजापिता की सोल ही दुबारा जन्म लेकर बैकबोन बापदादा अर्थात् डबल इंजन की प्रवेशता के कारण ऐसा निराकारी स्टेज वाला सम्पूर्ण ब्राह्मण बनती है जिसे संगमयुग में सब धर्मपिताएँ भिन्न नाम-रूप से प्रगट होकर आख़िरीन अपना बाप अर्थात् हैविनली ग्रैंड फादर मान ही लेते हैं। इसलिए 23.1.79 पृ.239 की अव्यक्त वाणी के मध्य में अ.बापदादा ने कहा है-"अनेक मत वाले सिर्फ़ एक बात को मान जाएँ कि हम सबका बाप एक है और वही अब (प्रैक्टिकली डायरैक्ट) कार्य कर रहे हैं।" तभी तो मुरली में बाबा ने कहा था-"आत्मा रूपी सूई की सारी कट उतरने पर (अर्थात् 1 सेकिंड में बिंदु रूप स्टेज में स्थित होने का अभ्यास होने पर) पिछाड़ी में डायरैक्ट बाप से सीखोगे।"

अव्यक्त वाणी में बाबा ने कहा था-"ज्ञानसूर्य के उदय होने पर सब कुछ स्पष्ट हो जावेगा", ●"जब सर्वशक्तिवान ज्ञान सूर्य के साथ अटूट संबंध है तो अपने आप में भी ऐसे ही हर बात स्पष्ट देखने में आयेगी। और जो चलते-2 पुरुषार्थ में माया का अंधकार वा धुँध आ जाता है, जो सत्य बात को छिपाने वाले हैं वह हट जायेंगे।" (अ.वा.22.1.70 पृ.170 आदि) अर्थात् मुरलियों के सारे ही गुह्य राज़ मुख्य-2 पार्टधारियों के पार्ट के साथ ही खुल जावेंगे। जो अब सन् 76 से किसी निमित्त बने व्यक्ति शंकर द्वारा लगातार खुलते जा रहे हैं। इसलिए ता.31.10.75 की अ.वा. पृ.255 के अंत में बाबा ने कहा था- "इस वर्ष में कोई नई बात ज़रूर होनी है। सन् 76 में जिस (बाप की प्रत्यक्षता) का प्लैन बनाया है; लेकिन निमित्त बनना पड़ता है। ......जो निमित्त बनता है, उसका सारे ब्राह्मण कुल में नाम बाला होता है। यह भी प्राइज़ है" इसकी घोषणा अ.बापदादा ने अ.वाणी ता.23.9.73 में पृ.160,161

में की है और कहा है-"**अब लक्ष्य यह रखो कि सब मिलकर अपनी (दिल्ली) राजधानी पर विजय का झण्डा लहरावेंगे और सब पर विजय पावेंगे।......अब यह रिजल्ट आउट होनी है। राख कौन बनते हैं और कितने बनते हैं और कोटों में से, लाखों में से एक कौन निकलते हैं, वह भी देखेंगे।**"

ता. 4.2.76 की अ.वाणी जानबूझकर उस वर्ष की किताब में नहीं छापी गई है; क्योंकि इस वाणी के पृष्ठ 1 के आदि और 2 के अंत में बाबा ने (इस नये पार्ट के बारे में) स्पष्ट कहा था-"यह (सन् 76) वर्ष है जिसको (बाप की) प्रत्यक्षता वर्ष प्रसिद्ध किया है......ड्रामा अनुसार होगा वह तो ठीक है; लेकिन निमित्त कोई तो बनता है। जैसे (शुरू में यज्ञ की) स्थापना का पार्ट ड्रामा में था; लेकिन निमित्त एक ब्रह्मा (बना) ना। हिम्मत की, प्रैक्टिकल में आए, निमित्त बने तब तो हुआ। जैसे स्थापना के निमित्त साकार रूप में ब्रह्मा बने, ब्रह्मा तो अव्यक्त हो गए। अब साकार रूप में विनाश कराने वाले कौन?" इसका इशारा 1 जन. 79 पृ.166 की अव्यक्त वाणी के आदि में अ.बापदादा ने दीदी जी को इस प्रकार दिया है- "ब्रह्मा के संकल्प से (ब्राह्मणों की) सृष्टि रची और ब्रह्मा के संकल्प से ही गेट खुलेगा। अब शंकर कौन हुआ? यह भी गुह्य रहस्य है- जब ब्रह्मा ही विष्णु है तो शंकर कौन? इस पर भी रूह-रिहान करना।" बाप की प्रत्यक्षता का वर्ष सन् 76 पूरा होते ही दिल्ली महरौली के ब्रह्माकुमारी आश्रम में महा+रौला मचाने वाले किसी ऐसे ही महाविनाशकारी बच्चे की ओर पहले से ही स्पष्ट इशारा करते हुये ता.4.4.75 पृ.2 आदि की मुरली में बाबा ने कहा था-"ऐसा कोई आश्रम सारे का सारा पलट पड़े फिर तो सभी की आँख खुल जाए। बहुत समझते भी हैं जबकि यह महाभारत लड़ाई है, तो ज़रूर भगवान भी होना चाहिए।"

18 जन. 79 की अव्यक्त वाणी के पृ.227 के आदि और पृ.228 के आदि में भी बापदादा ने इस निमित्त बने नये पार्ट की ओर इशारा किया है "आज सभी बच्चे विशेष साकारी याद-प्रेम स्वरूप की स्मृति में ज़्यादा रहे। साकारी सो आकारी (अर्थात् साकार होते हुए भी आकारी अवस्था वाला)। बाप सभी (आदि रतन ज्ञानी बच्चों) के नयनों में समाए हुए हैं।........(परंतु) (अज्ञानी) बच्चे बाप से पूछते हैं- हम सबसे पहले अकेले वतनवासी क्यों? ....... बाप बोले, जैसे आदि में स्थापना के कार्य प्रति साकार रूप में निमित्त एक ही बने, अलफ की तार पहले एक को आई, सेवा अर्थ सर्वस्व त्यागमूर्त एक अकेले बने। जिसको (सम्मुख) देख बच्चों ने फॉलो फादर किया|....... (वैसे ही) अब अंत में भी बच्चों को ऊँचा उठाने के लिए वा अव्यक्त बनाने के लिए बाप (अर्थात् प्रजापिता) को ही (जीते जी) अव्यक्तवतनवासी बनना पड़ा। इस साकारी दुनिया से ऊँचा स्थान अव्यक्त वतन (बुद्धियोग द्वारा) अपनाना पड़ा। अभी बाप कहते हैं बाप (प्रजापिता) समान स्वयं को और सेवा को सम्पन्न करो"। (ब्रह्मा की तरह हार्टफेल होकर मरने की बात नहीं- देखिये ता. 18.1.79 की अ.वा. के मध्य

में पृ.1 पर) बाप (प्रजापिता) समान (बुद्धियोग से जीते जी) अव्यक्त वतनवासी बन जाओ। यही बात ता. 25.8.74 पृ.2 आदि की मुरली में है-"(बुद्धि से) ऊपर जाना माना मरना, शरीर (भान) छोड़ना। मरना कौन चाहते? यहाँ तो बाप ने कहा है तुम इस शरीर को भी भूल जाओ। जीते जी मरना तुमको सिखलाते हैं।" चूँकि सम्मुख देखकर फॉलो करने से सहज (योग) हो जाता है। अत: अ.वा.6.9.75 पृ.96 के अंत में इसी साकारी सो आकारी अवस्था में सम्मुख पार्ट बजाने वाले बाप के लिए कहा है-**"बाप सम्मुख आते और बच्चे (धन, पद, मान, मर्तबे में) अलमस्त होने के कारण देखते हुए भी नहीं देखते, सुनते हुए भी नहीं सुनते।"**

18 जन. सन् 1979 की अ.वाणी पृ.229 की अंतिम पंक्ति में भी साकारी बाप की वियोगी याद करने वाले बच्चों को कहा है- "साकार स्नेह के रिटर्न में साकार रूप (मौजूद) है"। सिर्फ़ उस बाप को और उसके वंडरफुल पार्ट को पहचानने की बात है। अत: इसी 18 जन. की वाणी में पृ.231 के मध्य में दीदी जी से अ.बापदादा ने कहा है, "जैसे बाप विचित्र है, विचित्र बाप की लीला भी विचित्र है- दुनिया वाले समझते हैं बाप चले गए और बाप बच्चों से विचित्र रूप में जब चाहें तब मिलन मना सकते। (बाहरी दुनिया वालों ने पहचाना ही नहीं था। अत: यहाँ संगमयुगी दुनिया वालों की ही बात है जो समझते हैं कि बाप अव्यक्तवतनवासी हो गये) (संगमयुगी) दुनिया वालों की आँखों के आगे (अज्ञान का) पर्दा आ गया (क्योंकि बाहरी दुनिया वालों का पर्दा हटा ही कब था?), वैसे भी (प्रैक्टिकली पारिवारिक) स्नेही मिलन पर्दे के अंदर अच्छा होता है- तो दुनिया की आँखों में पर्दा आ गया; लेकिन बाप (अपने आदि रतन) बच्चों से अलग हो नहीं सकता। वायदा है- साथ चलेंगे, वही वायदा याद है ना। जो आदि (में हुआ) सो अंत (में होना है)।" यहाँ फिर ब्राह्मण देवताओं को स्पष्ट इशारा दिया है कि जैसे शुरू में परमात्मा से प्रैक्टिकली सर्व सम्बंध जोड़ने के लिए खेल-पाल हुये वैसे अब अंत में भी पर्दा उठने वाला है। तमाशा होने वाला है। कोई हँसने वाला है, कोई रोने वाला है। इसलिए तो ता.6.11.82 पृ.3 अंत की मुरली में कहा था-**"पिछाड़ी में बहुत मज़े देखेंगे। शुरुआत से भी जास्ती।"** ● **"जैसे शुरू में बाबा ने तुम बच्चों को बहलाया है तो पिछाड़ी वालों का भी हक़ है।"** (मु.12.5.73 पृ.3 आदि) ● "शुरू-2 में जब बाबा आया, मकान तो छोटा ही था। मम्मा के कमरे से भी छोटा था। उसमें ही परमपिता परमात्मा ने आकर हॉस्पिटल अथवा यूनिवर्सिटी खोली। फिर धीरे-2 मकान बनते गए। पहले तो एक छोटी गली में मकान था तो (बाप समान सम्पूर्ण ब्राह्मण) बच्चों का भी यही कर्तव्य है।" (क्योंकि आदि सो अंत)(मु. 23.7.77 पृ.1 मध्य)

## (1) चीफ जस्टिस धर्मराज का देहली दरबार-

अ.वाणी ता.27.5.77 पृ.177 मध्य के अनुसार "दिल्ली दरबार कहते हैं तो दिल्ली को अपनी राज्य दरबार बनाई है? राजाई तैयार हो गई है? दरबार में कौन

बैठेंगे? दरबार में पहले तो महाराजा-महारानियाँ चाहिए।.......दिल्ली वालों को राज्य का फाउंडेशन (नींव) लगाना है।" ●"अपने फ़रिश्ते स्वरूप का अनावरण कब करेंगे? आपे ही करेंगे या चीफ गेस्ट (अर्थात् चीफ जस्टिस धर्मराज) को बुलायेंगे?" (अ.वा. ता.2.2.76 पृ.33 अंत) बापदादा के महावाक्यों के अनुसार शिव परमात्मा का यह दिव्य कर्तव्य राजधानी स्थापना के लिए दिल्ली में ही कहीं न कहीं अवश्य चल रहा है ताकि आदि रतन रूपी रुद्र और विजयमाला के बच्चों का बुद्धियोग डायरैक्ट बाप से सर्वसम्बंध जोड़कर शीघ्र ही नष्टोमोहा के फाइनल पेपर में पास कराने के लिए सहज खींचा जा सके। 29.11.78 पृ.84,85 के अंत की अ.वा. के अनुसार "विशेष बॉम्बे और देहली में आदि रतन ज़्यादा हैं। विश्व सेवा की स्थापना के कार्य में बॉम्बे और देहली का विशेष सहयोग है। समय पर सहयोगी बनने वालों का महत्व होता है।" ● "देहली का विशेष पार्ट (राजधानी) स्थापना में है और बॉम्बे का विशेष पार्ट विनाश में है।" (अ.वा. 26.12.78 पृ.155) अत: दिल्ली में राजधानी जमाने के लिए धर्मराज बाप का वर्तमानकालीन पार्ट साबित हो जाता है; क्योंकि ब्रह्मा द्वारा यज्ञ स्थापना का कार्य तो उनकी 100 वर्ष आयु पूरी होने से समाप्त हुआ। अ.वाणी में बाबा ने घोषणा की थी-"अब सिर्फ़ महाविनाश को सम्पन्न करने की अंतिम आहुति इस यज्ञ की रही हुई है।"

बाबा ने ता.29.11.77 पृ.3 मध्य की मुरली में कहा था- "(42 वीं त्रिमूर्ति) शिवजयंती तो आई कि आई। धामधूम से मनाना होगा। देहली जैसे गाँव (गीतापाठशाला) में ही धामधूम हो सकती है।" (भक्तिमार्ग वाले जड़ चित्रों की धूमधाम करेंगे और विशेष प्रिय ज्ञानी तू आत्मा बच्चे शिव के चैतन्य चित्रों का प्रदर्शन करेंगे) ● "मेला एक ही लगता है (कलह-कलेश काटने वाले बेहद) कलकत्ते (cal + cutta कल+कट्टा) में.......वह (सागर) जड़ है। दिल्ली में (चैतन्य ज्ञान सागर बाप) जावेंगे तो वहाँ भी सागर और ब्रह्मपुत्रा का (मिलन) मेला (होना) है।" (मु. 25.6.73 पृ.3 अंत) ●"(बाप प्रजापिता की) सम्पूर्णता सम्पन्नता का झण्डा और राज्य का झण्डा दोनों देहली में होना है। तो देहली निवासी फ्लैग सेरीमनी की डेट फिक्स करें- अभी से तीव्र तैयारियाँ करने लग जाना है।.....देहली पर सबको चढ़ाई करनी है। देहली की धरनी (माता) को प्रणाम ज़रूर करना है।.....देहली के तरफ़ सभी की नज़र है। (विश्वपिता बनने वाले) बाप की भी नज़र है।......आख़िरीन में चारों तरफ़ भटकने के बाद बाप के सहारे के आगे सब माथा झुकावेंगे। समझे, अब देहली वालों को क्या करना है?" (अ.वा.26.12.78 पृ.153,155,157) ●"दिल्ली में कमाल कब करेंगे? दिल्ली का आवाज़ ही चारों ओर फैलता है। दिल्ली में नाम बाला होना, (सारे) भारत में नाम बाला होना है। इतनी ज़िम्मेवारी दिल्ली वालों को उठानी है।" (अ.वा. 24.1.70 पृ.189 मध्य) ● अ.वाणी में बापदादा ने कहा था "दिल्ली को सबसे आगे जाना चाहिए। अगर इतने सब (विजयमाला के बीजरूप आदि रतन) विजयी हैं तो

समझो दिल्ली पर विजय हो गई। दिल्ली के ऊपर विजय का नारा गूँजना अर्थात् विश्व के ऊपर नारा गूँजना। दिल्ली राजधानी तैयार तो विश्व तैयार, दिल्ली का परिवर्तन अर्थात् विश्व का परिवर्तन।''

विश्व का परिवर्तन करने वाली इन्हीं विजयमाला की आदि रतन सर्वश्रेष्ठ आत्माओं से ता.5.12.78 पृ.103 अंत, 104 आदि पर अ.बापदादा ने कहा है- ''(इन्डिया गेट की यादगार दिल्ली में स्वर्ग का) गेट खोलने वाले कौन हैं? बाप अकेला कुछ नहीं करेगा। कब कुछ किया है क्या? अभी भी अकेले नहीं हैं। (क्योंकि भुजाओं रूपी शिवशक्तियाँ तो साथ हैं ही)......वायदा क्या किया है? साथ रहेंगे, साथ चलेंगे, साथ खावेंगे-पियेंगे- यह वायदा है ना! अभी वायदा बदल गया है क्या? अभी भी वही वायदा है, (देह रूपी मिट्टी के सिवाय कुछ भी) बदला नहीं है। चले गये- ऐसा नहीं है।......साकार में तो फिर भी कई प्रकार के (यज्ञ की पालना आदि अलौकिक परिवार के) बंधन थे। अभी तो निर्बंधन हैं; (क्योंकि अ.वाणी 13.6.73 पृ.96 की 18वीं पंक्ति के अनुसार ''लौकिक या अलौकिक परिवार दोनों के बंधनों से स्वतंत्र बनना है'' अत:) अभी तो और ही तीव्र गति है- बाप को बुलाया और हाज़िरा हुजूर।.....अभी साथ रहेंगे, साथ चलेंगे। सिर्फ़ आज क्यों? सदा (जन्म-जन्मांतर) ही साथ चलेंगे।'' इसलिए अ.वा.ता.7.12.78 पृ.111 के आदि में बापदादा ने कहा है-''यह जन्म-2 का साथ है। भविष्य में भी (ब्रह्मा+बड़ी माँ और प्रजापिता) बाप का तो साथ रहेगा न। **शिव बाप साक्षी हो जायेंगे और ब्रह्मा+बाप (अर्थात् रामकृष्ण की आत्माएँ) साथी हो जायेंगे।''**

## (2) दिल्ली की शक्ति सेना द्वारा बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहराना शुरू-

ता.23.8.77 पृ.3 के मध्य की मुरली में शिवबाबा ने कहा था-'देहली से आवाज़ निकलना चाहिए। वहाँ झट नाम होगा। (दिल्ली में नाम बाला होने के बीज तो सन् 76 में बाप की प्रत्यक्षता वर्ष में ही पड़ चुके थे) परंतु अजुन देरी दिखाई पड़ती है। अबलाओं-गणिकाओं को बाप कितना ऊँच आकर उठाते हैं। तुम ऐसे-2 का उद्धार जब करेंगे तब नाम बाला होगा।'' ● ''दिल्ली वालों का उसमें भी विशेष शक्ति सेना का विशेष गुण कौन-सा है? यज्ञ की स्थापना के कार्य में दिल्ली की शक्ति सेना का सुदामा मिसल जो चावल चपटी काम में आई है, वह बहुत महत्व के समय काम में आई है।.......दिल्ली की निमित्त सेवा अन्य सेवा स्थानों (अर्थात् सेवाकेंद्रों को स्वाधीन करने) के निमित्त एग्ज़ाम्पुल बने। जैसे आदि में विशेषता दिखाई वैसे अभी भी दिखाओ।.......सबकी नज़र दिल्ली पर है।'' (अ.वा. 26.5.77 पृ.3 अंत) ● ''बाप-दादा का माताओं से आदि से विशेष स्नेह है। यज्ञ की स्थापना में भी विशेष किसका पार्ट रहा? निमित्त कौन बने? और अंत में भी (बाप की) प्रत्यक्षता और विजय (जय सियराम) का नारा लगाने में निमित्त कौन बनेंगे? माताएँ।'' (अ.वा.

23.1.76 पृ.17 आदि) ●"जैसे आदि स्थापना में ब्रह्मा रूप में सदैव (रचना रूपी बच्चा) श्रीकृष्ण दिखाई देता था ऐसे (ही अब अंत समय राजधानी की स्थापना में) शक्तियों द्वारा सर्वशक्तिवान (राजधानी का रचयिता और कृष्ण का बाप प्रजापिता) दिखाई दे। ऐसा अनुभव हो रहा है ना?" अ.वा.28.10.75 पृ.246 में कहा है- (अ.वा. 7.12.78 पृ.111 मध्य)"शक्ति सेना को बापदादा विशेष चढ़ती कला का सहयोग देते हैं; क्योंकि शक्तियों को, माताओं को सबने नीचे गिराया। अब बाप आ करके ऊँचा चढ़ाते हैं। अपने से भी आगे शक्तियों को रखते हैं।"

## (3) अब फिर से डायरैक्ट बाप द्वारा घर बैठे प्रैक्टिकली सर्व सम्बंधों की भासना का आरम्भ-

(i) **डायरैक्ट बाप मिला-** अ.वा.23.1.76 पृ.22 के आदि में कहा गया है "जब डायरैक्ट (बाप का) साथ निभाने का वायदा है तो वायदे का फ़ायदा उठाओ। इस समय दो बाप (शिव और प्रजापिता) के साथ (अव्यक्त में नहीं) व्यक्तिगत अनुभव हो सकता है, फिर सारे कल्प में नहीं होगा।" इसी तरह ता.12.1.79 की अ.वा. पृ.207 के लास्ट में बेहद का नाटक करने वाले कर्नाटक जोन वालों से अ.बापदादा ने कहा है-"आप श्रेष्ठ आत्माएँ ज्ञान सागर बाप द्वारा डायरैक्ट सर्व प्राप्ति करने वाली हो और जो भी आत्माएँ हैं वह (सतयुग में नं.वार ल.ना. बनने वाली) श्रेष्ठ आत्माओं के द्वारा कुछ न कुछ प्राप्ति करती हैं; लेकिन आप डायरैक्ट बाप द्वारा सर्व प्राप्ति करने वाले हो।" दिल्ली में स्थापन होने वाले गार्डन ऑफ अल्लाह के फूलों की डायरैक्ट बाप द्वारा परवरिश का ज़िक्र करते हुये अ.वाणी 1.2.79 पृ.261 के मध्य में कहा है-"हम किस बागवान के बगीचे के फूल हैं। डायरैक्ट बाप फूलों को अपने स्नेह का पानी दे रहे हैं, तो कितने लकी हो गये!"

(ii) **घर बैठे भगवान मिला-** घर बैठे ही जिन आदि रत्नों ने ज्ञान सागर बाप से ज्ञान रतनों का थाल ले लिया- ऐसे बेहद के ऑस्ट्रेलिया (आस्=बैठना + ट्रे=थाल) वालों से अव्यक्त बापदादा ने ता.6.1.79 पृ.193 के अंत में कहा है- "चारों ओर से एक आवाज़ निकले कि हमारा बाप गुप्त वेष में आ गया है, (चला गया नहीं)। जैसे बाप ने आप (बीजरूप आदि रतन पाँच पांडवों) बच्चों को गुप्त से प्रत्यक्ष किया वैसे आप सबको फिर बाप को प्रत्यक्ष करना है। सब शक्तियाँ मिलकर अंगुली देंगी तो सहज ही हो जायेगा"।

● "कितनी बड़ी लॉटरी मिलती है.....घर बैठे इतनी श्रेष्ठ प्राप्ति है, घर बैठे भगवान मिल गया ना! तो अपने भाग्य की सदा महिमा करते रहो,.....संगमयुग पर विशेष प्राप्ति बाप से मिलन मनाने की है।" (अ.वा.3.2.79 पृ.269 मध्य) ● "कोटों में कोई, कोई में कोई यह हम (बीजरूप) आत्माओं का गायन है; क्योंकि साधारण रूप में आये हुये बाप को और बाप के कर्तव्य को जानना यह कोटों में कोई का पार्ट है।

जान लिया, मान लिया और पा लिया। जब विश्व (500 करोड़) का मालिक अपना हो गया (शिवबाप विश्व का मालिक नहीं बनता) तो विश्व अपनी हो गई ना। जैसे (मनुष्य सृष्टि का) बीज (प्रजापिता) अपने हाथ में है तो वृक्ष तो है ही ना। जिसको ढूँढ़ते थे उसको पा लिया। घर बैठे भगवान मिल गया तो कितनी खुशी होनी चाहिए?.....बाप ने स्वयं आकर अपना बनाया।.....जो स्वप्न में भी नहीं था वह प्राप्ति हो गई, बाप मिला सब कुछ मिला।" (अ.वा.13.1.78 पृ.27,28)

**(iii) प्रैक्टिकल सर्व सम्बंधों की भासना का समय चल रहा है-** ता.23.1.79 पृ.236 के अंत और 237 के आदि की अ.वा. में कहा है-"सर्व सम्बंध निभाने वाले परम+आत्मा को अपना बना लिया, जब चाहो, जैसा सम्बंध चाहो वैसा ही सम्बंध का रस एक द्वारा सदा निभा सकते हो और सम्बंध भी ऐसे जो देने वाले होंगे, लेने वाले नहीं। कभी धोखा भी नहीं देने वाले, सदा प्रीति की रीति निभाने वाले- ऐसे (प्रैक्टिकली) अमर सम्बंध अनुभव करते हो ना!" (कि बाप, टीचर, सद्गुरू, सखा, साजन, सजनी का रट्टा लगाना ही सीखा है?) ● "भक्तिमार्ग में यही पुकार देते हैं कि- थोड़े समय के साथ का अनुभव करा दो, झलक दिखा दो; लेकिन अब क्या हुआ? सर्व सम्बंध में साथी हो गये। झलक वा दर्शन अल्पकाल के लिए होता है; लेकिन सम्बंध सदाकाल का होता है। तो अब बाप के समीप सम्बंध में आ गये कि अभी तक भी जिज्ञासु हो? जिज्ञासा तब तक होती जब तक प्राप्ति नहीं। अब जिज्ञासु नहीं अधिकारी हो। हर सेकिंड का साथ है। हर सेकिंड में सम्बंध के कारण समीप हैं।" ( अ.वा. 7.12.78 पृ. 412 अंत) ●"जितना यहाँ समीपता द्वारा सदा साथ हैं उतना ही मूलवतन में भी ऐसी आत्माएँ साथ-2 हैं और स्वर्ग में भी हर दिनचर्या में सम्बंध का साथ है। जैसे यहाँ तुम्हीं से बोलूँ, तुम्हीं से खेलूँ, तुम्हीं से साथ निभाऊँगा, वैसे भविष्य में भी (होगा).....जो यहाँ बाप के गुण और संस्कार के समीप, सर्व सम्बंधों से बाप का साथ अनुभव करते हैं वही वहाँ रॉयल कुल के समीप सम्बंध में आवेंगे।" (अ.वा.8.1.79 पृ.188,189) ● "युगल स्मृति से पुराना सौदा कैन्सिल कर सिंगल बनो।.....माया के सम्बंध को डायवोर्स दे दिया, बाप के सम्बंध से सौदा कर दिया, इसी से मायाजीत, मोहजीत, विजयी रहेंगे।.....मोस्ट लकी हो। घर बैठे भगवान मिल जाये तो इससे बड़ा लक और क्या चाहिए। बाप आपके पास पहले आया, पीछे आप आये हो। इसी अपने भाग्य का वर्णन करते सदा खुश रहो- भगवान को मैंने अपना बना लिया।" (अ.वा.1.12.78 पृ.2 अंत) ● "बापदादा के (दिल्ली रूपी) दिलतख्तनशीन हो।......सर्व आत्माएँ तड़प रही हैं, बेसहारे हैं और आप थोड़ी सी आत्माएँ (साकार) सहारे के अंदर सहारे का अनुभव कर रही हो- तो विशेष आत्मा हुई ना!" (अ.वा.1.12.78 पृ.2 अंत)

ता.29.3.74 पृ.1 के मध्य की मुरली में बाबा ने कहा है-"अब जो कुछ प्रैक्टिकल हो रहा है फिर उनका भक्तिमार्ग में गायन होगा।" ●"महिमा भी वह होनी चाहिए जो आपके सम्पूर्ण स्वरूप की है।" (अ.वा.20.1.74 पृ.2 आदि) डायरैक्ट

परम+आत्मा से वर्तमानकालीन सर्व सम्बंधों की प्रैक्टिकल भासना के आधार पर भक्तिमार्ग में चलने वाली कथा-कहानियों आदि का इशारा देते हुये अ.बापदादा ने ता.23.1.79 की अ.वा. पृ.238 के मध्य में कहा है-"सदा सुहागिन का गायन पटरानियों के रूप में है। फिर पटरानियों में भी नम्बर हैं- कोई सदा साथ रहती हैं और कोई कभी-कभी। उन्होंने देहधारी (देहभान में रहने वालों) की कहानी बना दी है; लेकिन है आत्माओं और परमात्मा (के प्रैक्टिकल पार्ट) की कहानी।......कोई विशेषता राधे के पार्ट में है और कोई विशेषता पटरानियों वा गोपियों के पार्ट में है। इसका भी गुह्य रहस्य है। मिलन मेला मनाने वाले कौन? सर्व सुखों का अनुभव परमात्म पार्ट से है- यह भी सबसे विशेष भाग्य है। इसका भी आत्माओं के विशेष (रुद्र और विजयमाला के) पार्ट से सम्बंध है।"

ता.3.2.79 पृ.267 के मध्य में अ.बापदादा ने संदेश दिया है-"यह शिवरात्रि प्रत्यक्षता की शिवरात्रि करके मनाओ। सब (ब्राह्मणों) का अटेंशन जाय- यह कौन हैं और किसके प्रति सम्बंध जोड़ने वाले हैं। सब अनुभव करें कि जो आवश्यकता है वह यहाँ से ही मिल सकती है, सब सुखों के खान की चाबी यहाँ (स्वर्ग की राजधानी दिल्ली में) ही मिलेगी।" ●"आदि सो अंत के नियम प्रमाण इसकी रिजल्ट क्या निकलेगी? जैसे उन (हद के) राजाओं को रानियों की परवाह नहीं रही, छोड़ दिया, वैसे ही अब (बेहद की) रानियाँ निकलेंगी जो (बेहद के) राजाओं की परवाह नहीं करेंगी।" (मु. 14.4.73 पृ.2 आदि)

**ओमशांति। ओमक्रांति।**

**।।ॐ शान्ति।।** **।। परम+आत्मा प्रत्यक्षता बॉम्ब।।** **शिवबाबा याद है।**

# नगाड़ा नं.4 और 5 (रामनवमी बनाम महावीर जयंती)

# त्रिमूर्ति शिव परमात्मा के

# शरीर-रूपी रथ - (प्रजापिता) की पहचान

# विश्वनाथ शंकर की विस्तृत पहचान

## (1) नाम-

(i) **लौकिक नाम-** जैसे 'ब्रह्मा बाबा' का लौकिक नाम उनके अलौकिक कर्तव्य के अनुरूप 'लेखराज' अर्थात् भाग्य का लेखा लिखने वालों का राजा पहले से ही निश्चित था। ठीक वैसे ही राम की आत्मा 'शंकर' का लौकिक नाम मायावी रावण और उसके सम्प्रदाय से युद्ध करने में महान वीरता के अलौकिक कर्तव्य के अनुरूप

पहले से ही निश्चित होना चाहिए। महावीर को ही महान् वीर अर्थात् 'वीरों का राजा इन्द्रदेव' कहा जाता है। जिसके नाम पर बसाई गई 'इन्द्रप्रस्थ नगरी' और 'इन्द्र सभा' आज भी मशहूर है। वह पांडवों की विख्यात राजधानी इन्द्रप्रस्थ माउण्ट आबू में नहीं, दिल्ली क्षेत्र में बसाई गई थी। जैसे ब्रह्मा बाबा लौकिक में 'बडग' जाति के ब्राह्मण थे वैसे ही प्रजापिता की आत्मा अर्थात् शंकर भी लौकिक में कुलीन ब्राह्मण वर्ग की होनी चाहिए। अत: सच्चे ब्राह्मणों की रक्षा के लिए ज्ञान-यज्ञ रचने में दक्ष अर्थात् दीक्षित व्यक्ति को शास्त्र में 'दक्ष+प्रजा+पति' कह दिया है (पति का अर्थ ही है रक्षा करने वाला)। शंकर की सोल अपने पूर्वजन्म में ब्रह्मा का रचयिता प्रजापिता कही गई है; क्योंकि ता.6.5.73 की मुरली के पृ.3 के मध्यादि में बाबा ने कहा है-"बाबा को तो विनाश का साक्षात्कार और स्थापना का साक्षात्कार हुआ है;...... परंतु पहले यह समझ में नहीं आया कि हम यह विष्णु बनेंगे।" स्पष्ट है कि ब्रह्मा में सत्य ज्ञान का बीज डालने और निश्चय का फाउंडेशन जमाने के लिए अर्थात् उसका पार्ट खोलने के लिए शिवबाबा ने ब्रह्मा से पहले किन्हीं दूसरे में प्रवेश किया था। मु. 23.7.69 पृ.2 के अंत में साफ़ कहा गया है-"10 वर्ष से रहने वाला, ध्यान में जा(ती) थी। मम्मा-बाबा को भी ड्रिल कराती थी। <u>उनमें</u> बाबा प्रवेश कर डायरैक्शन देते थे। कितना मर्तबा था! आज वह भी हैं नहीं। (क्योंकि) उस समय यह इतना (ड्रामा का) ज्ञान नहीं था।"

**(ii) अलौकिक नाम-** जिस बच्चे के शरीर रूपी रथ के द्वारा शिवबाबा परम+पिता (Supreme father) के रूप में सारे विश्व में विख्यात होते हैं उसके प्रमुख अलौकिक नाम- शंकर, महावीर, सोमनाथ, सनतकुमार आदि हैं।

**a) विश्वनाथ शंकर-** ता.24.1.75 पृ.2 आदि की मुरली में बाबा ने कहा है-"उन (शिव) की आत्मा का ही नाम 'शिव' है। वह कब बदलता नहीं। शरीर बदलते हैं तो नाम भी बदल जाते।" (जैसे ब्रह्मा से शंकर, फिर विष्णु) (मु. 22.2.75 पृ.1 के शुरू में) ●"बाप जब आते हैं तो ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी ज़रूर चाहिए। कहते ही हैं त्रिमूर्ति शिव भगवान+उवाच। अब तीनों द्वारा (एक साथ) तो नहीं बोलेंगे ना। यह बातें अच्छी रीति बुद्धि में धारण करनी हैं।" ता.10.2.72 पृ.4 मध्य की मुरली में ब्र.वि.शं. की त्रिमूर्ति में शंकर को एकमात्र बड़ा बच्चा बताया है-"गॉड इज़ वन, उनका बच्चा भी वन। कहा जाता है 'त्रिमूर्ति ब्रह्मा'। देवी-देवताओं में बड़ा कौन? महादेव शंकर को कहते हैं।" भारतीय सभ्यता में बड़ा बच्चा ही पहले-पहले राज्य का अधिकारी होता है। इसलिए बाबा ने भी रात्रि ता.3.5.73 मध्य की मुरली में कहा है-"बड़े भाई को हमेशा बाप समान समझते हैं। .......यह सारा ज्ञान के ऊपर है। जिसमें अधिक ज्ञान है वह बड़ा ठहरा। भल शरीर में छोटा हो, परन्तु ज्ञान में तीखा है तो हम समझते हैं यह भविष्य पद में बड़ा (विश्वनाथ) बनने वाला है।"

विश्व में बड़ा अर्थात् महान् बनने वाला यह महा+देव शंकर ही वास्तव में ब्रह्मा का सबसे बड़ा पुत्र 'योगीश्वर सनतकुमार' कहा गया है; क्योंकि योगियों का

ईश्वर तो एक ही होगा। एक के ही दो नाम दे दिये हैं। योगबल के आधार पर आदिदेव बनने वाले इसी सनत+कुमार के आधार पर ही आदि+सनातन+देवी+देवता धर्म का नाम सार्थक होता है; क्योंकि धर्मपिता के नाम पर ही धर्म का नाम विख्यात होता है। जैसे क्राइस्ट से क्रिश्चियन, बुद्ध से बौद्ध धर्म आदि-2। ता.11.3.71 की अ.वाणी में- ब्रह्मा के ज्येष्ठ पुत्र सनतकुमार का जिक्र आया है। वास्तव में ब्रह्मा-सरस्वती को आदिदेव और आदिदेवी नहीं कह सकते; क्योंकि सरस्वती ब्रह्मा की बेटी थी; परंतु वही ब्रह्मा-सरस्वती अपना पतित शरीर त्याग कर जब "विशेष प्रिय ज्ञानी और योगी तू आत्मा"- शंकर-पार्वती में प्रवेश करते हैं तो आदि देव और आदि देवी के नाम से संसार में प्रत्यक्ष होते हैं।

b) **महावीर-** वास्तविकता तो यह है कि जैन तीर्थंकर 'महावीर' और हिंदुओं के नग्नवेषधारी 'शंकर' भी एक ही व्यक्तित्व के दो अलग-2 नाम हैं जिसकी साकारी सम्पूर्ण अवस्था की यादगार तपस्वी मूर्ति दिलवाड़ा मंदिर में स्थापित है। महान वीरता के कर्तव्य के आधार पर शिवबाबा ने भी मु.8.1.74 पृ.1 के मध्यादि में उनका अलौकिक नाम 'महावीर' ही रखा है- "हनुमान का भी दृष्टांत है न। इसलिए तुम्हारा महावीर नाम (तीर्थंकर) रखा है। अभी तो एक भी महावीर नहीं।......अभी वीर हैं। पूरा महावीर पिछाड़ी में होंगे।"

c) **सोमनाथ-** (सोम) चंद्रमा को कहते हैं। ज्ञान चंद्रमा ब्रह्मा बाबा है। "चंद्रमा अर्थात् बड़ी माँ, ब्रह्मा को कहा जाता है। (अ.वा.22.6.77 पृ.271 अंत) ●"ज्ञान सूर्य तो है बाप। फिर माता चाहिए ज्ञान चंद्रमा।" (मु 31.1.73 पृ.2 आदि) उस ब्रह्मा को भी पूर्वजन्म में डायरैक्शन देकर ज्ञानयज्ञ में नथने वाली प्रजापिता और जगदम्बा की सशक्त आत्माएँ ही अपने वर्तमान जन्म में सोमनाथ-सोमनाथिनी बनती हैं। योगबल से बनने वाली इनकी निरोगी कंचन काया की यादगार में आज भी मंदिरों में मूर्तियों को सजाने का उल्लेख करते हुये बाबा ने ता.5.7.75 पृ.1 के मध्य की मु. में कहा है-"सोमनाथ का मंदिर कितना बड़ा है! कितना सजाते हैं!.....आत्मा की सजावट नहीं है वैसे परमआत्मा (परमात्मा) की भी सजावट नहीं है। वह भी बिंदी है। बाकी जो भी सजावट है वह शरीरों की है।.....अभी तुम (बच्चे) अंदर में जानते हो- हम सोमनाथ बन रहे हैं।"

(यहाँ ब्रह्मा बाबा के पतित और रोगी शरीर-रूपी रथ की सजावट की बात ही नहीं है; क्योंकि वे शरीर रहते सम्पूर्ण निरोगी कंचन काया नहीं बना सके।)

## (2) रूप-

(i) **फ़रिश्ताई निराकारी स्टेज-** शंकर का साकारी शरीर होते हुये भी बुद्धियोग से अव्यक्त आकारी फ़रिश्ता स्वरूप या निराकारी बिंदुरूप स्टेज प्रत्यक्ष रूप में अनायास ही देखने में आवेगी। इसलिए शंकर को तीन लोक वाले चित्र में निराकारी वतन के अति

समीप सबसे ऊँचे तबक्के में सूक्ष्मवतनवासी दिखाया जाता है। बाबा ने कहा भी है कि "बाप निराकारी और माँ साकार होती है।" जैसे कि ब्रह्मा के किसी भी चित्र में बुद्ध, क्राइस्ट, नानक आदि धर्मपिताओं की तरह चढ़ी हुई पुतलियों वाली आँखें (निराकारी स्टेज) देखने में नहीं आती। जबकि बापों के बाप शिव (शंकर) को चित्रों में ज़बरदस्त निराकारी स्टेज वाले नारायणी नशे में दिखाया जाता है।

**(ii) अति साधारण वेशभूषा-** बाबा ने ता. 5.2.74 पृ.2 आदि की मुरली में कहा है "इनका तो वही साधारण रूप जो है वही ड्रेस आदि है। फ़र्क नहीं। इसलिए कोई समझ नहीं सकते।"

● "वह है निराकारी, निरअहंकारी। कोई अहंकार नहीं। कपड़े आदि सब वही हैं, (शरीर रूपी मिट्टी के सिवाय) कुछ भी बदला नहीं है।......इनका तो वही साधारण तन, साधारण पहरवाइस है। कोई फ़र्क नहीं।" (मु. 8.4.74 पृ.1 अंत)

●"बाप कहते हैं मैं बहुत साधारण तन में आता हूँ (ब्रह्मा अर्थात् बड़ी माँ का तन तो असाधारण था)। इसलिए कोई विरला पहचानते हैं। मैं जो हूँ, जैसा हूँ, साथ (में) रहने वाले भी समझ नहीं सकते हैं।"(मु.4.2.74 पृ.3 अंत)

●"वही महाभारत लड़ाई है। तो ज़रूर भगवान भी होगा। किस रूप में, किस तन में है, वह सिवाय तुम बच्चों के (और) किसको पता नहीं है। कहते भी हैं, मैं बिल्कुल साधारण तन में आता हूँ। मैं कृष्ण के (अर्थात् ब्रह्मा के शोभायमान) तन में नहीं आता हूँ।" (मु.13.8.76 पृ.3 अंत)

**(iii) कमज़ोर साधारण शरीर** - ता.20.7.73 पृ.1 अंत की मुरली में कहा है- (शंकर के मस्तक में ज्ञान चंद्रमा की प्रवेशता के कारण) "श्रीनाथ-जगन्नाथ है एक ही चीज़; परंतु जैसा देश वैसा ठाकुर बनाकर उनको भोग लगाते हैं। अगर पकवान आदि खिलावें तो पेट में दर्द पड़ जाये।" यही कारण है कि आज भी 500 करोड़ के स्वामी जगन्नाथ मंदिर में सूखी रोटी-दाल-चावल का सादा भोग ही लगाया जाता है। बाबा ने मुरली में कहा है-"शरीर कमज़ोर हो तो कोई हर्जा नहीं, आत्मा पावरफुल होनी चाहिए।"

## (3) देश (धाम)-

**(i) लौकिक घर फर्रुखाबाद तरफ़-** कई मुरलियों में बाबा ने बेहद के घर-परिवार (वसुधैव कुटुम्बकम्) का मालिक बनने वाले इस विश्वपिता की याद और मान्यता का सम्बंध (जिला) **फर्रुखाबाद** से जोड़ा है। "जहाँ जीत वहाँ जन्म" के नियम प्रमाण जैसे मथुरा, वृन्दावन में कृष्ण और अयोध्या में राम की याद और मान्यता अधिक है ठीक वैसे ही विश्वपिता या विश्वनाथ शंकर की जन्म स्थली प्रसिद्ध तीर्थों के प्रदेश उत्तर प्रदेश में फर्रुखाबाद तरफ़ उसकी 'याद और मान्यता' अधिक होनी ही चाहिए; क्योंकि घर-परिवार या देश वालों को महानता का गौरव अधिक रहता

है। ता.2.5.69 पृ.3 के अंत की मुरली में कहा है- "बाप को मालिक कहा जाता है। फर्रुखाबाद तरफ़ मालिक को मानते हैं। घर का मालिक तो बाप ही होता है। बच्चों को बच्चे ही कहेंगे। जब वह भी बड़े होते हैं, (अलौकिक) बच्चे पैदा करते हैं तब फिर मालिक बनते हैं। यह भी राज़ समझने की है।" ● **"जैसे फर्रुखाबाद में कहते हैं हम उस मालिक को याद करते हैं; परंतु वास्तव में विश्व का वा सृष्टि का मालिक तो ल.ना. बनते हैं। निराकार शिवबाबा तो विश्व का मालिक बनते नहीं।** (तो किसे याद करते हैं?) तो उनसे पूछना पड़े कि वह मालिक निराकार है वा साकार है? निराकार तो साकार सृष्टि का मालिक हो न सके।.....खुद पावन दुनिया का मालिक नहीं बनते। उसका मालिक तो ल.ना. बनते हैं और बनाते हैं बाप। यह बड़ी गुह्य बातें समझने की हैं।"

( मु.14.1.73 पृ. 2 अंत )

जैसे शिव के रथी ब्रह्मा का लौकिक जन्म 'गाँवड़े' में हुआ था, ठीक वैसे ही शिव और ब्रह्मा रूपी डबल इंजन (बापदादा) के रथी शंकर की जन्म स्थली (फर्रुखाबाद के) किसी गाँव में ही होनी चाहिए। अत: बाबा ने 8.2.75 पृ.2 के मध्य की मुरली में कहा- "जब गोरा (निर्विकारी) है तो (स्वर्ग की जिम्मेवारी का) ताज होना चाहिए और सांवरा (अर्थात् विकारी) है तो ताज कहाँ से आवेगा? उनको कहा जाता है गाँवरे का छोरा। तो ताज कहाँ से हो सकता? गाँव का छोरा तो गरीब होगा ना।" वैसे शास्त्रीय मान्यतानुसार 'सम्बल' (अर्थात् आधार या नींव) ग्राम में भगवान का जन्म बताया है जिससे सिद्ध होता है कि वह गांव अति प्राचीन भी होना चाहिए।

**(ii) अलौकिक जन्म स्थान अहमदाबाद-** सारी मनुष्य सृष्टि के बीजरूप रचयिता बाप अर्थात् "प्रजापिता की सोल" शंकर का अलौकिक ब्राह्मण जन्म अहमदाबाद में स्थित किसी बेहद ब्राह्मण परिवार अर्थात् सेवाकेंद्र में होना चाहिए; क्योंकि ता. 24.1.70 पृ.190 मध्य पर अ.बापदादा ने **अहमदाबाद को सर्व सेंटर्स का बीजरूप कहा है-** "अहमदाबाद को सभी से ज़्यादा सर्विस करनी है; क्योंकि अहमदाबाद सभी सेंटर्स का बीजरूप है। बीज में ज़्यादा शक्ति होती है। खूब ललकार करो, जो गहरी नींद में सोये हुये भी जाग उठें। (सोमनाथिनी जैसी) कुमारियाँ तो बहुत कमाल कर सकती हैं।" जैसे भक्तिमार्ग में गुजरात का सोमनाथ मंदिर सब मंदिरों का बीजरूप है, ठीक वैसे ही ज्ञानमार्ग में सोमनाथ-सोमनाथिनी जैसी मनुष्यसृष्टि की बीजरूप आत्माओं को जन्म देने के कारण अहमदाबाद का ('हे प्रभु पार करो' की यादगार) **प्रभु+पार्क** सेंटर सिर्फ़ गुजरात का ही नहीं, बल्कि सारे विश्व के सेवा केंद्रों का बीजरूप है; क्योंकि राजा विक्रमादित्य की आत्मा ब्रह्मा ने स्वयं ही **'मधुबन'** की धन राशि लगाकर एकमात्र इसी सेंटर की स्थापना की थी, जबकि अन्य सेवाकेंद्र दूसरे लोगों के निमंत्रण पर खोले गये हैं। चूँकि इसी सेवाकेंद्र से सोमनाथ-सोमनाथिनी का अलौकिक जन्म होता है अत: बाबा ने ता.4.3.75 पृ.2 के आदि की मुरली में कहा है-**"सोमनाथ नाम रखा है**; क्योंकि सोमरस पिलाते हैं, ज्ञान धन देते हैं। फिर जब पुजारी बनते हैं तो

कितना खर्चा करते हैं उनका मंदिर बनाने पर; क्योंकि सोमरस दिया है ना। **सोमनाथ के साथ सोमनाथिनी भी होगी।"** ● "गुजरात को सैम्पुल तैयार करने चाहिए।...... गुजरात को लाइट हाउस बनाओ (जो) न सिर्फ़ गुजरात (का) लाइट हाउस हो, बल्कि विश्व (का) लाइट हाउस (हो)।......**ऐसा बॉम्ब फेंको** जो एक ठका (से) आत्माएँ दौड़ती हुई अपने एक एसलम में पहुँच जायें। पहले गुजरात आबू में क्यू शुरू करे। **जो ओटे सो अर्जुन हो जावेगा। 'अर्जुन' अर्थात् पहला नम्बर ।"** (अ.वा. 4.1.79 पृ.178 आदि ) प्लस में आने वाले पहले नं. **संगमयुगी नारायण की यादगार**-अहमदाबाद के स्वामी नारायण मंदिर का ज़िक्र ता.5.3.75 पृ.3 आदि की मुरली में इस प्रकार किया है-"अहमदाबाद में स्वामी नारायण के 108 मंदिर हैं। करोड़ों पैसे आते होंगे। मिलते तो स्वामी नारायण को होंगे ना। तो (अंत में अहमदाबादी पाण्डव भवन तैयार होने पर विश्व विजेता 108 मणकों से कनेक्शन जोड़ने के लिए) सभी सेंटर्स से भी यहाँ ही आवेंगे ना।".....क्योंकि गुजरात की राजधानी अहमदाबाद को ही सारे विश्व का लाइट हाउस बनना है। अत: भक्तिमार्ग के जयगुरुदेव की यह भविष्यवाणी सत्य ही है कि 'मध्यभारत के किसी शहर से सारे विश्व का शासन सम्भाला जायेगा।'

## (4) कार्य-काल

100 वर्षीय पुरुषोत्तम संगमयुग में ज्ञान का बीज बोने और विश्व की बादशाही का वरसा देने के लिए क्रमश: आदि और अंत का कार्य-काल प्रजापिता की सोल द्वारा चलता है। जबकि मध्य में बड़ी माँ (ब्रह्मा) का पार्ट चलता है।

## (5) आयु-

**लौकिक शरीर की आयु-** बाबा ने कहा है कि "बाप तो अनन्य (अन्+अन्य अर्थात् उन जैसा अन्य कोई सैम्पुल न हो ऐसे) बच्चों को ही याद करते हैं।" प्रजापिता के रूप में यज्ञ के आरम्भ में 2/3 नं. में आने वाले जिन बच्चों द्वारा शिवबाबा ने ब्रह्मा-सरस्वती के भी पार्ट खोले थे, उन्हीं अनन्य बच्चों के वर्तमान जन्म के लौकिक शरीर की आयु का उल्लेख करते हुये बाबा ने मु.16.2.67पृ.1 अंत में कहा है- "बाप आत्माओं को बुलाते हैं यह समझाने लिए कि तुम ज्ञान में आते थे ना। तुमको कितना समझाया था कि बाप को याद करो, पवित्र बनो। फिर भी न माना। अब तुम्हारा पद भ्रष्ट हो गया। आगे जो मरे थे फिर भी बड़े हो कोई 20/25 के ही हुए होंगे। ज्ञान भी ले सकते हैं।" सन् 1967 में ब्रह्मा तन द्वारा चलाई गई इस वाणी के अनुसार उस समय की 20 और 25 वर्ष वाली एडवांस पार्टी की आत्माएँ (पार्वती-शंकर) सन् 2014 में 67 और 72 वर्ष आयु वाली होनी चाहिए।

**(6) गुण, शक्ति और स्वभाव-** ऐसे तो परमात्मा गुणों का सागर कहा जाता है; परंतु वर्तमानकालीन ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में देश-काल-परिस्थितियों

के अनुरूप जिन प्रमुख गुणों, शक्तियों और स्वभाव को प्रत्यक्ष करते हुये शिवबाबा धर्मराज-शंकर द्वारा पार्ट बजाते हैं उनका यहाँ संक्षेप में उल्लेख किया गया है-

(i) **स्वाधीनता** - विश्वपिता बनने वाले उस बाप समान व्यक्तित्व में किसी व्यक्ति या वैभव के प्रति सरेण्डर होने अर्थात् शरण में जाने या अधीन होने के स्वभाव-संस्कार नहीं हो सकते। बाबा ने 27.2.75 पृ.1 आदि की मुरली में साफ़ कहा है-"तुम कोई शरणागति नहीं लेती हो। यह अक्षर भक्तिमार्ग के हैं 'शरण पड़ी मैं तेरे'। बच्चा कब बाप की शरण पड़ता है क्या? बच्चे तो मालिक होते हैं। तुम बच्चे बाप की शरण नहीं पड़े हो, बाप ने तुमको अपना बनाया है।" स्पष्ट है कि सरेंडर होने वाले बाप के बीजरूप, बाप समान सूर्यवंशी बच्चे नहीं हो सकते; क्योंकि दुश्मनों या विधर्मियों को ही सरेंडर करने या शरण में लेने की भारतीय परम्परा चली आई है। वफ़ादार-फ़रमानबरदार-मातेले बच्चों को अधीन बनाने का सवाल ही नहीं उठता। अ.वा.13.6.73 पृ.96 की 18वीं पंक्ति में तो लौकिक ही नहीं बल्कि अलौकिक ब्राह्मण परिवार के सम्पर्क के बंधनों से भी सम्पूर्ण स्वाधीन रहने का डायरैक्शन दिया गया है। इसलिए बाबा ने अ.वा.26.6.74 पृ.80 के मध्य में कहा है- "प्रकृति के व परिस्थिति के और व्यक्ति के व वैभव के अधीन रहने वाली आत्मा अन्य आत्माओं को भी सर्व अधिकारी नहीं बना सकती"। ●"हरेक को अपनी ज़िम्मेवारी आप उठानी है। अगर यह सोचेंगे कि दीदी, दादी व टीचर (हमारी जिंदगी के) ज़िम्मेवार हैं, तो इससे सिद्ध होता है कि आपको भविष्य में उन्हीं की प्रजा बनना है, राजा नहीं बनना है। यह भी अधीन रहने के संस्कार हुए न? जो अधीन रहने वाला है वह अधिकारी नहीं बन सकता। विश्व का राज्यभाग्य नहीं ले पाता। इसलिए स्वयं के ज़िम्मेवार, फिर सारे विश्व की ज़िम्मेवारी लेने वाले विश्वमहाराजन् बन सकते हैं।" (अ.वा.30.5.73 पृ.81 मध्य) यहाँ स्पष्ट है कि जब तक कोई ब्राह्मण अपनी अब तक की पढ़ाई से धारण किये गये ज्ञान-योग और पवित्रता के निर्विकारी साधनों से स्वयं की रोटी, कपड़ा और मकान की ज़िम्मेवारी लेने योग्य ही नहीं बना, (अर्थात् दादी, दादा आदि किसी व्यक्ति विशेष की कृपा के अधीन है) वह सारे विश्व को पालने वाला राजा+महाराजा अर्थात् विजय+अन्ती माला का मणका कैसे बन सकता है? अर्थात् नहीं बन सकता।

(ii) **स्वाभिमान-** बेहद की खुदी का पार्ट बजाने वाले परम+आत्मा को 'खुदा' भी कहा जाता है। उस खुदा का साकार तन अहमदाबाद में अलौकिक जन्म लेता है। अत: अव्यक्त बापदादा ने अहमदाबाद को 'अल्लाह की नगरी' कहा है। खुदा की इस बेहद खुदी के कारण ही इस नगरी का नाम अहं+दा+बाद अर्थात् जिसने सबको झुकाने के बाद अपना (सात्विक) अहं दिया हो- ऐसा अहमदाबाद नाम पड़ा है।

टैगोर का गीत प्रसिद्ध है- "यदि कोई तेरा साथ न दे तो तू अकेला चलो रे" यह गीत जैसे खुदा को फॉलो करने वाले सभी धर्मपिताओं पर लागू होता है, वैसे खुदा

पर भी लागू होता है। जब सच्चखण्ड की स्थापना करने वाले सच्चे बाप की प्रत्यक्षता में कोई सहयोग नहीं देता तो अपना परिचय या पैगाम देने का काम उन्हें खुद ही बाप के सच्चे और साफ़दिल विजयी वत्सों के घर-2 जाकर करना पड़ता है। अत: बाबा ने ता. 28.12.68 पृ.3 की मुरली में कहा है- "बाप आकर तुमको अपना परिचय देते हैं। तुम आपे ही परिचय नहीं पाते हो।"

●"वह सद्गुरू स्वयं ही आकर अपना परिचय देते हैं।" (मु.8.10.74 पृ.2 मध्य)

●"पैगाम अथवा मैसेज तो शिवबाबा ही देते हैं। खुदा को पैगम्बर कहते हैं न।" (मु.9.3.74 पृ.2 आदि)

गायन भी है-"घर बैठे भगवान मिला।" सब पुरुषार्थियों को थोड़े ही घर बैठे भगवान मिला होगा। गायन ही है कि कोटों में कोई पुरुषार्थ करते हैं और उन पुरुषार्थ करने वालों में से भी कोई विरले ही उस हीरे को प्राप्त करते हैं। प्राप्त करने वाले ज़रूर स्वाधीन और स्वाभिमानी होंगे; क्योंकि मानवीय प्रकृति का नियम है कि 'ज्ञानी से ज्ञानी मिलै, मिलै कीच से कीच।'

ऊँच ते ऊँच स्वाभिमानी का यादगार गुरुशिखर (शिखा अर्थात् ब्राह्मण चोटी) में प्रवेश करके रहने वाले जगद्गुरू शिव की भेंट में (अधरकुमारी, दिलवाड़ा आदि) सब नीचे हैं। ऐसे ऊँचे बाप शिव का सबसे बड़ा स्वाभिमानी बच्चा देव-देव-महादेव शंकर किसी नीचे तबक्के वाले की शरण में क्यों जावेगा? इसलिए ता.29.1.74 पृ.3 आदि की मु. में बाबा ने कहा है-"धनवान बाप (शिव) का बच्चा कब गरीब (ब्रह्मा बाबा, दीदी-दादी-दादा आदि देहधारियों) की एडॉप्शन थोड़े ही कबूल करेगा।" क्योंकि बाबा ने मु.26.2.75 में खास ब्रह्मा-विष्णु को भी 'वर्थ नॉट ए पैनी' बताया है।

शंकर का नाम नहीं लिया; क्योंकि शंकर समान स्वाभिमानी बच्चों की ओर से बाबा ने स्वयं ही ता.13.8.74 पृ.3 की मुरली के मध्यादि में कहा है-"हम नं.वन (संगमयुगी विश्व महाराजन) बनते हैं तो फिर सेकेण्ड-थर्ड (सतयुगी ल.ना.) की पूजा (खुट्टेबरदारी) क्यों करेंगे?"

●"मम्मा-बाबा यह (16 कला सम्पूर्ण ल.ना.) बनते हैं तो हम फिर कम बनेंगे क्या?" (मु.16.3.75 पृ.3 अंत)

● जब एक (शिव) द्वारा सर्व रसनाएँ प्राप्त हो सकती हैं तो अनेक (देहधारी गुरुओं) तरफ़ जाने की आवश्यकता ही क्या? (अ.वा.25.10.69 पृ.131 अं.)

**(iii) निर्भयता-** बाबा ने कहा है कि योगबल वाले निडर होंगे। निडर होने का मतलब यह नहीं कि खूँखार और क्रोधी जानवरों की तरह निर्जन प्रदेश में जानबूझकर निहत्थे और एकाकी होकर घूमते फिरें या कि उन जानवरों से मुठभेड़ करके बाहुबल का प्रदर्शन करते फिरें; क्योंकि बाबा ने मु. में कहा है- "बाहुबल वाले विनाश को

पावेंगे।'' अत: गुप्त ज्ञान के गुह्य राज़ों को डंके की चोट पर निर्भीकतापूर्वक प्रत्यक्ष करना ही अंडरग्राउंड रूहानी मिलेट्री के शूरवीर वॉरियर्स का काम है; क्योंकि हमारा कोई स्थूल हिंसक युद्ध तो है नहीं। यह तो ज्ञान के अस्त्र-शस्त्रों का रूहानी युद्ध है। जिसका सामना करने के लिए विशेष प्रिय ज्ञानी तू आत्मा बच्चे सदा तैयार रहते हैं। इसलिए बाबा ने अ.वा.19.12.78 पृ.139 के शुरू में कहा है-''महावीर तो दुश्मन (अर्थात् विरोधियों) का आह्वान करते हैं (अर्थात् निमंत्रण देते हैं) कि आओ और हम विजयी बनें। महावीर पेपर को देख घबराएँगे नहीं, चैलेंज करेंगे; क्योंकि त्रिकालदर्शी होने के कारण जानते हैं कि हम कल्प-2 के विजयी हैं।''

● ''शूरवीर (आत्माएँ) कब किससे घबराते नहीं; लेकिन शूरवीर के सामने आने वाले घबराते हैं।'' (अ.वा.13.3.71 पृ.47 आदि)

**(iv) सच्चाई और सफाई-** अभी इस वर्ष भी अव्यक्त बापदादा ने हम बच्चों को सत्यता और निर्भीकता की अथॉरिटी से बाप की प्रत्यक्षता करने का डायरैक्शन दिया है; परंतु इस डायरैक्शन को वही बच्चा अमल में ला सकेगा जो स्वयं बाप के सामने सच्चाई और दिल की सफ़ाई का सैम्पुल बनकर दिखायेगा; क्योंकि बाबा ने कहा है- ''सच्चे दिल पर सच्चा साहब राज़ी होगा। झूठे दिल पर सच्चा साहब कब राज़ी नहीं होगा।'' ●''बापदादा सुनाते भी सत्यनारायण की कथा हैं और स्थापना भी सतयुग की करते हैं। तो बाप को, जो सत् बाप, सत् टीचर, सत्+गुरु का प्रैक्टिकल पार्ट बजाते हैं, तो सत् बाप को क्या प्रिय लगता है? सच्चाई। जहाँ सच्चाई है अर्थात् सत्यता है वहाँ स्वच्छता व सफ़ाई अवश्य ही होती है। गायन भी है ''सच्चे दिल पर साहब राज़ी।''

(अ.वा.2.9.75 पृ.88 अंत, 89 आदि)

दिलवाड़ा बाप भी ऐसे सच्चे दिल वाले बच्चे के द्वारा प्रत्यक्ष होते हैं जिसने तन-मन-धन से सम्बंधित एक-2 पाई-पैसे का पोतामेल खुले दिल से, लोकलाज की परवाह न करते हुये बेहिचक दिया हो। इसलिए बाबा ने मु.16.4.70 पृ.1 के मध्य में कहा भी है- रात को सारा दिन का पोतामेल निकालो क्या किया? .....ऐसा सच्च लिखने वाला कोटों में कोऊ ही है। 'साफ़दिल तो मुराद हासिल' करने वाले ऐसे सच्चे पुरुषार्थी बच्चे द्वारा जब सन् 76 के प्रत्यक्षता वर्ष में बाप की प्रत्यक्षता होती है तो झूठे बगुला पुरुषार्थी सामना करने लग जाते हैं। ता.9.5.73 पृ.3 अंत की मु. में बाबा ने कहा भी है- **''सच जब निकलता है तो झूठ सामना करते हैं।.....तुम किसी को सच बताते हो तो जैसे मिर्ची हो लगती है।''**

**(v) सबसे न्यारा-फिर भी बाप का प्यारा-** ऐसी तनातनी की परिस्थितियों में बाबा के कथनानुसार- ''(बुद्धियोग से) हंस-बगुले इकट्ठे रह न सके।'' अत: नं.वार ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया से कमल फूल के समान सदा बुद्धियोग से न्यारे रहने वाले ऐसे साफ़दिल बच्चों को लौकिक ही नहीं, बल्कि अलौकिक परिवार के भी सर्व सम्बंधों

से न्यारे होकर चलना पड़ता है। बाबा ने 11.1.70 की अ.वाणी में कहा भी है- "समीप के सितारा कैसे बनेंगे? साफ़दिल होने से। (लौकिक-अलौकिक) सर्व संबंधी छोड़ने से।" (अ.वा.11.1.70 पृ.1 अंत) ●"सबसे न्यारा और बाप का प्यारा, इसी को ही कमल पुष्प समान कहा जाता है।" (अ.वा.30.6.77 पृ.297 आदि) ●"कमलपुष्प कमाल करने में प्रवीण होता है।"(अ.वा.16.5.73 पृ.68 मध्य) ●"इस मायावी (विषय) वैतरणी नदी में रहते (न कि आश्रम के पवित्र वातावरण में रहकर) कमल फूल समान पवित्र रहना है। कमल फूल बहुत बाल-बच्चों (शतदल यानी 100 पंखड़ी) वाला होता है, फिर भी पानी से ऊपर रहता है। वह गृहस्थी है, (प्रजापिता/शंकर) बहुत चीज़ें (अर्थात् हर धर्म की बीजरूप मनुष्यात्माओं को) पैदा करते हैं। यह दृष्टांत तुम्हारे लिए भी (विश्वपिता शंकर के) है।" (मु.31.1.75 पृ.2 अंत) इसी अवस्था की यादगार चित्रों में आज भी शंकर को प्राय: कमल पुष्प पर बैठा हुआ दिखाते हैं। हमारे त्रिमूर्ति के चित्र में, विष्णु के नीचे वाले (धर्मराज के प्रतीक) लेफ्ट हैंड में भी शंकर की इस न्यारी और प्यारी अवस्था को सूचित करने वाला कमल पुष्प दिखाया गया है; क्योंकि ब्रह्मा (सरस्वती) की सम्पूर्ण आत्माएँ ही शंकर (पार्वती) में प्रवेश करके संगमयुग में ही विष्णु का पार्ट बजाती हैं। अत: बाबा ने ता.22.1.75 पृ.3 अंत की मुरली में कहा है- "पवित्र प्रवृत्ति मार्ग बाप ही बनाते हैं। इसलिए विष्णु को भी 4 भुजा दिखाई हैं। शंकर के साथ पार्वती, ब्रह्मा के साथ सरस्वती दिखाई है। अब (सरस्वती) ब्रह्मा की कोई स्त्री तो नहीं है। (परंतु वह भी पार्वती में प्रवेश करने के बाद वैष्णव देवी कही जाती है।)"

(vi) **गुप्त पुरुषार्थी-** अ.बापदादा ने ता.5.2.79 पृ.273 के मध्य में बाप के इस गुप्त पार्ट की ओर इशारा करते हुये कहा है- "जो बाप बैकबोन है, गुप्त रूप में पार्ट बजा रहे हैं, बाप को प्रत्यक्ष करना है, (बाप से) सुनाने वालों को पहचानते हैं; लेकिन बनाने वाला अभी भी गुप्त है तो अब बनाने वाले को प्रत्यक्ष करना अर्थात् (दिल्ली राजधानी पर) विजय का झण्डा लहराना है"। ● "हम यह सुख-शांति के राज्य स्थापन कर रहे हैं अपने ही तन-मन-धन से गुप्त रीति। बाप भी है गुप्त (उनके) बच्चे भी गुप्त। । नॉलेज भी गुप्त। तुम्हारा पुरुषार्थ भी है गुप्त। (दान-मान-पद-सर्विस आदि सब गुप्त।)" (मु.13.9.70 पृ.2 अंत) ●'पाण्डव थे गुप्त।' (मु.20.5.73 पृ.3 अंत)

●"वह तो अपने टाइम पर, अपनी सर्विस पर खड़े हो जाते हैं। किसी को भी पता नहीं पड़ता है। कल्प (की शूटिंगकाल 40 वर्ष) पहले भी तुम बच्चों को मालूम था नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। कौरवों को पता ही नहीं था। अभी भी ऐसे है।" (मु.4.2.74 पृ.1 मध्यादि)

(vii) **मस्त कलंकीधर फ़क़ीरी स्वभाव-** दुनिया वालों को उलाहना न रह जाये कि परमात्मा लखपति दादा लेखराज के अंदर ही क्यों आया? किसी गरीब या फ़क़ीर के तन का अधार क्यों नहीं लिया? सिर्फ़ कहने मात्र के लिए 'गरीब निवाज़' है क्या? फ़क़ीर भी कोई ऐसा क्यों हो, जो धर्म का ठेकेदार बनकर कोई ख़ास गद्दी या

ठिकाना जमाकर बैठ जाये? इसलिए बाबा ने सुदामा का मिसाल देकर गरीब या फ़क़ीर की सच्ची व्याख्या करते हुए कहा है- "बेगर बनना मासी का घर थोड़े ही है। बेगर के पास तो (धन, पद, मान, मर्तबा) कुछ भी न हो।" (मु.21.1.74 पृ.4 अंत) ● "जब तक फुल बेगर नहीं बने हैं तब तक फुल प्रिंस नहीं बन सकते। ● "तुम सभी सुदामा हो। देते क्या हो? (मुट्ठी चावल) लेते क्या हो? विश्व की बादशाही।" (मु.17.2.69 पृ.3 आदि) ●"बाप है ही गरीब निवाज़।" (मु.7.1.74 पृ.3 मध्य) गरीबों को ही विश्व की बादशाही देते हैं। ●"(लौकिक या अलौकिक ब्राह्मणों की दुनिया में) बड़ा पद जो मिला है वह उसमें ही रहते हैं। पैसे वालों को अपने पैसे ही याद पड़ते हैं।....धन, मर्तबा याद पड़ता रहेगा।" (मु.26.1.74 पृ.2 अंत)

भारतीय परम्परा में आज भी शंकर को फ़क़ीरी वेष में दिखाया जाता है। ज़रूर फ़क़ीर ही रहा होगा। अमीरों के मुक़ाबले में फकीरों को दुनिया वाले भी कलंक जास्ती लगाते हैं। बाबा ने मु.14.5.73 पृ.3 मध्य पर कहा भी है- "बड़े-2 आदमियों की गुप्त रहती है।" गरीबों को ही सितम सहन करने पड़ते हैं। यज्ञ के आदि में जो हुआ सो अंत में भी ज़रूर होना है। इसलिए बाबा ने कहा है- "बाबा गाली खायेंगे तो क्या बच्चे नहीं खायेंगे? सितम सहन करेंगे, अत्याचार होंगे। यह तो ड्रामा में नूँध है।"●"बाबा कहते हैं, मेरी कितनी ग्लानि की है। यह भी बना-बनाया ड्रामा है। फिर भी ऐसे ही होगा।" (मु.28.5.73 पृ.3 अंत) ●"कलंक जिस पर लगते हैं वही फिर कलंकीधर डबल सिरताज (अर्थात् स्वर्ग स्थापना की ज़िम्मेवारी और पवित्रता दोनों के ताजधारी) बनते हैं। जैसे इन (ब्रह्मा) के लिए वैसे तुम्हारे (अर्थात् शंकर के) लिए।..... हमारा यह सितम सहन करने का भी पार्ट है।" (मु.9.7.73 पृ.5 अंत)

**(viii) फुट्टैल-एकाक-अड़ियल स्वभाव-** धर्म स्थापना के प्रतीक बैल (सांड) को भी अड़ियल स्वभाव होने के कारण कोई पालता नहीं। वह धक्के ही खाता रहता है। इसलिए धर्म के धक्के प्रसिद्ध हैं। सम्पूर्ण चतुर्भुजी ब्रह्मा (शंकर) को ही अड़ियल बैल कहेंगे; क्योंकि ज्ञान चंद्रमा ब्रह्मा भी शंकर के मस्तक में दिखाया जाता है। अत: मु.17.1.79 पृ.3 के मध्य में बाबा कहते हैं-"मैं जानता हूँ तुमको कितने धक्के खाने पड़ते हैं। समझते हैं भगवान कोई न कोई रूप में आ जावेगा। कब बैल पर सवारी भी दिखाते हैं। अब बैल पर सवारी कोई होती थोड़े ही है।" (यह तो बैल के फुट्टैल अड़ियल स्वभाव की बात है) यही कारण है कि शंकर को कोमल और मीठे स्वभाव वाले ब्रह्मा की तरह 100 या 1000 सहयोगी रूपी भुजाएँ नहीं दिखाई जातीं। बाबा ने मु.5.7.73 पृ.3 के आदि में कहा भी है- "तुम ऐसे कभी नहीं सुनेंगे, शंकर को (एक साथ इकट्ठी) 100 अथवा 1000 भुजाएँ हैं।" हाँ, एक-दो करके आगे-पीछे नं.वार सहयोगी बनते रहे, वह दूसरी बात है। जब अंत में एकजुट संगठित माला के रूप में 100 सहयोगी देखने में आवेंगे तब तो 'औघड़ वरदानी' शंकर का पार्ट ही समाप्त हो जावेगा। फिर तो सहस्त्रभुजी विराट रूप विष्णु देखने में आवेगा। यह गुप्त साधारण फकीरी पार्ट गुम

हो जावेगा।

**(ix) तीन पाँव पृथ्वी भी न पाने वाला रमता जोगिया स्वभाव-** जैसे सांड को कोई भी व्यक्ति अपने खेत-बाड़ी या बाड़ा में 3 पैर पृथ्वी का ठिकाना नहीं देता, ठीक वही हाल शिव के रथी नन्दीगण बैल का होता है। यही कारण है कि जानबूझकर कलंकरूपी मल धारण करने वाले शंकर (अथवा आदिनाथ या महावीर) को शास्त्रों में अवधूत वेश में रमता जोगी बताया गया है। ता.24.4.70 पृ.3 की मुरली के अंत में बाबा ने कहा भी है- "हम तो है ही रमतायोगी। जिसमें भी चाहूँ तो जाकर कल्याण कर सकता हूँ।" अर्थात् किसी को भी माला का मणका बनाने के लिए उठा सकता हूँ। ●"कहते हैं जिधर देखो राम ही राम रमता है। अभी (संगमयुग में) रमते तो मनुष्य (रूप में भगवान) हैं ना।" (त्रेतायुगी राम की तो बात ही नहीं, उनके संगमयुगी पार्ट शंकर की बात है) (मु.11.3.75 पृ.1 अंत)

●"तुम (ईश्वरीय संतान) को सर्विस करने लिए 3 पैर पृथ्वी भी नहीं मिलती। मैं फिर तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ।" (मु.6.5.77 पृ.3 अंत)

●"गाया हुआ है जिन्हों को 3 पैर पृथ्वी के न मिले थे वे सारे विश्व के मालिक बन गये। मनुष्य थोड़े ही समझते हैं।" (मु.1.5.73 पृ.2 मध्यादि)

●"बाप कहते हैं- देखो, भक्तिमार्ग में मुझ शिव को रहने के लिए कितने अच्छे-2 महल बनाते हैं हीरों-जवाहरातों के और अभी मैं डायरैक्ट आया हूँ तो देखो कहाँ रहता हूँ। कम से कम राष्ट्रपति जैसा मकान तो होना चाहिए; परंतु देखो 3 पैर पृथ्वी भी नहीं मिलती।" (मु.1.5.73 पृ.1 मध्यादि)

**(x) तीव्र ज्ञानी-** मु.18.6.70 पृ.6 के मध्यादि की अ.वाणी में कहा है- "रमता योगी वह जो ज्ञान में रमण करता हो।" बाबा की वाणी के अनुसार ऐसा ज्ञानी तू आत्मा बच्चा शिवबाबा को विशेष प्रिय है। ज्ञान में बड़ा होने के कारण ही देवताओं में सबसे महान देव-देव महादेव शंकर शिवबाबा का सबसे बड़ा, बाप समान बच्चा साबित हो जाता है। ता.3.5.73 पृ.1 रात्रि क्लास की मुरली में बाबा ने कहा भी है- "बड़े भाई को हमेशा बाप समान समझते हैं।.......जिसमें अधिक ज्ञान है वह बड़ा ठहरा।" भारतीय परम्परानुसार शिवबाबा का यह बड़ा बच्चा त्रिनेत्री महादेव शंकर ही विश्व के राजभाग का अधिकारी 'विश्वनाथ' बनता है। **ईश्वरीय ज्ञान की तीव्रता ही उस बच्चे में शिवबाबा की प्रवेशता की पक्की पहचान है।** अत: बाबा ने कहा है- **"मालूम कैसे पड़ता है कि इनमें बाप भगवान है। जब नॉलेज देते हैं।"** (मु.27.10.74 पृ.2 मध्य) ● "दान से ही ज्ञान की परख होती है।" ●"मैं तो नॉलेज क्रियेट करता हूँ। इसलिए क्रियेटर हूँ। ●"बाप है विचित्र तो उनकी नॉलेज भी विचित्र है।" (मु.1.5.73 पृ.1 का मध्यांत) **●"जैसे आत्मा को देख नहीं सकते, जान सकते हैं, वैसे परमात्मा को भी (ज्ञान से) जान सकते हैं। देखने में तो आत्मा और परमात्मा दोनों एक जैसी बिंदी दिखेंगी। बाक़ी तो है**

**सारी नॉलेज।"** (मु.11.1.75 पृ.3 मध्य)

सत्य ज्ञान की इस पराकाष्ठा के कारण आज भी शंकर को ज्ञान का तीसरा नेत्र दिखाया जाता है। बाबा ने ता.4.10.74 पृ.1 की मुरली अंत में भी कहा है-"भल कितने भी (संगमयुगी बेहद के) बड़े सन्यासी, पंडित, विद्वान आदि हैं; परंतु तीसरा नेत्र देने की कोई में ताकत नहीं। यह (काम विकार को भस्म करने वाला) तीसरा नेत्र देने के लिए ज्ञान सूर्य बाप को आना पड़ता है।" ता.31.1.73 की वाणी के अनुसार "ब्रह्मा ज्ञान चंद्रमा माता है, ज्ञानसूर्य बाप नहीं। जबकि बाबा ने कहा है-"हमको बाप जैसा सम्पूर्ण ज्ञान सागर बनना ही है।" (मु.8.8.74 पृ.1 मध्यांत) क्योंकि "बुद्धि में फुल नॉलेज आने से फुल वर्ल्ड की राजाई मिल जावेगी।" (मु.2.1.74 पृ.1 आदि) ● "जिसमें (जितनी) जास्ती नॉलेज होगी वह (उतना) ऊँच पद पावेंगे।" (मु.26.1.74 पृ.1 अंत) यही कारण है कि ब्रह्मा की आत्मा कृष्ण के नाम-रूप से सिर्फ़ 9 लाख की सतयुगी दुनिया का मालिक बनेगी। इसलिए उसे श्रीनाथ अर्थात् श्रेष्ठ देवों का नाथ कहा जाता है। वह सारे जगत् अर्थात् 500 करोड़ की विश्व का मालिक नहीं बनेगी। सारे विश्व का मालिक तो ज्ञान बाण चलाने में अर्जुन (ब्रह्मा) से भी तीखा कोई भील जैसा ठिक्कर खाने वाला पुरुषार्थी (जगन्नाथ) ही बनेगा। बाबा ने ता. 21.3.73 पृ.2 की मुरली आदि में कहा भी है-"कई (बाप समान) बच्चे ऐसे भी हैं जो माँ-बाप से भी अच्छा पढ़ाते हैं। शिवबाबा की तो बात ही ऊँच ठहरी; परंतु मम्मा-बाबा से भी इस समय होशियार बच्चे हैं।"

● "भील, अर्जुन से तीखा हो गया। बाहर में रहने वाले ने तीर पूरा चट (कर) लिया। तब तो बाबा कहते हैं घर वाले इतना उठा नहीं सकते, जितना बाहर वाले। कहा जाता है घर की गंगा को मान नहीं देते हैं।" (मु.3.8.74 पृ.3 आदि) यही कारण है कि माउण्ट आबू में 18 वर्ष चलाई गई ईश्वरीय वाणी के रिकॉर्ड में से अधिकतर भाग आज उपलब्ध नहीं है।

चूँकि त्रेतायुगी राम की आत्मा ही कलियुग में तुलसीदास और पुरुषोत्तम संगमयुग में शंकर के नाम-रूप से विचार-सागर-मंथन रूपी ज्ञान की भांग घोटकर अथवा ज्ञान का चंदन घिसकर विश्व की बादशाही का तिलक पाने लायक बनती है। अत: बाबा ने कहा है- "मैं स्वर्ग का रचयिता तुमको राजतिलक न दूँगा तो कौन देगा? कहते हैं ना, तुलसीदास चंदन घिसे........(तिलक देत रघुवीर), यह बात यहाँ (संगमयुग) की है।" (मु.5.3.73 पृ.3 आदि) ● "जब ज्ञान घिसेंगे तब ही राजतिलक लायक बनेंगे।" (मु.8.8.73 पृ.3 अंत) शंकर द्वारा किये गये इसी विचार-मंथन की यादगार शास्त्रों में 'सागर-मंथन' की कथा है। 'गंगा-अवतरण' प्रसंग में ज्ञान-गंगा को शंकर के मस्तक में दीर्घकाल तक भ्रमण करने का अर्थ भी यही है। 'अपनी घोट तो नारायणी नशा चढ़े' वाली कहावत भी ज्ञान की भांग घोटने वाले शंकर की नशीली आँखों से इसलिए सम्बंध रखती है; क्योंकि उन्होंने शिव पिता की वाणी पर गहराई

से मनन-चिंतन किया था। बाबा ने कहा भी है-"विचार-सागर-मंथन का नाम बहुत बाला है।......एक दिन (रूहानी) गवर्मेंट भी तुमको कहेगी कि यह नॉलेज सभी को दो।" (मु.9.3.73 पृ.1मध्य, पृ.3 आदि) क्योंकि बाबा ने ता. 26.1.74 पृ.3 के अंत की मुरली में कहा है "विचार-सागर-मंथन भी सर्विस करने वालों का ही चलेगा। (डिससर्विस ही करते हैं) सर्विस नहीं कर सकते तो विचार-सागर-मंथन न चल सके।"

● "(शास्त्रों में) बाक़ी यह ठीक है- विचार-सागर-मंथन हुआ, कलश लक्ष्मी (अर्थात् ब्रह्मा सो विष्णुदेवी) को दिया। उसने फिर औरों को अमृत पिलाया तब स्वर्ग के गेट खुले।" (मु.7.6.74 पृ.2 आदि)

शंकर जैसे ज्ञानी तू आत्मा महारथी बच्चों की पहचान देते हुये बाबा ने 27.5.74 पृ.2 की मुरली के अंत में कहा है-"महारथियों की बुद्धि में प्वॉइंट्स बैठती होगी। लिखते रहें तो अच्छी-2 प्वॉइंट्स अलग करते रहें। प्वॉइंट्स का वज़न करें; परंतु इतनी मेहनत तो कोई करते नहीं। मुश्किल कोई नोट रखते होंगे।......डायरी तो सदैव पॉकिट में रहनी चाहिए नोट करने (के) लिए। सबसे जास्ती तुमको (सबसे बड़े बच्चे शंकर को) नोट करना है।"

● "मुरली बच्चों को 5/6 बार पढ़नी चाहिए, सुननी चाहिए, तब ही बुद्धि में बैठेगी।" (मु.31.8.73 पृ.4 अंत)

**(xi) तीव्र योगी-** योगबल से नं.वार विश्व की बादशाही का स्कॉलरशिप पाने वाले बाप समान अष्ट रत्नों की विशेष पहचान देते हुये बाबा ने मु.4.3.69 पृ.2 मध्यादि में कहा है- "स्कॉलरशिप तो उनको मिलती है जो (संकल्प मात्र भी) सज़ा नहीं खाते हैं। उनकी याद की रफ़्तार और ज्ञान की रफ़्तार फर्स्ट क्लास रहेगी।"

● "जब स्वयं को ज्ञान-योग का प्रत्यक्ष प्रमाण बनायेंगे। जितना स्वयं को प्रत्यक्ष प्रमाण बनायेंगे उतना बाप को प्रत्यक्ष कर सकेंगे"। (अ.वा.6.8.70 पृ.305 आदि)

● "नये-2 पुरानों से तीखे चले जाते हैं। बाप से पूरा योग लग जाये तो बहुत ऊँच चला जावेगा। सारा मदार है ही योग पर।" (मु.4.9.74 पृ.2 आदि)

यहाँ तक कि लौकिक और अलौकिक परिवार के बंधनों से सर्वथा मुक्त रहने वाली ऐसी आत्माएँ ब्रह्मा बाबा के पुरुषार्थ को भी जीते जी क्रॉस कर जावेंगी। इसलिए 2.12.74 पृ.2 मध्यादि की मुरली में कहा है-"बाबा कहते हैं बाप को निरन्तर याद करना, इसमें मेरे से भी तुम जास्ती तीखे जाते हो; क्योंकि इनके ऊपर तो (यज्ञ की पालना का) मामला बहुत है।"

**(xii) सामना करने और समाने की तीव्र शक्ति-** ता.16.1.75 की अ.वा. पृ.16 की घोषणानुसार बैकबोन बाप-दादा शंकर समान किसी ज्वालामूर्त बच्चे के द्वारा लौकिक और अलौकिक दुनिया के आसुरी सम्प्रदायों का सामना करने के लिए ही विशेष

रूप से प्रत्यक्ष होते हैं। अतः अ.वा. 21.9.75 पृ.121 के मध्य में कहा है- "(ज्ञान) सागर (बाप) में विशेष दो शक्तियाँ सदैव देखने में आवेंगी-...... (ज्ञान) लहरों द्वारा सामना भी करते हैं और हर वस्तु व व्यक्ति को स्वयं में समा भी लेते हैं।"

●"स्थापना के आदि समय तो सारी दुनिया एक तरफ़ और एक आत्मा दूसरी तरफ़ थी ना!......पहले निमित्त तो एक आत्मा बनी ना!.....जो आदि सो अंत (में फिर वही हो रहा है)।" (अ.वा.9.4.73 पृ.19 अंत, 20 आदि)

**ओमशांति। ओमक्रांति।**

**।।ॐ शान्ति ।।  ।। परम+आत्मा प्रत्यक्षता बॉम्ब ।।  शिवबाबा याद है।**

# नगाड़ा नं. 6

# विश्व महाराजन श्री लक्ष्मी-नारायण बनाम शंकर-पार्वती

## (1) शंकर-पार्वती ही संगमयुगी ल.ना. हैं जिनके बच्चे राधा-कृष्ण होंगे-

दिव्य साक्षात्कार के आधार से बनवाये गये 4 मुख्य चित्रों में से ल.ना. का यह पुराना चित्र भी मम्मा-बाबा के समय का है। यहाँ चित्र के अंदर ही स्पष्ट लिखत सामने दे दी गई है। इस चित्र के मध्य में वर्तमान मनुष्य-जीवन का लक्ष्य **'नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी'** बनने का दिखाया गया है। चित्र में नीचे दिखाये गये राधा-कृष्ण जैसे बच्चों का जन्म इन्हीं ल.ना. के जैसा योगयुक्त गृहस्थ जीवन बनाने वाले विश्व विजेताओं के यहाँ होगा। यह राधा-कृष्ण जब बड़े होंगे तो अपने माँ-बाप का ल.ना. वाला टाइटिल खुद भी धारण करेंगे और अगले जन्मों में आने वाली सतयुगी 7 पीढ़ियों में भी यही टाइटिल चलता रहेगा। तात्पर्य यही है कि राधा-कृष्ण बड़े होकर चित्र के मध्य में चित्रित संगमयुगी ल.ना. नहीं बनेंगे; बल्कि उन जैसे ही 16 कला सम्पूर्ण सतयुगी ल.ना. बनेंगे; क्योंकि चित्र के मध्य में चित्रित ल.ना. तो राधा-कृष्ण के भी रचयिता माँ-बाप हैं। चूँकि राधा-कृष्ण नई मनुष्य सृष्टि के पहले पत्ते हैं। अतः उनके माँ-बाप (संगमयुगी ल.ना.) इस साकारी मनुष्य सृष्टि के साकार बीजरूप रचयिता बाप हैं। साकार रचयिता से ही साकार राधा-कृष्ण रूपी रचना की पैदाइश हो सकती है। निराकार ज्योतिबिंदु शिव से साकार राधा-कृष्ण की पैदाइश कैसे होगी?

सूक्ष्म ज्योतिबिंदु रचयिता शिव की रचना भी सूक्ष्म और आकारी होनी चाहिए। अतः चित्र में सबसे ऊपर त्रिमूर्ति में सूक्ष्म रचयिता शिव पिता की सूक्ष्म रचना रूपी बच्चे ब्र.वि.शं. को दिखाया गया है। जबकि त्रिमूर्ति के नीचे स्थूल और साकारी सृष्टि के बीजरूप रचयिता संगमयुगी ल.ना.(प्रजापिता ब्रह्मा या शंकर-पार्वती) को उनकी स्थूल रचना राधा-कृष्ण रूपी बच्चों के ऊपर दिखाया गया है। इस तरह सारा ही चित्र

रचयिता के बाद रचना के क्रम से चित्रित है; क्योंकि रचयिता बाप की स्टेज रचना रूपी बच्चों से ऊपर ही होती है, नीचे नहीं। यही कारण है कि चित्र के हेडिंग में सबसे ऊपर मोटे अक्षरों की लिखत नं.1 में **'स्वर्ग के रचयिता और उनकी'** शब्द बहुवचन में इस बात का सूचक है कि साकार रचना रचने के लिए स्त्री-पुरुष दोनों (का श्रेष्ठाचारी संयोग) चाहिए। अकेले ज्योतिर्बिंदु शिवपिता से साकारी सृष्टि की पैदाइश नहीं हो सकती; क्योंकि निराकारी शिवपिता से तो ज्ञान का निराकारी वरसा ही मिलेगा। कृष्ण जैसे सतयुगी बच्चों को साकार में सतयुगी राजधानी का वरसा और ल.ना. का टाइटिल देने वाला तो कोई साकारी बाप ही चाहिए; क्योंकि शिवबाबा तो स्वर्ग में जाते ही नहीं। बाबा ने ता.7.10.73 पृ.4 की रात्रि मु. के अंत में कहा भी है- "निराकार से क्या निराकारी वरसा चाहिए? प्रश्न उठता है।......अब उनसे वरसा लेना है तो किस चीज़ का?" जगत के योगियों और तपस्वियों में ऊँचे से ऊँचे पुरुषार्थी योगीश्वर शंकर-पार्वती भक्तिमार्ग में प्राचीन काल से लेकर आज तक सारी मानवी सृष्टि के नामीग्रामी सर्वप्रथम माता-पिता गाये जाते हैं। (जगतं पितरं वंदे पार्वती-परमेश्वरौ) ईसाई-मुस्लिम और जैन सभ्यता में क्रमश: इन्हें एडम-ईव, आदम-हव्वा और आदिदेव-आदिदेवी नाम से पुकारा गया है। बाबा ने ता. 18.5.73 पृ.2 की मुरली के मध्य में कहा है- "त्वमेव माताश्च पिता... कहते हैं, तो फादर के साथ मदर भी चाहिए। मनुष्य समझते हैं एडम ब्रह्मा, ईव सरस्वती। वास्तव में यह राँग है।" क्योंकि सरस्वती ब्रह्मा की बेटी थी, पत्नी नहीं; परंतु ब्रह्मा-सरस्वती जब अपना पूर्व सम्बंध और शरीर त्यागकर सम्पूर्ण बनने के बाद शंकर-पार्वती जैसे तीव्र पुरुषार्थी बच्चों में प्रवेश करते हैं तो एडम-ईव कहे जाते हैं।

अब चूँकि राम-सीता की आत्माएँ ही पुरुषोत्तम संगमयुग के अंत और सतयुग के आदिकाल में संगमयुगी ल.ना. बनाम शंकर-पार्वती के नाम-रूप से ल.ना. के टाइटिल वाली 1250 वर्षीय सतयुगी डायनेस्टी आरम्भ करती हैं और त्रेता के आदि में फिर वही आत्माएँ राम-सीता के टाइटिल वाली 1250 वर्षीय डायनेस्टी शुरू करती हैं। अत: चित्र में इन संगमयुगी ल.ना. बनाम शंकर-पार्वती के पैरों तले की लिखत नं.3 में **'संवत् 1 से 2500 वर्ष'** लिखा है। वास्तव में 2500 वर्ष तक सतयुगी ल.ना. (राधा-कृष्ण) का राज्य चलता ही नहीं। ल.ना. का राज्य तो 1250 वर्ष तक ही चलता है। बाद में 1250 वर्ष त्रेता के रामसीता का राज्य चलता है। इसलिए ता.25.5.72 पृ.3 मध्यांत की मु. में कहा गया है-"यह अभी जानते हैं हम सो (संगमयुगी) ल.ना. बनते हैं। हम सो राम-सीता बनेंगे।" इसी तरह ता.9.11.72 पृ.3 की मु. के मध्यादि में कहा है- "सतयुग में ल.ना. का राज्य है। फिर वही त्रेता में भी राज्य करते हैं।"

चूँकि त्रेतायुगी राम के अंतिम 84वें संगमयुगी शरीर के द्वारा ही निराकार राम शिव प्रैक्टिकल में सतयुग की स्थापना कराते हैं इसलिए सतयुग को भी रामराज्य या रामपुरी कहा जाता है। बाबा ने ता.6.3.75 पृ.2 की मु. के अंत में कहा भी है "सतयुग

को रामपुरी कहा जाता है। अक्षर कहते हैं; परंतु यह नहीं जानते कि राम कौन है?" ●"जिस नाम से (रामराज्य की) स्थापना होती तो ज़रूर उनका नाम ही रखेंगे।" (मु.25.5.74 पृ.1मध्य) और एक मुरली में भी बाबा ने कहा है कि "रामराज्य स्थापन हुआ। नाम राम रख दिया। वास्तव में नाम शिव है।" परंतु शिव तो स्वर्ग में जाते ही नहीं। अत: शिवराज्य, नारायणराज्य, कृष्णराज्य का गायन नहीं है। रामराज्य का ही गायन है। बाबा ने 2.8.76 पृ.3 आदि की मु. में कहा है "**रामराज्य है सतयुग (के) आदि में।**" जबकि ता.15.12.72 पृ.1 मध्य की मुरली में यह भी कहा है "**राम भी वास्तव में जगतजीत था ना।**"

वास्तव में 500 करोड़ की विश्व को जगत कहा जाता है। यही कारण है कि चित्र में ल.ना. के पैरों तले की लिखत नं.4 में '**विश्व महाराजन श्री नारायण**' शब्द प्रयोग किया गया है। वास्तव में राधा-कृष्ण की आत्माएँ 500 करोड़ की विश्व पर संगमयुगी राजाई नहीं करेंगी। वे सिर्फ़ 9 लाख की आबादी पर राजाई करेंगी। इसलिए राधा-कृष्ण को विश्व महाराजन न कहकर सतयुग का मालिक कह सकते हैं। बाबा ने ता.8.1.75 पृ.2 मध्यांत की मुरली में कहा भी है- "ऊँच ते ऊँच बाप से ऊँच ते ऊँच वरसा मिलता है। वह (वरसा) है ही भगवान (भगवती का)। फिर सेकेंड नम्बर में हैं ल.ना. सतयुग के मालिक।" राधा-कृष्ण को देवी-देवता कहेंगे। भगवान-भगवती नहीं। जबकि बाबा ने मु.23.5.76 पृ.2 के अंत में कहा है "भगवान (शिव) ने ज़रूर भगवती-भगवान पैदा किये।" ता.17.7.74 पृ.3 मध्य की मुरली में कहा है-"नारायण से पहले तो श्रीकृष्ण है। फिर तुम ऐसे क्यों कहते हो नर से नारायण बने? क्यों नहीं कहते हो नर से कृष्ण बने? पहले नारायण थोड़े ही बनेंगे। पहले तो नर से श्रीकृष्ण बनेंगे न। (कौन? ब्रह्मा)......बाप कहते हैं अब तुम (अर्थात् हम बच्चे) नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनने वाले हो।" स्पष्ट है कि नर से श्रीकृष्ण तो ब्रह्मा ही बनेंगे अगले जन्म में; परंतु हम बच्चे इसी संगमयुगी जन्म में नर से नारायण बनते हैं। इसलिए नर से ना. बनने का गायन ज़्यादा है। शिवबाबा ने इन्हीं संगमयुगी ना. को समझदार बताया है। जबकि दूसरे सतयुगी नारायणों को ज्ञान न होने के कारण बुद्धू बताया है। मु.28.7.74 पृ.3 के मध्यादि में कहा है-"यह ल.ना. समझदार हैं तब तो (500 करोड़ की) विश्व के मालिक हैं। बेसमझ तो विश्व के मालिक हो न सकें।" मु. 30.9.74 पृ.3 के मध्य में कहा है "यह (संगमयुगी) ल.ना. आदि चैतन्य में थे तो सुख ही सुख था। सब धर्म वाले उनको बहिश्त, गार्डन ऑफ अल्लाह कहते हैं।" सब धर्म वाले संगमयुग में ही होंगे। सतयुग में नहीं। मु. 5.2.75 पृ.1 के शुरू में इन्हीं संगमयुगी ल.ना. के लिए कहा है "अब हीरे जैसा जन्म तो सब कहेंगे इन ल.ना. का ही है।" सतयुग में राधा-कृष्ण का जन्म तो देवताई सोने समान जन्म कहा जावेगा। हीरे समान नहीं। यही कारण है कि चित्र में भी ल.ना. को संगमयुगी ज्ञान प्रकाश की दुनिया में दिखाया गया है, जबकि राधा-कृष्ण को फूल-पत्तियों वाली सतयुगी दुनिया में दिखाया गया है।

## (2) संगमयुग के वर्तमान जन्म में ही ल.ना.बनना है-

चित्र में ल.ना. के ऊपर की लिखत नं.2 में स्पष्ट लिखा हुआ है-"सतयुगी दैवी स्वराज्य आपका ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है।" तात्पर्य यह है कि ईश्वरीय जन्म यहाँ लिया है तो विश्व की बादशाही का जन्मसिद्ध अधिकार अगले जन्म में क्यों मिले? स्पष्ट है कि इसी जन्म में और इसी नारकीय दुनिया के बीच स्वर्ग का वरसा लेना है, मरने के बाद नहीं। वह तो अंधश्रद्धा कही जावेगी। ता.9.6.74 पृ.1 की मुरली के शुरू में बाबा ने कहा भी है "बाप है ही स्वर्ग का रचयिता तो ज़रूर स्वर्ग का वरसा ही देंगे और देंगे भी ज़रूर नर्क में।" इसी जन्म में यदि 16 कला सम्पूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति न हो तो ईश्वरीय पढ़ाई अथवा योगबल की महिमा कैसे होगी? बाबा ने कहा भी है-"तुम बच्चों को सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण यहाँ बनना है।" (मु. 23.3.68 पृ.1 अंत)

● "पहले-2 तो यह ल.ना. ही आवेंगे न। इनको ऐसा कोई ने तो ज़रूर बनाया होगा न। ज़रूर पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही बने होंगे। उत्तम ते उत्तम पुरुष है ही यह।" (मु.10.3.74 पृ.3 आदि) ● "यह (ल.ना.) स्वर्ग के मालिक कैसे बने? अभी तुमको बाप सुना रहे हैं-इस सहज राजयोग द्वारा इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही यह बनते हैं।" (मु. 5.12.74 पृ.1 मध्यांत) ● "वह (सतयुगी ल.ना.) तो दान-पुण्य करने से राजा पास जन्म लेने से प्रिंस बनते हैं, फिर राजा बनते हैं; परंतु तुम इस पढ़ाई से (डायरैक्ट) राजा बनते हो।" (मु.7.7.74 पृ.2 अंत)

चूँकि नियम प्रमाण सूक्ष्म से ही स्थूल की रचना होती है। जैसे अति सूक्ष्म बड़ के बीज से विशाल झाड़ बन जाता है। अत: 9.1.75 की अ.वा. पृ.11 के आदि में बाबा ने कहा है-"अपने कमज़ोर संकल्पों को भी अब समर्थ बनाओ। यह जो कहावत है कि 'संकल्प से सृष्टि रची'। यह इस (संगमयुगी) संगम की बात है।" स्पष्ट है कि श्रीमत प्रमाण विधि-विधानपूर्वक ज्ञानयुक्त संकल्प चलाने वाले सशक्त पुरुषार्थी बच्चे इसी जन्म में सम्पूर्ण सिद्धियाँ प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा समझना राँग है कि 16 कला सम्पूर्ण सतयुग के पहले ल.ना. तो मम्मा-बाबा बन गये। अतएव हमें दूसरी सतयुगी गद्दी से लेकर आठवीं गद्दी के कम कला वाले ल.ना. का पद लेने के सिवाय दूसरा कोई चारा ही नहीं। इस तरह की मजबूरी के कमजोर संकल्प चलाने वाली विधर्मी आत्माएँ छोटे दिल वाली कही जावेंगी। बाप समान महत्वाकांक्षी आत्माएँ थोड़े में सन्तुष्ट नहीं हो सकतीं। उन्हें तो कृष्ण जैसा 16 कला सम्पूर्ण लक्ष्य ही चाहिए और वह लक्ष्य है ही कृष्ण के माता-पिता संगमयुगी ल.ना.का। बाबा ने कहा भी है कि बच्चे ऐसा पुरुषार्थ करना है जो मम्मा-बाबा आकर तुम्हारे वारिसदार बनें। ता.4.5.73 पृ.54 की अ.वा. आदि में कहा भी है "लक्ष्य तो सभी का फर्स्ट (ल.ना.) का है ना? लास्ट में भी अगर आये तो क्या हर्जा, ऐसा लक्ष्य तो नहीं है ना? अगर यह लक्ष्य भी रखते हैं कि जितना मिला उतना ही अच्छा तो उसको क्या कहा जावेगा? ऐसी निर्बल आत्मा का टाइटिल

कौन-सा होगा? ऐसी आत्माओं का शास्त्रों में भी गायन है......कि जब भगवान ने भाग्य बाँटा तो (अलबेलेपन की आधी नींद में) वे सोये हुये थे। अलबेलापन भी आधी नींद है।.......ऐसे को कहा जाता है-आये हुये भाग्य को ठोकर लगाने वाले।"

## (3) संगमयुगी ल.ना. जैसे युगलों की निरोगी कंचनकाया इसी जन्म में बनेगी-

वास्तव में राधा-कृष्ण जैसे बच्चों को जन्म देने वाले माँ-बाप भी तो 16 कला सम्पूर्ण निर्विकारी ही होने चाहिए। विकारी और भ्रष्टाचारी देहधारियों से तो राधा-कृष्ण जैसी देवात्मायें जन्म नहीं लेंगी; क्योंकि तामसी 5 तत्वों वाली धरणी पर तो देवताओं की परछाया भी नहीं पड़ सकती। ऐसी सम्पूर्ण योगी और ज्ञानी तू आत्माएँ जिन्होंने अपने शरीर के 5 तत्वों को भी योगबल द्वारा इसी संगमयुगी जन्म में परिवर्तित करके दीर्घायु और निरोगी कंचन काया जैसी सौ प्रतिशत हेल्थ प्राप्त की हो, वही तो कृष्ण जैसे बच्चों की बाप समान बीजरूप आत्माएँ विख्यात हो सकती हैं। बाबा ने इस संगमयुगी फर्स्ट जन्म के लिए ता.21.10.74 पृ.1 आदि की मुरली में कहा है "बाप तुम बच्चों को 21 जन्मों के लिए 100% हेल्दी बनाते हैं।"

●"अंत में जब एकदम कर्मातीत अवस्था हो जावेगी तब निरोगी बनेंगे।"(मु.28.2.73 पृ.1आदि) ●"तुम बच्चे योगबल से (शरीर के) 5 तत्वों को भी सतोप्रधान बनाते हो।" ● "प्रकृति को भी पावन बनाना है, तब ही विश्व परिवर्तन होगा।" (अ.वा.25.5.73 पृ.72 अंत)

बाबा ने धोबी और सर्प का मिसाल देकर बताया है कि पुरानी खल छोड़ने पर भी सर्प तो जीता ही रहता है। मर नहीं जाता। इसी को कायाकल्प कहा जाता है। ●"जैसे सर्प का मिसाल है। एक खल छोड़ दूसरी लेता है। उसको कोई मरना नहीं कहा जाता।........एक शरीर छोड़ दूसरा ले लेते हैं। यह अभ्यास यहाँ डालना है।" (मु.12.2.75 पृ.2 अंत) ●"मैं कितना अच्छा धोबी हूँ। तुम्हारा (शरीर रूपी) वस्त्र कितना शुद्ध बनाता हूँ। ऐसा धोबी कब देखा। (मु. 22.5.73 पृ.3 अंत)। ऐसा धोबी किस काम का जो शरीर रूपी वस्त्र ही फाड़कर रख दे और कहे कि अगले जन्म में नया वस्त्र मिल जायेगा। वैसे भी सतयुग में तो शरीर रूपी वस्त्र शुद्ध बनाने का प्रश्न ही नहीं; क्योंकि बाबा ने 2.10.74 की मु. में कहा है "आत्मा और काया कंचन बन जावेंगे यह कमाल है ना। (इसी जन्म में कंचन काया बने तब तो कमाल है) तो अपने को ऐसा (योगबल से) श्रृंगार करना है। ●"इस योगबल से तुम कितने कंचन बनते हो। आत्मा और काया दोनों कंचन बनती है।" (मु.5.12.74 पृ.2 आदि) ●"आत्मा और शरीर रूपी नैया को पार ले जाने वाला एक ही बाप खिवैया है।" (मु. 3.11.74 पृ.1 मध्य) अर्थात् इस शरीर को ही योगबल से जीते जी कंचन बनकर नर्क के पार स्वर्ग में जाना है। तब तो राधा-कृष्ण जैसे बच्चों का गर्भमहल से जन्म होगा।

यह धारणा सर्वथा गलत है कि आत्मा के सतोप्रधान बनते ही मृत्यु हो जावेगी। नहीं। सतोप्रधान आत्मा बुद्धियोग द्वारा इस शरीर से डिटैच हो जावेगी। शिवबाबा ने ता. 25.8.74 पृ.2 की मुरली आदि में कहा भी है- "ऊपर जाना माना मरना, शरीर छोड़ना। मरना कौन चाहते? यहाँ तो बाप ने कहा है तुम इस शरीर को भी भूल जाओ। जीते जी मरना तुमको सिखलाते हैं।" जो जीते जी मरने की कला नहीं सीखेंगे, उन्हों की ही शारीरिक मृत्यु होनी है। वे स्वर्ग में जीते जी जाने के काबिल नहीं। अमरनाथ बाप के हम डायरैक्ट बच्चे तो मृत्यु पर भी विजय पाकर इच्छा मृत्यु धारण करने वाले बनते हैं। बाबा ने ता. 8.10.74 पृ.1 की मु. के मध्य में कहा भी है "यह बहुत वैल्युएबल शरीर है। इस शरीर द्वारा ही आत्मा को बाप द्वारा (विश्व की बादशाही की) लॉटरी मिलती है।"

**ओमशांति। ओमक्रान्ति।**

**।।ॐ शान्ति।।** **।। परम+आत्मा प्रत्यक्षता बॉम्ब ।।** **शिवबाबा याद है।**

# नगाड़ा नं.7

# चतुर्भुजी ब्रह्मा द्वारा सृष्टि चक्र बनाम सुदर्शन चक्र फिर से घूमा

## (1) 5000 वर्षीय ड्रामा के चारों युगों की शूटिंग या रिहर्सल संगमयुग में होती है-

**(i) बेहद ड्रामा की रिहर्सल का रहस्य-** गोले का चित्र ब्रह्मा बाबा द्वारा संदेशियों से साक्षात्कार में बनवाये गये मुख्य 4 पुराने चित्रों में से एक है। इसमें मानवीय सृष्टि रूपी रंगमंच का 5000 वर्षीय कालक्रम 4 भागों में बाँटा गया है। दुनियावी हद के ड्रामा की तरह इस बेहद के नाटक में भी 4 दृश्य, चार युगों के रूप में दिखाये गये हैं। मुरलियों में इस बेहद ड्रामा के जिन 5/7 मुख्य पार्टधारियों का ज़िक्र आया है, उन्हें नं.वार युगानुरूप कालक्रम से चित्रित किया गया है अर्थात् सतयुग में 'राधा-कृष्ण', त्रेता में 'राम-सीता', द्वापर में 'इब्राहिम', 'बुद्ध' और 'क्राइस्ट' के क्रम में दिखाया गया है। बाकी काले कलियुग में आने वाले धर्म और धर्मपिताएँ तो इन्हीं 4 मुख्य धर्मों के विकृत रूप हैं। इसलिए उन्हें यहाँ चित्रित नहीं किया गया है। इन धर्मपिताओं रूपी मुख्य पार्टधारियों और इनके फॉलोअर्स को नं.वार इशारे देकर सृष्टि रूपी रंगमंच पर भेजने वाला बेहद का डायरैक्टर शिवबाबा है, जो सदा चारों युगों रूपी सीन-सीनरियों अर्थात् पर्दों के पीछे, सृष्टि रूपी घड़ी के दो काँटों के मध्य में दिखाये गये छोटे से पुरुषोत्तम

संगमयुग में गुप्त रहकर निर्देशक या डायरैक्टर का कार्य करता है। यह पुरुषोत्तम संगमयुग ही ऐसा महत्वपूर्ण समय है जहाँ 500 करोड़ पार्टधारियों के 5000 वर्षीय ड्रामा की युगानुरूप रिकॉर्डिंग/शूटिंग नं.वार कराई जाती है। ता.30.5.73 पृ.1 की अ.वा. के मध्य में बाबा ने इस पु.संगमयुग को आत्मा रूपी रिकॉर्ड के भरने का समय बताया है। ●"इस संगमयुग को पुरुषोत्तम युग वा सर्वश्रेष्ठ युग क्यों कहते हो? क्योंकि आत्मा में हर प्रकार के धर्म की, राज्य की, श्रेष्ठ संस्कारों की, श्रेष्ठ सम्बंधों की, श्रेष्ठ गुणों की सर्वश्रेष्ठता अभी रिकॉर्ड के समान भरता जाता है। 84 जन्मों की चढ़ती कला, उतरती कला, दोनों के संस्कार इस समय आत्मा में भरते हो। रिकॉर्ड भरने का समय अभी चल रहा है।"

●"आत्मा में हर जन्म के संस्कारों का रिकाई इस समय भर रहे हो।"(अ.वा.9.5.77पृ.134,135) बाबा ने मुरली में कहा है कि-"संगमयुग का रहस्यमय ड्रामा ही भविष्य (5000 वर्ष) में रिपीट होगा।" ● "कर्मातीत अवस्था हो जावेगी तब लड़ाई शुरू होगी। तब तक रिहर्सल होती रहेगी।" (मु.22.6.70 पृ.3 अंत)

● "जो भी सारी दुनिया की (500 करोड़) आत्मायें हैं उनको पार्ट बजाना है। जैसे नये सिरे शूटिंग होती जाती है; परन्तु यह अनादि शूटिंग हुई पड़ी है।" (मु. 9.9.74 पृ.3 आदि) मुरली में बोला है- "इस (संगमयुगी) ब्राह्मण जन्म में पूर्वकल्प का पार्ट ही इमर्ज होगा।"

**(ii) संगमयुग की आयु-** बाबा ने सामान्य रूप से संगमयुग की आयु 40 वर्ष, 50 वर्ष, 50/60 वर्ष और ज़्यादा से ज़्यादा 100 वर्ष बताई है।

● "इन (संगमयुग) को करके बहुत में बहुत 100 वर्ष दो।" (मु.1.12.72 पृ.2 मध्य) ● "बाप जास्ती समय नहीं रहते हैं। 50 वर्ष नहीं तो करके 100 वर्ष लगते हैं। उत्थल-पाथल पूरी हो फिर राज्य शुरू हो जाते है।" (मु.25.9.71 पृ.1 मध्य) इसमें मूँझने की तो बात ही नहीं। सिर्फ़ प्रसंगानुसार इन भिन्न अंकों का गुह्य राज़ समझना है। ● 100 वर्षीय संगमयुग में से मन-बुद्धि रूपी आत्मा-सुधार से सम्बंधित सूक्ष्म राजधानी स्थापना का कार्य पहले 50/60 वर्षों में पूरा होता है। (मु.24.7.72 एवं 25.7.77 पृ.2 मध्यादि) जबकि सतयुगी सृष्टि के बाल-बच्चों की पैदाइश से लेकर स्थूल स्थापना का कार्य बाद के 40 वर्षों में सम्पन्न होता रहता है। इस तरह संगमयुग की 100 वर्ष आयु भी तर्क संगत है। बाक़ी पतित से पावन मर्यादा पुरुषोत्तम बनने के लिए ज्ञानयज्ञ रचने या ईश्वर द्वारा डायरैक्ट पढ़ाई पढ़ाने का समय मुरलियों में 50/60 वर्ष निर्धारित किया है। ● "पुरुषोत्तम मास, पुरुषोत्तम वर्ष का भी अर्थ नहीं समझते हैं। तुम बच्चे जानते हो यह पु.संगमयुग 50 वर्ष का छोटा है।" (वास्तव में पु.मास और पु.वर्ष इन्हीं 50 वर्षों में प्रत्यक्ष होते हैं)( मु.2.3.74 पृ.2 अंत) ● "इतना 50 वर्ष कोई भी यज्ञ नहीं चलता।.......तुम्हारा यह यज्ञ 50 वर्ष चलता है।" (मु.11.5.73

पृ.2 मध्यांत) ● "बाप आकर 50 वर्ष में पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि बनाते हैं।" (मु.5.6.74 पृ.2 मध्यांत) ● "मैं आता हूँ 40/50 वर्ष। उसमें भी 36 वर्ष पूरे हुए हैं।" (मु.9.4.73 पृ.3 अंत) ● "महासागर और नदियों का मेला जैसे 40/50 वर्ष चलता ही है।" ● "40/50 वर्ष में बाप आकर तुम (ब्राह्मणों) को पढ़ाते हैं।" (मु.7.9.74 पृ.3 मध्यादि) ● "तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40 से 50 वर्ष लगते हैं।" (मु.6.10.74 पृ.2 मध्यांत)

**(iii) सतयुगी आत्माओं के ज्ञान में आने की रिहर्सल- (सन् 1936-1937 से 1976-1977 तक)** प्रथम 40 वर्षों में सिर्फ़ सतयुगी आत्माओं को संदेश देने की शूटिंग होती है अर्थात् ब्रह्मा-सरस्वती की अध्यक्षता में अथवा ब्राह्मणों की 40 वर्षीय संगमयुगी दुनिया में 2 करोड़ मनुष्यात्माओं का ज्ञान में आगमन सन् 36 से 76 तक होता है।

● "जितने देवी-देवताएँ सतयुग-त्रेता के हैं वह सब गुप्त यहाँ बनने हैं।" (मु.5.2.74 पृ.1 अंत) क्योंकि बाबा ने मु.22.3.76 पृ.1 के अंत में कहा है-"सतयुग अंत में वृद्धि होकर 9 लाख से 2 करोड़ हो गये होंगे।" यह कार्य सतयुग में चित्रित राधा-कृष्ण की आत्माओं द्वारा उनके अंतिम 84 वें संगमयुगी शरीरों के नाम-रूप ब्रह्मा-सरस्वती के प्रतिनिधित्व में पूरा हो जाता है। बाबा ने ता.11.6.73 पृ.2 की मुरली के मध्य में कहा भी है "(द्विभुजी) ब्रह्मा 100 वर्ष की आयु में ख़तम हो जाता है।" पुरानी सीढ़ी के चित्र में नीचे लिखे '40 वर्षीय पुरुषोत्तम संगमयुग' की आयु सन् 1976/77 से पूरा होने के साथ ही दो भुजा वाले ब्रह्मा की 100 वर्ष की आयु भी पूरी हो चुकी। सन् 73 के अंत में हुये दिल्ली मेले की मैगज़ीन के अंतिम पृष्ठ पर कुल 1 करोड़ आत्माओं को संदेश देने का उल्लेख है। इसके बाद सन् 76/77 तक लगे मेलों आदि में कुल मिलाकर 2 करोड़ मनुष्यात्माओं ने तो अवश्य ही तहे दिल से बाप का संदेश लेते हुये नं.वार ब्रह्मा+बाप को पहचान लिया है। बाबा ने मुरली में कहा भी है "अगर थोड़ा भी (ब्रह्मा बाप को) पहचान लिया तो सतयुग में क्यों नहीं आवेंगे?" (क्योंकि) ● "ब्रह्मा (बाप) द्वारा हमको सूर्यवंशी पद मिलता है (चंद्रवंशी नहीं) वैसे भी सन् 76 तक 33 करोड़ देवात्माओं को संदेश मिलने की बात किसी तरह भी सिद्ध नहीं होती; क्योंकि सारे भारत की कुल आबादी ही 90/100 करोड़ होगी। जबकि अ.वा.25.5.73 पृ.72 अंत पर साफ़ कहा गया है -"इन साधनों द्वारा अभी तक विश्व की अंश मात्र आत्माओं को ही संदेश दे पाये हो।"

**(iv) त्रेतायुगी आत्माओं को संदेश देने की रिहर्सल-** (सन् 1977-1978 से 1989-1990 तक) जैसे सतयुग में चित्रित राधा-कृष्ण की आत्माएँ अपने अंतिम 84वें संगमयुगी जन्म में ब्रह्मा-सरस्वती के नाम-रूप से सतयुगी 2 करोड़ आत्माओं की शूटिंग कराती हैं, ठीक वैसे ही त्रेतायुग में चित्रित राम-सीता की आत्माएँ अपने अंतिम 84वें संगमयुगी जन्म में शंकर-पार्वती के नाम-रूप से प्रत्यक्ष होकर त्रेतायुगी

(2+8)= 10 करोड़ देवताई आत्माओं को ईश्वरीय संदेश दिलाने का प्रतिनिधित्व करती है। यह कार्य सन् 77-78 से 89-90 तक के 12-13 वर्षों में सम्पन्न होना चाहिए। बाबा ने मुरली में कहा भी है "जितने भी सतयुग-त्रेता में देवताएँ होंगे उतने ब्रह्मा मुखवंशावली यहाँ बनने हैं।"

● "भारत में 33 करोड़ देवताओं की लिमिट है।" (मु.23.3.73 पृ.2 आदि)

●"ब्राह्मण कोई सब सतयुग में नहीं आते। त्रेता अंत (की शूटिंग) तक आवेंगे।" (मु.3.1.75 पृ.3 आदि)

**(v) द्वापरयुगी आत्माओं की रिहर्सल- (सन् 90-91 से 99-2000 तक)**- इसी तरह 10 वर्षों में सन् 90-91 से 99-2000 तक द्वापरयुगी बीज और आधारमूर्त धर्मपिताएँ भी भिन्न नाम-रूप से प्रत्यक्ष होते हैं; क्योंकि राम-कृष्ण की आत्माओं की तरह भिन्न-2 धर्मों के धर्मपिताएँ भी जब तक नं.वार प्रत्यक्ष न हों, तो उनके फॉलोअर्स को ईश्वरीय संदेश कैसे मिल सकता है? अत: सर्वप्रथम तो धर्मपिताएँ प्रजापिता+ब्रह्मा के द्वारा परमात्मा के कनेक्शन में आवें, फिर उनके माध्यम से सारी प्रजा को मुक्ति-जीवनमुक्ति का नं.वार वर्सा प्राप्त हो सकता है। बाबा ने अ.वाणी 30.6.74 पृ.83 के मध्य में कहा भी है "ब्रह्मा का पार्ट स्थापना के कार्य में अंत तक नूँधा हुआ है। .......मनुष्य सृष्टि की सर्ववंशावली रचने का सिर्फ ब्रह्मा के लिए ही गायन है-ग्रेट-2 ग्रैंड फादर।" ●"विश्व की हर प्रकार की आत्माओं के उद्धार होने का गायन भी शास्त्रों में है ना। प्रैक्टिकल में यह सब हुआ ना, तब तो उनकी निशानियाँ हैं। यह सब होगा।" गोले के चित्र में नं.वार धर्मपिताओं के युगानुरूप चित्रण से भी यह बात स्पष्ट हो जाती है। बाबा ने मुरली में यहाँ तक भी कहा है "500 करोड़ को पढ़ाने वाला एक है।" ● "कितने सेन्टर्स हैं? अभी तो अजुन थोड़े ही हैं। इससे भी 1000 गुना ज़्यादा होंगे।" ●"तुम्हारे सेंटर्स लाखों की तादाद में हो जाएँगे।"(मु.28.2.71 पृ.3 मध्यादि) ●"गली-2 में सेन्टर होना है।" (मु.3.10.72 पृ.2 अंत) ●"मुरली छपती है, आगे चल लाखों-करोड़ों की अंदाज़ में छपने लग पड़ेगी।" (मु.22.6.74 पृ.3 अंत)

**(vi) कलियुगी आत्माओं की रिहर्सल- (सन् 2000-01 से 2004-05 तक)** ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में सन् 2000-01 से 2004-05 तक कलियुगी शूटिंग चलती है। कलियुग का अर्थ ही है कलह-क्लेश का युग। अत: ब्राह्मणों की दुनिया में भी जिन आत्माओं के आगे ज्ञान सूर्य प्रत्यक्ष हो चुका है उनकी अवस्था में कलियुगी शूटिंग के प्रभाव के कारण गिरावट होते हुये भी उन आत्माओं में कलह-क्लेश देखने में नहीं आवेगा। कलियुगी शूटिंग में मस्त कलंकीधर का भी पार्ट चलता है, जिसके पीछे निंदा-ग्लानि बरसाने वाले कुत्तों के स्वभाव वाली आत्माएँ पड़ती ज़रूर हैं; लेकिन उसका कुछ बिगाड़ नहीं पाती हैं। ता.26.6.72 पृ.4 अंत की मुरली में बोला भी है- "कलंकीधर पिछाड़ी कुत्ते भौंकते हैं।"

**(vii) संगमयुग के अंतराल की रिहर्सल- (सन् 2004-05 से 2008-09 तक)** - 100 वर्ष के संगमयुग में त्रिमूर्ति की तीनों मूर्तियों में से प्रत्येक का पार्ट लगभग तीस-तैंतीस साल तक चलता है। संगमयुग के आरम्भ में ब्रह्मा का टाइटिल धारण करने वाली आत्मा (दादा लेखराज) के पार्ट की दुनिया में प्रत्यक्षता प्रारम्भ होने के लिए लगभग 14 साल का समय लगा। 1969 में दादा लेखराज के शरीर छोड़ने के पश्चात् दूसरी मूर्ति अर्थात् महादेव शंकर का पार्ट बजाने वाली आत्मा को ब्राह्मण परिवार की स्टेज पर प्रत्यक्ष होने में 7 साल का समय लगा अर्थात् ब्रह्मा की तुलना में लगभग आधा समय। इसी तर्ज़ पर ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में शंकर के 33 वर्ष के पार्ट के पश्चात् तीसरी मूर्ति अर्थात् विष्णु या वैष्णवी देवी का पार्ट बजाने वाली आत्मा को प्रत्यक्ष होने में शंकर की तुलना में आधा अर्थात् लगभग साढ़े तीन वर्ष का समय लग सकता है। कलियुगी शूटिंग के बाद की इस अवधि को संगमयुग का तीसरा अंतराल कहा जा सकता है।

## (2) सतयुगी शूटिंग काल में यज्ञ और यज्ञवत्स 4 अवस्थाओं से पसार होते हैं-

शिवबाबा ने ता.13.6.76 पृ.2 की मुरली अंत में कहा था "हर एक मनुष्य मात्र को, हर चीज़ को (हर धर्म को) सतो, रजो, तमो में आना होता है, नई से पुरानी ज़रूर होती है।......तो कहेंगे न पहले सतोप्रधान, फिर ज़रूर सतो, रजो, तमो तुमको ज्ञान मिला है।" यहाँ स्पष्ट हो जाता है कि सतयुगी शूटिंग काल के 40 वर्षों में सन् 36/37 से 76/77 तक सामूहिक रूप से सारा ही ज्ञान-यज्ञ इन 4 अवस्थाओं से पसार हुआ है। यज्ञ वत्सों की सतयुगी सतोप्रधान पहली अवस्था (1936/37 से 1951/52 तक) कराची में थी, जहाँ एकमात्र सत् परमात्मा शिव का साकार संग सदाकाल के लिए था। 'जैसा संग वैसा ही रंग' चढ़ता है। अत: उस समय सदाकालीन सत् के साकार संग ने यज्ञ वत्सों की सतोप्रधान अवस्था सहज ही बना दी। कहते हैं कि उस भट्ठी में विकारी दुनिया वालों का चेहरा भी देखने को नहीं मिलता था। बाबा ने ता.8.7.74 पृ.2 की मुरली मध्य में कहा भी है "तुम आकर भट्ठी में पड़े, कोई देख न सके, मिल न सके। कोई को देखते ही नहीं थे तो फिर दिल किससे लगावेंगे? (सिवाय सत् बाप के)।" इसके बाद यज्ञ वत्सों को ख़ास भारतवासियों और आम सारी दुनिया के कल्याण के लिए पाकिस्तान(पाक+स्थान) छोड़ना पड़ा। वे माउंट आबू आये, जहाँ सन् 1951/53 से 1964/65 तक यज्ञवत्सों को दूसरी स्टेज (त्रेतायुगी सतोसामान्य) से गुज़रना पड़ा; क्योंकि यहाँ यज्ञवत्सों को समय-2 पर भारतवासियों की सेवा में बाहर भी जाना पड़ा, जिससे सदाकालीन एक सत् बाप के साकार संग का सहजयोग नहीं मिल सका। फिर भी बीच-2 में यदा-कदा सत् बाप के साकार संग का रंग लगते रहने से बाहरी कुसंग का रंग धुलता ही रहा। इस तरह अवस्था नीचे नहीं गिरने पाई, जिससे नम्बरवार सतोसामान्य त्रेतायुगी स्टेज की शूटिंग होती रही।

इसके बाद सन् 1965-66 से 71-72 के बीच, मम्मा-बाबा के शरीर छोड़ने के साथ ही हम ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में द्वापरयुगी रजोप्रधान तीसरी अवस्था की शूटिंग का आरम्भ हो गया; क्योंकि बाप के मुख्य रथ के न रहने पर सत् बाप का प्रैक्टिकल साकार संग निरंतर के लिए समाप्त हो गया। दूसरी ओर नं.वार अधूरे ब्राह्मणों और तमोप्रधान दुनिया वालों के प्रैक्टिकल संग का रंग सदाकाल के लिए पड़ने लगा। जिससे समूचे ब्राह्मण परिवार की द्वापरयुगी रजोप्रधान अवस्था बन गई। इसके बाद सन् 72/73 से मेलों-मलाखड़ों की भरमार के कारण हम ब्राह्मणों की दुनिया में तमोप्रधान कलियुग का प्रवेश हो गया; क्योंकि मेलों में आने वाले ढेर के ढेर तमोप्रधान मनुष्य आत्माओं की गंदी दृष्टि-वृत्ति का लगातार कुसंग होने लगा। इसलिए 4 मई 74 पृ.1 की मुरली अंत में बाबा ने इस दुर्गति का इशारा भी दिया था "अभी (कलियुगी शूटिंग में) तो भक्ति की कितनी धूमधाम हो गई है। मेले-मलाखड़े भी लगते हैं तो मनुष्य जाकर दिल बहला आवें।"

● "मेले-मलाखड़े सब दुर्गति में ले जाने वाले हैं।" (मु.25.11.72 पृ.2 अंत) बाबा ने कहा है- "यहाँ (मधुबन में) है आत्माओं और परमात्मा का (प्रैक्टिकल) मेला। उन मेलों में तो मैले हो पड़ते हैं।" वह है मैला होने के मेले। (मु.17.1.74 पृ.3 मध्य) कहावत भी है **"काजर की कोठरी में कैसोहू सयानो जाय, एक लीक काजर की लागिहै पै लागि है।"**

## (3) संगमयुग में ही ब्रह्मा और ब्राह्मणों का दिन और रात होती है-

इस प्रकार यहाँ हमने देखा कि सतो-रजो आदि 4 युगों की स्टेज से विधिवत पसार होने के कारण हम ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया के शुरुआती 40 वर्षों में ही 4 युगों की शूटिंग के हिसाब से सन् 76 तक पूरे एक कल्प की आवृत्ति हो चुकी है। जिसमें 18 जनवरी, 1969 तक ब्रह्मा तन द्वारा ज्ञान सूर्य शिव का प्रैक्टिकल साकार संग का रंग लगने से सतयुग-त्रेता रूपी ज्ञान-प्रकाश वाले दिन का आवर्तन हुआ। इसके बाद ब्रह्मा बाबा का टेम्पररी रथ न रहने के कारण ज्ञान-सूर्य परमात्मा शिव भी वाणी से परे वानप्रस्थी हो गया अर्थात् ज्ञानसूर्य के छिपने के कारण हम ब्राह्मणों की दुनिया में ब्रह्मा की अज्ञान अंधेरी रात आ गई। इस संगमयुगी मायावी ब्रह्मा की रात में ब्र.कु.गुलज़ार मोहिनी के द्वारा ज्ञान-चंद्रमा के साथ-2 ज्ञान-सितारों की झिलमिलाहट तो अवश्य ही चारों ओर देखने में आती है; परंतु ज्ञानसूर्य बाप तो गुप्त ही रहता है। वास्तव में सतयुग से कलियुग तक (5000 वर्षों में) न तो ब्रह्मा होता है और न ही ब्राह्मण। अत: उन युगों में तो ब्रह्मा या ब्राह्मणों की रात या दिन होने का सवाल ही नहीं होता। वास्तव में शास्त्र-वर्णित ब्रह्मा का दिन और रात इसी संगमयुगी समय का गायन है। इसलिए ता.10.10.73 पृ.1 की मु. आदि में बाबा ने कहा भी है "प्रजापिता ब्रह्मा मुखवंशावली घोर अंधेरे में थे। तो ज़रूर ब्रह्मा भी घोर अंधेरे में होगा। ब्रह्मा

मुखवंशावली सोझरे में हैं तो ब्रह्मा भी सोझरे में होंगे। गाते तो बहुत हैं। बहुत भटकते हैं दूर-2 (आबू जैसे) पहाड़ों पर, ठिकानों, मंदिरों में, मस्जिदों में। (परंतु समझते कुछ नहीं)"

● "ब्रह्मा का अथवा तुम ब्राह्मणों का ही दिन और रात गाया जाता है।...... कलियुग में वा सतयुग में यह ज्ञान किसको भी होता नहीं। इसलिए गाया जाता है ब्रह्मा का दिन, ब्रहमा की रात।" (मु.10.5.76 पृ.1 मध्य)

ब्रह्मामुखवंशावली के लिए ही यह दिन-रात होती है और संगम में ही दिन-रात होते हैं। "ब्रह्मा और ब्र.कु.कुमारियों के लिए यह बेहद की दिन और रात है।" (मु.29.6.77 पृ.2 आदि)

● "सद्गुरू और गुरू में भी रात-दिन का फ़र्क़ है। वह (ज्ञानसूर्य सद्गुरू शिव) ब्रह्मा का दिन कर देते, वह (देहाभिमानी गुरू अज्ञान अंधेरी) रात कर देते।" (मु.27.2.74 पृ.1 मध्य) "कहते हैं प्रजापिता ब्रह्मा का दिन फिर रात, तो प्रजा और ब्रह्मा ज़रूर दोनों ही इकट्ठे होंगे ना। तुम समझते हो हम ब्राह्मण ही आधा कल्प (सन् 68 तक मम्मा-बाबा के ज़माने में) सुख भोगते हैं। फिर (बाद में) आधा कल्प (देहधारी गुरुओं से) दुःख। यह बुद्धि से समझने की बात है।" (मु.21.11.74 पृ.2 अंत)

## (4) सन् 76 से शंकर द्वारा हम ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया का विनाश या विघटन का कार्य आरम्भ हो चुका है-

ब्रह्मा द्वारा स्थापना, फिर शंकर द्वारा विनाश। सन् 76 में ब्रह्मा की 100 वर्षीय आयु पूरी होते ही शंकर का तीसरा ज्ञान नेत्र खुलने से प्रेरणा पाकर एक ओर ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया के आसुरी सम्प्रदाय में खलबली मचने से हाहाकार की शुरुआत होती है। जबकि दूसरी ओर दिल्ली में यमुना के कंठे पर ज्ञानी और योगी तू आत्मा अर्थात् सच्चे ब्राह्मण बच्चों की 'तीरी पर बहिश्त' माना बुद्धि रूपी हथेली पर स्वर्ग-स्थापना का अटल निश्चय बैठने से जय-जयकार के नारों की आवाज़ बुलन्द होती जाती है। सन् 66 में कराई गई 10 वर्षीय घोषणा इसी सूक्ष्म संगमयुगी ब्राह्मणों की दुनिया के लिए थी, बाहरी दुनिया के लिए नहीं; क्योंकि बेहद का बाप अपने बेहद के बच्चों से सदा बेहद की बातें करते हैं। उन बातों को धन-पद-मान-मर्तबे वाली हद की दुनिया में बुद्धि लगाने वाले बच्चे नहीं समझ सकते। दूसरी बात यह कि बाबा हमेशा मुरलियों में यही कहते रहे हैं कि विनाश ज्वाला इस रुद्रज्ञान यज्ञकुण्ड से प्रज्वलित हुई। जिससे स्पष्ट होता है कि यज्ञकुण्ड से निकलने वाली विनाश ज्वाला सबसे पहले तो यज्ञकुण्ड के आस-पास आस्तीन का साँप बनकर बैठने वाले कच्चे हाफकास्ट ब्राह्मणों को जलाकर ख़ाक कर डालेगी; क्योंकि बाबा ने नारा भी दिया है "चैरिटी बिगंस एट होम" अर्थात् कल्याणकारी विनाश की शुरुआत भी घर यानी ब्राह्मण परिवार से शुरू

होनी चाहिए। 'पहले घर का सुधार फिर दुनिया का सुधार' हो सकता है। तो सबसे पहले ब्राह्मण परिवार के बगुला पुरुषार्थियों रूपी कचड़े में महावीर (शंकर) की विकारों रूपी पूँछ से धुआँधार आग लगाई जाना स्वाभाविक ही है। तीसरे नेत्र से प्रज्वलित हुई ज्ञान-अग्नि की इस विनाशज्वाला से सच्चे सोने के समान परिपक्व धारणा वाले ब्राह्मणों की अवस्था में कोई गिरावट नहीं आ सकती। उनका पुरुषार्थ तो और ही चमकता और निखरता जावेगा।

ब्राह्मणों की तमोप्रधान बनी इस सूक्ष्म संगमयुगी दुनिया में सन् 76 से होने वाले विनाश की प्रामाणिकता बाबा की मुरलियों में समय प्रति समय दिये गए महावाक्यों से और भी अधिक साबित हो जाती है। बाबा ने कहा था "10 वर्ष (की घोषणा) से 9 वर्ष, 9 वर्ष से अब 2 वर्ष बाकी रहे हैं। ......अभी कलियुग (के शूटिंग) का अंत आकर हुआ है।" (मु.4.2.74 पृ.2 मध्य)

मुरली में कहा है-"जो जास्ती (ज्ञान) धनवान है, वे 3/4 वर्ष मुश्किल से चलेंगे। (क्योंकि बाप की प्रत्यक्षता वर्ष सन् 1976 में ज्ञानसूर्य के प्रत्यक्ष होने से (बेसिक) ज्ञान की प्रकाशमणि दादी तथा दादा-दीदी रूपी चाँद-सितारों का प्रभाव फीका हो जाता है)

● "एक दिन ऐसा भी आवेगा जो (ब्राह्मणों की) दुनिया बहुत खाली हो जावेगी। सिर्फ़ भारत ही रहेगा। ......2/4 वर्ष में सिर्फ़ भारत (अर्थात् ज्ञानधन से भरतू 108 बीजरूप आत्माओं का समूह) ही रहेगा।" (मु.14.8.74 पृ.3 अंत)

तात्पर्य है कि सन् 78 तक बाक़ी सब अज्ञानी मुर्दे बन पड़ेंगे जिन्हें बाबा की किसी बात पर अटल निश्चय नहीं रहेगा। ● "अब एक/डेढ़ वर्ष में हम ही थोड़े बाक़ी होंगे और इतने सब (संगमयुगी मत-मतांतरों के) धर्मखण्ड आदि नहीं होंगे, हम ही विश्व के मालिक होंगे।" (मु.10.7.74 पृ.1 अंत) (बाक़ी सबका विश्व विजय का निश्चय रूपी फाउंडेशन उखड़ जावेगा) ● "बाक़ी (विनाश में) 2 वर्ष हैं। ऐसे मत समझना 3 वर्ष हो जावेंगे। 1 वर्ष होगा; परंतु 3 नहीं होंगे।"(मु.9.11.74 पृ.3 मध्य)

इतने दृढ़ निश्चय से कहे गये ईश्वरीय महावाक्यों का सही अर्थ न जानने के कारण बाप की वाणी को झूठा साबित करके बाप का नाम बदनाम करने वाले ऐसे ही बगुला पुरुषार्थियों के लिए बाबा ने ता. 25.10.69 की अव्यक्तवाणी में दृढ़ता से कहा है- "( सृष्टि का फाइनल विनाश 6 वर्ष में) विनाश कब होना है? ......जो 7 वर्ष कहते तो पद भी कम हो पड़ेगा।"

**ओमशान्ति। ओमक्रान्ति।**

# नगाड़ा नं.8

# जन्माष्टमी बनाम स्वतंत्रता दिवस

# संगमयुगी राधा-कृष्ण का पार्ट प्रत्यक्ष होने की यादगार "जन्माष्टमी" है।

## (1) सारी महिमा संगमयुगी राधा-कृष्ण की है-

शिवबाबा ने कहा है कि शास्त्रों में सतयुग-त्रेता की कोई हिस्ट्री नहीं मिलती अर्थात् राधा-कृष्ण या त्रेतायुगी राम-सीता का शास्त्रों में कोई वर्णन नहीं है। वास्तव में शास्त्रों में की गई शिवबाबा की सारी महिमा, (राधा) कृष्ण और राम (सीता) की आत्माओं के द्वारा संगमयुग में बजाये गये सम्पूर्ण अवस्था के इस एकमात्र मिले जुले गुप्त पार्ट की यादगार है। एक ही शंकर के शरीर रूपी रथ में डबल इंजन रूपी बापदादा (शिव और ब्रह्मा) के इस दिव्य प्रवेश का गुह्य से गुह्य राज़ न जानने के कारण भक्तिमार्ग में शिव-राम-कृष्ण-ब्रह्मा-विष्णु-शंकर-नारायण आदि सभी को मिलाकर एक भगवान का रूप समझ लिया है। बाबा ने ता.19.8.74 पृ.2 की मु. के अंत में साफ कहा है "शास्त्र आदि जो पढ़ते हैं वह जैसे ढेढरों मिसल ट्रां-ट्रां करते, अर्थ कुछ नहीं समझते।" कहते हैं-"अच्युतं-केशवं (राम-नारायणं, कृष्ण-दामोदरम् वासुदेवम् हरिम्। श्रीधरं माधवं-गोपिका वल्लभं जानकी नायकम्, रामचंद्र भजे) अब राम कहाँ का, नारायण कहाँ का!" बाबा ने ता. 8.7.61 की मुरली में कहा भी है- "गीता, भागवत, रामायण, चंद्रकांत वेदान्त आदि सब इस समय के हैं।" ● "गीता, भागवत, महाभारत आदि में जो भी लिखा हुआ है उसकी अभी भेंट कर सकते हो।" (मु.19.4.73 पृ.1 आदि) ● "महिमा भी वह होनी चाहिए जो आपके सम्पूर्ण स्वरूप की है।" (अ.वा.20.1.74 पृ.2 आदि) स्पष्ट है कि ब्रह्मा-सरस्वती का रूप धारण करने वाली राधा-कृष्ण की आत्माओं का सम्पूर्ण स्वरूप सिंध या हैदराबाद में नहीं बना था; क्योंकि वह तो उनके आत्मिक पुरुषार्थ की शुरूआत थी। वास्तव में उनकी आत्माएँ स्थूल शरीर त्यागने के बाद जब बीजरूप सम्पूर्ण अवस्था धारण करके किन्हीं श्रेष्ठ पुरुषार्थी बच्चों (शंकर-पार्वती) में प्रवेशता का (बेहद) पार्ट बजाती हैं तब ही उनकी महिमा होती है।

## (2) संगमयुगी राधा-कृष्ण और सतयुगी राधाकृष्ण-

संगमयुगी राधा-कृष्ण का पार्ट सतयुगी राधा-कृष्ण के पार्ट से निश्चित रूप से

अलग है। इस बात का पक्का प्रमाण 30×40 इंच वाला सीढ़ी का पुराना चित्र है। जहाँ ऊपर के दायें कोने में सुप्रीम सतयुगी पुरुषोत्तम संगमयुग दिखाया गया है। यहीं प्रैक्टिकली पुरुषों में उत्तम बनने वाले संगमयुगी कृष्ण की प्रत्यक्षता होती है। संगमयुग का यह अंतिम श्रेष्ठ भाग सीढ़ी के चित्र में नीचे दिखाये गये 40 वर्षीय संगमयुग के बाद सन् 77 से शुरू होता है। यहाँ राधा-कृष्ण को नौजवान अवस्था में दिखाया गया है। जबकि सतयुग की सीढ़ियों के अंदर शैशवावस्था वाले सतयुगी राधा-कृष्ण का स्पष्ट चित्रांकन है, जिससे यह भली-भांति साबित हो जाता है कि संगमयुग और सतयुग में प्रत्यक्षता रूपी जन्म लेने वाले राधा-कृष्ण का पार्ट अलग-2 है; क्योंकि बाबा ने ता.13.10.74 पृ.1 की मु. मध्यांत में कहा भी है कि "लॉर्ड का टाइटिल वास्तव में बड़े आदमी को मिलता है। वो तो सबको देते रहते हैं। इण्डियन भी बड़े आदमी जो हैं उनको लॉर्ड कहते हैं।" संगमयुगी कृष्ण को ही विलायत वाले लॉर्ड कृष्ण के रूप में पहचानते हैं। सतयुगी कृष्ण को तो वे लोग नहीं पहचानेंगे; क्योंकि सतयुग में तो विलायती लोग आवेंगे ही नहीं।

## (3) संगमयुग में सूर्यवंश-चंद्रवंश दोनों होते हैं, सतयुग में नहीं-

यह संगमयुगी कृष्ण सूर्यवंशी घराने में पलता है। जबकि संगमयुगी राधा का पालन-पोषण चंद्रवंशी घराने में होता है; क्योंकि एकमात्र ज्ञानसूर्य शिवबाबा की मुरलियों के डायरैक्शन पर चलने वाले निराधार बच्चे ही ज्ञानसूर्यवंशी हैं। बाकी ज्ञानचंद्रमा ब्रह्मा द्वारा निमित्त बनाई गई दीदी, दादियों आदि देहधारियों के अधीन होकर उनके मनमाने डायरैक्शन पर चलने के लिए मजबूर होने वाले चंद्रवंशी कहे जाते हैं। आखिर तो सूर्यवंश और चंद्रवंश की शुरुआत करने के निमित्त कोई तो प्रैक्टिकली गर्म और ठण्डा पार्ट बजाने वाले चैतन्य ज्ञानसूर्य और ज्ञानचंद्रमा होंगे ना। शिवबाबा ही ब्रह्मा द्वारा ज्ञानचंद्रमा और त्रिनेत्री शंकर द्वारा ज्ञानसूर्य के रूप में प्रत्यक्ष होते हैं। राम के इसी संगमयुगी तीक्ष्ण पार्ट के कारण आज तक भी भक्तिमार्ग के राम को सूर्यवंशी माना जाता है। सम्पूर्ण बीजरूप बने ब्रह्मा अर्थात् कृष्ण की आत्मा राम के इस संगमयुगी शरीरधारी स्वाधीन शंकर में प्रवेश करती है। जबकि सरस्वती की सम्पूर्ण बनी आत्मा दीदी-दादियों की पराधीनता में पलने वाली पार्वती (सीता) में प्रवेश करती है। इसलिए ता. 10.5.73 पृ.3 की मुरली के मध्यादि में बाबा ने कहा है "(संगमयुगी) राधे-कृष्ण तो प्रिंस-प्रिंसेज थे। दोनों अपनी-2 राजधानी में रहते थे। ज़रूर स्वयंवर होगा (जैसा कि सीढ़ी के चित्र में ऊपर विजयमाला लिये हुये राधा को कृष्ण के सामने दिखाया भी गया है)। राधे-कृष्ण का (अपना) राज्य तो है नहीं। सूर्यवंशी और चंद्रवंशी घराना है। चंद्रवंशी में तो सूर्यवंशी कृष्ण आ न सके। (क्योंकि ऊँच कुल का है) तो बड़ी मूँझ हो गई है।" (कि दोनों पार्टियों को मिलाकर एक वंश कैसे बनाया जाय; क्योंकि सतयुग में तो सिर्फ सूर्यवंश ही होगा। चंद्रवंश होगा ही नहीं)।

## (4) राधा-कृष्ण की ज्ञानगर्भावस्था कब और कैसे-

सन् 65 से 69 के बीच साकार शरीर से कर्मातीत हुई ब्रह्मा-सरस्वती की सम्पूर्ण बनी आत्माएँ ही समय प्रति समय राम-सीता के संगमयुगी शरीर में प्रवेश करके संगमयुगी राधा-कृष्ण का पार्ट बजाती हैं। पहले-2 तो सन् 88 से 98 तक 10 वर्षों में बुद्धि रूपी क्षेत्र में प्रवेश करके बेहद की ज्ञान गर्भावस्था का गुप्त पार्ट बजाती है। इस अवस्था की यादगार शास्त्रों में पीपल के पत्ते पर गर्भमहल में चित्रित कृष्ण का चित्र है। सीता के अत्यंत जीर्ण-शीर्ण संगमयुगी तन-मन रूपी नैया की यादगार पीपल का पत्ता है, जो मायावी तूफ़ानों का मुक़ाबला करते हुये मझधार में पड़ी नौका की तरह डोलने लगता है; परंतु कर्मातीत बनी मम्मा-बाबा अर्थात् राधा-कृष्ण की सशक्त आत्मा की प्रवेशता के कारण पुरुषार्थी जीवन की नैया बड़ी भयंकर गति से डोलती तो है; परंतु डूबती नहीं। यही कारण है कि उन संगमयुगी कृष्ण को मन-बुद्धि रूपी अंगुष्ठाकार वाली आत्मा का अटल निश्चय रूपी अँगूठा चूसते हुये स्वचिंतन की निश्चिंत स्टेज में दिखाया गया है। बाबा ने भी ता.30.9.74 पृ.3 की मु. के आदि में कहा है "पीपल के पत्ते पर कृष्ण का बड़ा अच्छा चित्र दिखलाते हैं। वह है (ज्ञान) गर्भ महल, जहाँ आराम से बैठा रहता है। (संकल्पों की) सज़ा आदि तो कुछ भी नहीं खाते।" ● "अब (ज्ञान) समुद्र में पीपल के पत्ते पर कोई ऐसा होता नहीं है। यह दिखाया है कि कैसे आराम से रहते हैं। फिर समय होता है तो जन्म लेते हैं, जैसे कि बिजली चमक जाती है।"(मु.10.10.74 पृ.3 अंत)

## (5) संगमयुगी कृष्ण-जन्माष्टमी कब, कहाँ और कैसे

(i) **जन्म कब :-** पुरुषोत्तम संगमयुग में द्वापरयुगी शूटिंग के अंत में संगमयुगी कृष्ण की जन्म रूपी प्रत्यक्षता शंकर-पार्वती के माध्यम से सन् 98 के आसपास होनी चाहिए। शिवबाबा ने कहा है- "कृष्ण 20/22 वर्ष का होता है तब उसे गद्दी मिलती है।"

● "ल.ना. को बड़ा होने में 20/25 वर्ष लगे ना।" (मु.2.5.71 पृ.2 मध्यांत) नगाड़ा नं.7 में दी गई सृष्टि चक्र की व्याख्या के अनुसार सन् 89-90 के बाद द्वापरयुग की शूटिंग शुरू हो जाती है और इसी समय से संगमयुगी ज्ञान गर्भस्थ कृष्ण की जयंती (जय+अंती) अर्थात् अंतिम जयजयकार रूपी प्रत्यक्षता ज़ोर-शोर से शुरू होती है। अत: शास्त्रकारों ने कृष्ण को द्वापरयुग में ठोक दिया है। ता.9.3.76 पृ.3 की मुरली के मध्य में बाबा ने भी कहा है "किसको भी पता नहीं है (कि) कृष्ण फिर द्वापर में कहाँ से आवेगा।"

● "जयंती भी कृष्ण की मनाते हैं। ल.ना. की क्यों नहीं? (शूटिंग का) ज्ञान न होने के कारण कृष्ण को फिर द्वापर में ले गये हैं।" (मु.2.3.74 पृ.3 मध्यांत)

● "द्वापर में कृष्ण के साथ कंस, जरासिंधी आदि बैठ दिखाये हैं। वास्तव में

इस (तामसी शूटिंग) समय सब हैं राक्षस सम्प्रदाय।" (मु.10.10.73 पृ.3 मध्यांत)

**(ii) जन्म कहाँ-** यमुना मैया के कंठे पर मथुरा नगरी में कंस की जेल के अंदर कृष्ण का जन्म दिखाते हैं। डायरैक्ट ज्ञानसूर्य (यमराज) से अलौकिक जन्म लेने वाली को यमुना नदी कहा गया है। जिसमें रमण करने वाले कालिया नाग के विष से विषाक्त हुई यमुना नदी को विषय-वैतरणी नदी मान लिया गया है। मथ+उर=मथुरा शब्द भी अश्लीलता का वाचक है। जहाँ कामाग्नि से काले मुँह वाले कृष्ण ने जन्म लेकर अर्थात् संसार में प्रत्यक्ष होकर कन्याओं को कोसने वाले कंस की जेल का परित्याग करते हुये, विषय वैतरणी नदी को कल्प पूर्व भी पार किया था और अब भी करेगा। मुरली में इसी संगमयुगी राम+कृष्ण और शिव के मिले-जुले कालेपन के पार्ट का ज़िक्र करते हुये कहा है "कृष्ण को तक्षक सर्प ने डसा। राम को किसने डसा? (इसी कामरूपी सर्प ने)। शिवलिंग (शरीर रूपी चिह्न) भी कोई काला, कोई सफेद बनाते हैं।" 'कृष्णपुरी और कंसपुरी।' दिखलाते हैं कृष्ण को (विषय वैतरणी) उस पार ले गये। है इस संगम की बात। (सतयुगी) कृष्ण को उस पार नहीं ले गये। यह तो बेहद (के संगमयुगी कृष्ण) की बात है। अभी हम उस पार जा रहे हैं ना।" (मु.17.11.72 पृ.3 आदि)

**(iii) जन्म कैसे-** सतयुग में बनने वाले अंतिम 7 नारायणों के नाम-रूप सहित पार्ट खुल जाने के बाद अर्थात् उनकी अलौकिक जन्म रूपी प्रत्यक्षता होने के बाद ही आठवें नं. में संगमयुगी कृष्ण की जन्म रूपी प्रत्यक्षता होती है। इसलिए भक्तिमार्ग में आज भी ऐसे संगमयुगी घटनाक्रम की यादगार स्वरूप 'कृष्ण+जन्म+अष्टमी' मनाई जाती है। बाबा ने मु.15.2.74 पृ.1 के अंत में कहा है "कृष्ण जन्माष्टमी मनाते हैं। बच्चा तो माता के (गुप्त ज्ञान) गर्भ से ही निकला। फिर दिखाते हैं उनको (निराकार बने राम की बुद्धिरूपी) टोकरी में ले जाते हैं। अब कृष्ण तो वर्ल्ड का प्रिंस। उनको फिर डर काहे का? वहाँ (सतयुग में) कंस आदि कहाँ से आये? ......(बातें संगमयुग की हैं) अब तुमको (सारी बातें) अच्छी रीति समझाना चाहिए।" (ताकि सबकी पोलपट्टी खुल जाय) ● "देवकी को 8वाँ नं. श्रीकृष्ण बच्चा पैदा हुआ। अब (सतयुग में) आठवाँ नं. कृष्ण जन्म लेगा।......परंतु सतयुग में 8 बच्चे तो होते नहीं हैं।......फिर दिखलाते हैं उनका बाप (शिवराम मिश्र) उनको नदी से पार ले जाता था।" (मु.18.8.72 पृ.2 मध्यादि, 3 अंत)

## (6) संगमयुगी बालकृष्ण की लीलाएँ-

**(i) कलंकीधर कृष्ण-** मटकी फोड़ने, माँ को सताने, मक्खन चुराने या गोपियों को भगाने आदि के ये सारे कलंक इसी संगमयुगी कृष्ण के अलौकिक पार्ट की यादगार है। बाबा ने मुरली में कहा है "ब्रह्मा या कृष्ण की बचपन (अर्थात् शुरूआत) में ही ग्लानि होती है।" तात्पर्य यह है कि जैसे यज्ञ के आदि में ब्रह्मा की ग्लानि सिंध में हुई, वैसे अंत में पहले-2 संगमयुगी कृष्ण की भी ग्लानि होना अवश्यम्भावी है; क्योंकि जो

आदि में हुआ सो अंत में ज़रूर होना है। (मु.19.10.77 पृ.3) अत: बाबा ने मुरली में कहा है- "कृष्ण की आत्मा पर (सन् 76/98 के आस-पास तमोप्रधान) कलियुग (की शूटिंग) में कलंक लगता है और उन्होंने सतयुग में लगाया है।" वास्तव में सतयुग में तो कलंक लगाने की बात ही नहीं। यह तो सतयुगी शूटिंग के अंत में तमोप्रधान बने हम सब भारतवासी भक्तों की ही करतूत है। इसलिए शिवबाबा ने अव्वल नं. भगत (सो ठगत) बनने वाले कृष्ण की पोलपट्टी खोलते हुये मुरली में कह दिया है "जब कृष्ण साँवरे बनते हैं तो उन्हें कलंक भी लगते हैं।" (जिसकी यादगार है कलंकी अवतार)

**(ii) मटकी फोड़ना-** इसी तरह ता.23.8.74 पृ.3 के आदि की मुरली के अनुसार स्थूल "मटके फोड़ना, यह करना, यह सब कृष्ण के लिए झूठ बोलते हैं"; क्योंकि बाबा ने कहा है "सूक्ष्म बात का ही यादगार स्थूल रूप में होता है।" (अ.वा. ता.11.2.75 पृ.68 आदि) अत: सतयुगी स्थूल बच्चे के रूप में जन्म लेने वाले कृष्ण पर यह बातें लागू नहीं होती। यह सब तो बुद्धि से समझने योग्य संगमयुगी सूक्ष्म पार्ट की यादगारें हैं। वास्तव में तो ग्वाल बालों सहित कृष्ण की आत्मा गोपियों की ज्ञान-मटकी का भंडाफोड़ करने का प्रैक्टिकल पार्ट वर्तमान समय बजा रही है, जिससे सावधान रहने का नकली डायरैक्शन देहधारी गुरुओं द्वारा ता. 5.1.77 और 17.7.79 जैसी कई मुरलियों में दिया गया है।

**(iii) माँ को तंग करना-** यज्ञ में निमित्त बनी माताओं को तंग और अशांत करने की बात भी इसी संगमयुगी कृष्ण पर लागू होती है, सतयुगी कृष्ण पर नहीं। इसलिए बाबा ने मु.17.5.73 पृ.4 के आदि में कहा है "(निमित्त बने बच्चे) कहते हैं- बाबा, बच्चे बहुत अशांत करते हैं। स्वर्ग में कृष्ण थोड़े ही माँ-बाप को अशांत करेगा। शास्त्र में (यादगार) लिखा है (यज्ञ) माँ को तंग किया। उनको (नित नये-2 डायरैक्शन रूपी छोटी-2 रस्सियों से) बांधा गया। ऐसा हो नहीं सकता। स्वर्ग में कोई किसको (तंग नहीं करते), जानवर भी तंग नहीं करते तो मनुष्य कैसे करेंगे!" अत: यह बात भी वर्तमान संगमयुगी कृष्ण की यादगार है।

**(iv) मक्खन चुराना-** इसी तरह बचपन में, घरों में घुस-घुस कर, गोपियों के स्वर्ग में बनने वाले अच्छे-2 वारिसदार रूपी मक्खन के गोलों अर्थात् जिज्ञासुओं के दृढ़ निश्चयी दिलों को चुरा कर अपना बनाने की बात को मक्खन चोरी की लीला का नाम दे दिया गया है। इस कार्य में माताएँ और गोप, संगमयुगी कृष्ण के बहुत सहयोगी बनते हैं; क्योंकि वे जिज्ञासुओं रूपी शिकार को फँसाकर ज्ञान सुनाने के लिए कृष्ण के मुख के सम्मुख लाकर डाल देते हैं। अत: बाबा ने मु.25.4.77 पृ.2 के मध्य में कहा है "माताएँ श्रीकृष्ण को मुख में मक्खन देती हैं।"

● "विश्व के मालिकपने का मक्खन है।" (मु.6.8.78 पृ.2 मध्य) वास्तव में 108 विजयीवत्स विश्व के मालिक बनते हैं, जिनके घरों में घुसकर यह संगमयुगी कृष्ण ही तो ज्ञान सुनाकर उनके दिलों को चुरा लेता है, जिसकी यादगार दिलवाला मंदिर है।

**(v) गोपियों को भगाना-** इस प्रकार जिनके दिल चुरा लिये जाते हैं, उनकी मन-बुद्धि स्वरूप आत्मा रूपी गोपियाँ तो स्वत: ही पीछे-2 भागने लगती हैं। यज्ञ के शुरू में इस हद की दुनिया के अंदर यह गोपियों को भगाने वाली हद की भागवत कथा हुई थी और अब 'आदि सो अंत' के नियम प्रमाण इस ब्राह्मणों की संगमयुगी बेहद की दुनिया में फिर से बेहद भागवत कथा की हूबहू पुनरावृत्ति होती है। बेहद की भागवत तो इसलिए है कि पहले तो सिर्फ 300/400 की ही स्थूल भागवत हुई थी; परंतु अब अंत में तो पूरे 16108 आत्मा रूपी गोपियों की नं.वार सूक्ष्म भागवत होकर ही रहेगी। वरना भक्तिमार्ग के भागवत जैसे शास्त्रों में गायन कैसे होगा?

## (7) सांवरे कृष्ण का ज्ञान-डांस-

संगमयुग में ही कृष्ण साँवरा और फिर बाद में गोरा बनता है अर्थात् विकारी और फिर निर्विकारी बनता है। इस प्रकार श्याम-सुंदर का गायन भी संगमयुगी कृष्ण के परस्पर विरोधी पार्ट का गायन है। सतयुगी कृष्ण का गायन नहीं है; क्योंकि राम के जिस संगमयुगी तन में सम्पूर्ण ब्रह्मा अर्थात् कृष्ण की आत्मा प्रवेश करके पार्ट बजाती है, वह तन पहले तो भ्रष्टाचारी और विकारी कामी काँटे के समान काला ही होता है। फिर बाद में योगबल से जब निर्विकारी कंचन काया बनती है तब गोरा कहा जाता है। ज़रूर इस महाकाले कृष्ण ने महाविकारी कालेपन की दयनीय अवस्था में रहते हुये भी निर्विकारी अर्थात् गोरा बनने का श्रेष्ठ पुरुषार्थ किया है। अत: आज भी काले अथवा साँवरे कृष्ण का गायन अथवा चरित्र-चित्रण ज़्यादा है। ता.21.7.72 पृ.2 आदि की मुरली में बाबा ने कहा है "राम को कब झुलाते नहीं हैं। कृष्ण को कितना (गोप-गोपीजन ज्ञान झूले में) झुलाते हैं। उनके लिए ही कहते हैं कृष्ण साँवरा (अर्थात् विकारी) और कृष्ण गोरा। (ज़रूर ज्ञान झूला झुलाने वाले को गोरा कहेंगे) ● "झूले राजाओं के पास भी अधिक होते हैं। गुजरात में भी इसलिए वारिस ज़्यादा हैं; (क्योंकि यहाँ इसी संगमयुगी कृष्ण को झुलाने की यादगार स्वरूप आज भी घर-2 में झूले पड़े हुए हैं)। ●"दिखाते हैं (गुजराती) गोप-गोपियों ने कृष्ण को (ज्ञान) डांस कराया (अर्थात् खूब नाच नचाया)। यह बात इस समय की है।" (मु.6.4.78 पृ.3 के मध्य में)। बाबा ने कहा है-"पहला नं. बच्चू, उनको द्वापर में ठोंक दिया है। (काँटों की जंगली दुनिया में घूमने वाला) भील बना दिया है। नाचू बना दिया है।" (ताकि 108 विजयी वत्सों के घर-2 में जाकर ज्ञान का नंगा नाच नाचता फिरे) मु.17.11.77 पृ.2 के अंत में। संगमयुगी कृष्ण के इसी ज्ञान-डांस की यादगार में आज भी उन्हें 'नटवर' या 'नटेश्वर' की उपाधि दी जाती है। चूँकि संगमयुगी कृष्ण और नटराज शंकर एक ही व्यक्तित्व के दो नाम हैं। अत: दोनों नामों को भक्तिमार्ग में ज्ञान-डांस की वरीयता प्रदान की गई है। कृष्ण का ज्ञान-डांस महाभारी महाभारत युद्ध का महाविनाश कराता है। जबकि शंकर का प्रलयंकारी तांडव नृत्य तो और भी अधिक प्रसिद्ध है।

## (8) घोड़ागाड़ी चलाने वाला कोचमैन कृष्ण-

महाभारत युद्ध में कृष्ण को 4 श्वेत अश्वों वाली घोड़ागाड़ी का कोचमैन बना दिया है जिसका वास्तविक रहस्य इस प्रकार है कि देवता, इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चियन- इन चार प्रमुख धर्मों की मूल बीजरूप आत्मा रूपी अश्व क्रमश: राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न हैं, जो महाविनाश के समय चारों दिशाओं में ज्ञान, योग के अस्त्र-शस्त्रों से दिग्विजय प्राप्त करती हैं। शास्त्रों में इस प्रक्रिया को 'अश्वमेध अविनाशी रुद्र ज्ञानयज्ञ' नाम दिया गया है। ब्रह्मा की आत्मा ही रुद्रावतार 'शंकर' नाम-रूपधारी राम के संगमयुगी शरीर रूपी घोड़ागाड़ी में प्रवेश करके इन चारों ही सच्चे और साफ मन-बुद्धि वाले आत्मा रूपी सफेद अश्वों को नियंत्रित करती है। इसलिए बाबा ने भी 6.10.73 पृ.2 की मु. के मध्य में कहा है- "सुनाते क्या हैं? यही कृष्ण भगवानुवाच्य। घोड़ेगाड़ी आदि दिखाते हैं। सो भी कृष्ण को कोचमैन बना दिया है। ऐसे तो गीता (रूपी मुरली) नहीं पढ़ी जाती।" यह तो एक रूपक है जिसका अर्थ है कृष्ण की सम्पूर्ण बनी आत्मा किसी ऐसे शरीर रूपी गाड़ी में बैठकर मुरलियों रूपी सच्ची गीता पढ़ती या व्याख्या करके सुनाती है जिससे देहधारी आत्मा (राम) के अलावा तीन और भी आत्मा रूपी अश्वों का सम्पर्क-सम्बंध प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से बना ही रहता है। कृष्ण की आत्मा ब्रह्मा बाबा ने उन्हीं चार प्रमुख भुजाओं रूपी सहयोगी की सहायता से यज्ञ के आदि में भी सिंध में यह महाभारत लड़ाई लड़ी थी। जिसकी यादगार शिवबाबा ने बंगाल में 4 घोड़ों की गाड़ी के फैशन रूप में इस प्रकार बताई है "कृष्ण को चार घोड़े वाली गाड़ी पर दिखाते हैं। आगे बंगाल में भी 4 घोड़े वाली गाड़ी का फैशन था। राजाएँ लोग भी उनमें चढ़ते थे।" (मु.1.11.73 पृ.3 का मध्यांत) यहाँ खास बंगाल में 4 घोड़ों की गाड़ी का फैशन इसलिए बताया गया कि राम की आत्मा पूर्वजन्म में प्रजापिता थी, जिसका शरीर रूपी रथ बंगाली रहा होगा। "वहाँ (त्रेता में) राम को 4 भाई तो होते नहीं (वास्तविक बात संगमयुग की है) (मु.29.9.77 पृ.1 मध्यांत)"कृष्ण को भी 4 भुजाएँ दिखाते हैं।" (मु.19.2.75 पृ.2 मध्य)

सीढ़ी के चित्र में सतयुग की सीढ़ियों से पहले इन्हीं 4 आत्मा रूपी अश्वों को 4 नौजवान कुमारों के रूप में दिखाया गया है।

## (9) 'गाँवड़े का छोरा' फुल बेगर टू फुल प्रिंस संगमयुगी कृष्ण-

राम की आत्मा अपने संगमयुगी दूसरे जन्म में गाँव में रहने वाले किसी अत्यंत गरीब ब्राह्मण का पुत्र बनती है। बाद में ज्ञान गर्भ में आने पर सम्पूर्ण बनी ब्रह्मा की आत्मा ही उस ग्रामीण बालक में प्रवेश करके संगमयुगी कृष्ण का पार्ट बजाती है। यही कारण है कि चित्रों में ब्रह्मा को वयोवृद्ध और कृष्ण को कुमार के रूप में दिखाते हैं। बाबा ने भी कहा है "ब्रह्मा को हमेशा बड़ा दिखाते हैं और कृष्ण को छोटा।" चूँकि वृद्ध ब्रह्मा ही शरीर छोड़ने के बाद इस देहाती गरीब छोकरे में प्रवेश करके बैगरी पार्ट बजाता

है। अतः शिवबाबा ने कहा है "अभी तुम समझते हो जो श्रीकृष्ण सतयुग का प्रिंस था सो फिर 84 जन्मों बाद (अब स्वर्ग के 21 जन्मों में से पहले जन्म में) बेगर बना है।" (मु.10.9.76 पृ.3 आदि)

● "गाँव का छोरा तो गरीब होगा ना।" (मु.8.2.75 पृ.2 मध्य)

● "यह कहते हैं कृष्ण भगवान है नहीं। वह तो सबसे जास्ती अर्थात् पूरे 84 जन्म लेते हैं। इस समय (सन् 74 में) वह कहाँ होगा? ज़रूर बेगर होगा।" (मु.21.9.74 पृ.2 मध्य)

● "मैं तुमको (अर्थात् हम बच्चों में किसी एक को) प्रिंस श्रीकृष्ण जैसा बनाता हूँ। जो फर्स्ट प्रिंस स्वर्ग का था वह अब 84 जन्म लेकर आय बेगर बना है।" (मु.20.8.76 पृ.1 अंत)

● "वह (कृष्ण) पूरे 84 जन्म लेकर गाँवड़े का छोरा बना है। वो (सतयुगी) श्रीकृष्ण सूर्यवंशी, वैकुण्ठ का मालिक, उनकी आत्मा 84 जन्मों के बाद फिर गाँवड़े का छोरा बना है।......तत् त्वम्।" (अर्थात् राम की आत्मा भी गाँवड़े का छोरा बनी है; क्योंकि दोनों का शरीर रूपी रथ तो एक ही है) (मु.16.11.76 पृ.2 अंत)

सारे भारत का (भावी) प्रतिनिधि यह बेगर से प्रिंस बनने वाला संगमयुगी कृष्ण सीढ़ी के चित्र में सबसे नीचे विदेशियों से भीख माँगते हुये नीच ते नीच पतित अवस्था में दिखाया गया है। जबकि इसी चित्र में ऊपर सतयुगी सीढ़ियों के दाईं ओर सबसे ऊँची स्टेज में विश्व विजय की माला पहनने वाले संगमयुगी बेहद के प्रिंस-कृष्ण को भी दिखाया गया है।

**ओमशान्ति, ओमक्रान्ति।**

**।।ॐ शान्ति।।** **।। परम+आत्मा प्रत्यक्षता बॉम्ब ।।** **शिवबाबा याद है।**

# नगाड़ा नं.9

## कल्पवृक्ष

झाड़ का चित्र साक्षात्कार के द्वारा बनाया गया है। पुराना चित्र 30×40 इंच के आकार में छपाया गया है और इस चित्र में उल्टे वृक्ष को सीधा करके दिखाया है। गीता में थोड़ा इशारा है। भक्ति मार्ग में भी इशारा है। ऊपर को जड़ें हैं और नीचे को शाखाएँ फैली हुई हैं। जड़ें ऊपर को हैं माना उर्ध्वगामी हैं और शाखाएँ नीचे को हैं। इसका मतलब है वो पतनोन्मुखी हैं। इस वृक्ष को यहाँ सीधा करके दिखाया गया है। जड़ों का भाग भले नीचे दिखाया गया है। जड़ें तो बाद में निकलती हैं। जड़ों के पहले बीज होते हैं। बीज पहले अपने को खाक में मिलाता है। शिवबाबा बोलते हैं और ता.23.9.73 पृ.161 की अ.वा. के आदि में भी बोला है, "अब यह रिजल्ट आउट होनी है। राख कौन बनते

हैं और कितने बनते हैं और कोटों में से, लाखों में से एक कौन निकलते हैं, वह भी देखेंगे।" तो जड़ों के साथ, जड़ों से पहले ज़रूर बीज भी है। बीज अपने को मिट्टी में मिला देता है। ये कहावत है कि 'दाना ख़ाक में मिलकर गुले गुलज़ार होता है'। ये बाग कब बनता है? जबकि उसका बीज अपने को मिट्टी में मिला देता है। तो इस वृक्ष की जो शाखाएँ नीचे दिखाई देती हैं वो यहाँ समझाने के लिए ऊपर दिखाई गई हैं और जड़ों का हिस्सा नीचे दिखाया गया है, जो उर्ध्वगामी है। उर्ध्वगामी का मतलब है कि संगमयुग में ही हमारी चढ़ती कला होती है। जड़ों का हिस्सा जो इस वृक्ष में दिखाया गया है ये हमारी चढ़ती कला का युग है। इसमें जड़ के रूप में आधारमूर्त आत्माओं की चढ़ती कला है। उन जड़ों को जन्म देने वाले बीजों की भी चढ़ती कला का युग है।

तो वृक्ष के इस तरह 5 भाग दिखाये गये हैं। चार युगों के चार भाग- सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग और पाँचवा भाग है ये जड़ों का हिस्सा, जहाँ बीजारोपण होता है, जहाँ धर्मों का फाउंडेशन डाला जाता है। फाउंडेशन माना जड़। अनेक प्रकार के राज्यों के भी फाउंडेशन यहाँ पड़ते हैं। अनेक प्रकार के धर्मों का भी फाउंडेशन यहाँ पड़ता है और फिर देवी-देवता सनातन धर्म का भी फाउंडेशन परमपिता परमात्मा डालते हैं। अनेक धर्मों का फाउंडेशन ज़रूर देहधारी मनुष्यों के द्वारा पड़ता है। ब्राह्मण भी मनुष्य ही हैं। इसलिए भारतीय परम्परा में ब्राह्मणों की नौ कुरियाँ मानी गई हैं, 9 गोत्र माने गये हैं। कहते हैं 9 ऋषि थे जिनसे ब्राह्मणों के 9 कुल उत्पन्न हुये। अब यह बात समझ में आती है कि आदि ब्रह्मा की औलाद जो अष्ट-नौ रत्न हैं, उन नव रत्नों से ही सृष्टि का सारा विस्तार होता है। उनमें मोस्ट वैल्युएबल रत्न भी हैं तो नॉन वैल्युएबल भी हैं; लेकिन वो नवरत्न स्वयं भी प्राप्ति करते हैं और अपने फॉलोअर्स को भी प्राप्ति कराने के निमित्त बनते हैं; लेकिन यहाँ तो जड़ों के भाग पर दस मनुष्य आत्मायें बैठी हुई दिखाई देती हैं। चार जड़ें दाईं ओर और चार जड़ें बाईं ओर। उन पर बैठी हुई चार-चार मनुष्य आत्माएँ और बीच में जो जड़ प्राय:लोप दिखाई गई है, उनमें दो प्रमुख आत्माओं के रूप में मात-पिता बैठे दिखाये गये हैं। यहाँ बाबा ने बनियन ट्री का मिसाल दिया है। बाइप्लॉट जड़ें तो हैं; लेकिन जो मूल जड़ है वो सड़ गई है। देवी-देवता धर्म का जो मूल फाउंडेशन है वो प्राय:लोप हो जाता है। एक बड़ का ही झाड़ ऐसा है। और भी झाड़ हैं जिनकी जड़ें दूध वाली होती हैं और उनकी लकड़ी पानी में डालने के बाद भी सड़ती नहीं; लेकिन इस झाड़ के लिए दिखाते हैं कि बाइप्लॉट जड़ें तो हैं; लेकिन जो मूल जड़ है वो सड़ गई है, जैसे कलकत्ता का बनियन ट्री। वैसे भी जो बरगद के झाड़ होते हैं उनमें नीचे का हिस्सा सड़ जाता है; लेकिन जिस हिस्से को पानी नहीं मिलता, नमी नहीं मिलती अर्थात् ज्ञान जल नहीं मिलता वही हिस्सा सड़ जाता है अर्थात् सूख जाता है; लेकिन जड़ का वो हिस्सा जो कि नीचे गहराई तक जमीन के अंदर रहता है, वो नहीं सड़ता। तो ऐसी भी आत्माएँ हैं, जो गहरे फाउंडेशन में रहने वाली हैं। वो हैं देवी देवता सनातन धर्म की पक्की। वो पूरा लोप नहीं होतीं। कुछ न कुछ जड़ बची ज़रूर रहती

है। तो वो नौ/दस धर्म की दस आधारमूर्त आत्मायें यहाँ दिखाई गई हैं। जड़ों के ऊपर बैठे हुये दस धर्म कौन-2 से हैं? इन धर्मों की विशेषता क्या है? अगर इस विशेषता को पहचान लिया जाये तो उस धर्म की जो विशेष आत्माएँ पार्ट बजाने वाली हैं उनको भी बड़ी आसानी से पहचाना जा सकता है। तो हर एक धर्म की विशेषता को हम यहाँ देखेंगे।

## (1) सनातन देवी देवता धर्म-

पहला धर्म है आदि सनातन देवी देवता धर्म। देवी देवता धर्म का मुख्य गुण, विशेषता क्या है जो उन आत्माओं में दिखाई देगी? और विशेषताएँ तो उनकी दिखाई पड़े या न पड़े; लेकिन एक ऐसी विशेषता है जो सर्वगुणों का राजा है। वो विशेषता उनमें ज़रूर दिखाई देती है; क्योंकि देवताओं से ज़्यादा गुणवान तो कोई और धर्म की आत्माएँ होती ही नहीं। ऐसी आत्माएँ हमारे ब्राह्मणों की दुनिया में हर सेंटर में एक/दो ज़रूर मिलेंगी। वो गुणधर्म है-सहनशीलता। उनमें जितनी सहन करने की शक्ति होगी उतनी और किसी धर्म की आत्माओं में नहीं होगी। जैसे कहते हैं- "धरत परिये पर धरम न छोड़िये" तो ये उनकी धर्म रूपी धारणा है कि वो कैसी भी परिस्थिति में अपनी सहनशीलता को छोड़ेंगी नहीं। **सहनशीलता और पवित्रता** उनका सहज और स्वाभाविक गुण है।

## (2) क्षत्रिय धर्म-

देवता धर्म के बाद दूसरा है- क्षत्रिय धर्म और क्षत्रिय धर्म का विशेष गुण धर्म है '**सामना करने की शक्ति और समाने की शक्ति**'। क्षत्रियों ने क्या किया? भारत की हिस्ट्री में विशेषकर कौन से धर्म की आत्माओं ने, कौन सी जाति विशेष की आत्माओं ने राज्य किया? क्षत्रियों ने। ऐसे दूसरे धर्म के भी हुये हैं; लेकिन विशेषकर भारत में क्षत्रिय वर्ण की आत्माएँ ही राजाई के निमित्त बनीं। तो उनमें ये सामना करने की शक्ति कूट-2 कर भरी हुई है। जितना बड़ा राजा बनने वाली आत्मा होगी उतना विकराल से विकराल परिस्थितियों का मुक़ाबला करने की शक्ति ज़रूर होगी। अ.वाणी में बोला है कि "सागर ज्ञान की लहरों से बड़े-2 तूफानों का सामना करता है; लेकिन अंदर से शांत रहता है। ऊपर-2 भले कितनी भी ऊँची से ऊँची लहरें आती हैं। ऐसा लगता है जैसे सागर में बहुत अशांति फैली है। वास्तव में वो आत्माएँ अंदर से शांत होती हैं और बाहर से मुक़ाबला करती हैं अर्थात् संघर्ष करती हैं। संघर्ष करते हुये भी अंदर से कोई अशांति जैसा वातावरण नहीं होता है। जैसे भारत के वीर राजाएँ हुये हैं। उन्होंने युद्ध में जाते समय अपनी अवस्था को कभी दु:खी नहीं दिखाया। हँसते-2 उन्होंने संघर्ष किया। तो इन आत्माओं की यह विशेषता देखने में ज़रूर आयेगी।

सामना करने के साथ-2 क्षत्रियों में समाने की शक्ति भी होगी। विदेशी धर्मों की क्रूर आत्माएँ, आतताई मनुष्य आत्माएँ, अत्याचारी मनुष्य आत्माएँ भारत में आईं

उनको भी भारत के राजाओं ने अपने राज्य में समा लिया अर्थात् शरण दे दी; क्योंकि भारत माता-पिता का देश है; क्योंकि राम बाप को कहा जाता है और त्रेतायुग में राम वाली आत्मा का ही राज्य चलता है। रामराज्य का विशेष गायन है। सतयुग में तो कृष्ण अर्थात् नारायण वाली आत्मा का राज्य होता है तो रामवाली आत्मा क्षत्रिय धर्म की है, उस जैसी जितनी भी रुद्रमाला की 108 विशेष आत्माये हैं उन सबमें अनेक जन्मों के राजाई के संस्कार भरे हुये होंगे; लेकिन ऐसे भी नहीं कह सकते कि उनमें सहनशीलता नहीं है। सहनशीलता होती है; लेकिन जिसके पास सामना करने की शक्ति होती है वो सहनशीलता को क्यों यूज़ करे? हाँ, स्नेह के सामने झुक सकते हैं। प्यार का बदला प्यार में दे सकते हैं; लेकिन अगर कोई टेढ़ी नज़र उठाकर बात करे तो उनका सामना करना उनके लिए ज़रूरी है। राजा अपने राज्य में किसी से दबकर नहीं रह सकता और जो दबकर रहता है उसका राज्य ज़्यादा समय नहीं चल सकता। तो ये थे उन विशेष आत्माओं के गुण। एक तो सामना करना और दूसरा कैसा भी दुश्मन क्यों न हो अगर शरण में आया है तो उसको भी शरण दे देते हैं यानी समाने की शक्ति रहती है।

## (3) इस्लाम धर्म-

इस्लाम धर्म का मुख्य विशेष गुणधर्म है- काम वासना। ये साधारण कामी नहीं होते। महाकामी होते हैं। एक मनुष्य जो कामी होता है वो अपनी स्त्री से ही वासना की पूर्ति करने वाला होता है; लेकिन ये हैं महाकामी अर्थात् एक से संतुष्ट होने वाले नहीं। जब तक इनकी व्यभिचारी वासना की पूर्ति न हो तब तक उन्हें अपने जीवन में संतुष्टि नहीं मिलती। तो इनमें व्यभिचार-वृत्ति होती है। यही इनकी विशेषता है। इस व्यभिचारी वृत्ति के कारण ही संसार की आबादी बड़ी तीव्र गति से द्वापर में बढ़ी।

## (4) बौद्ध धर्म-

महात्मा बुद्ध का विशेष गुणधर्म 'अहिंसा परमोधर्म'। जब भारत में बड़े-2 यज्ञ होते थे और उन यज्ञों में पशु बलि ही नहीं दी जाती थी, बल्कि मनुष्यों को भी काट2 करके डाला जाता था, जिसे नरबलि कहते थे। बच्चों को भी काट कर डाला जाता था। फिर उनका मांस भूनकर खाते थे। ऐसे हिंसक यज्ञ होते थे। उस समय महात्मा बुद्ध आये और उन्होंने अहिंसा का पाठ पढ़ाकर बौद्ध धर्म का प्रचार किया। ऐसी अहिंसा का पाठ पढ़ाया कि बड़े-2 राजाएँ भी हिंसावृत्ति को छोड़कर अहिंसावादी बौद्धी बन गये। बौद्धियों के लिए अहिंसा ही परमधर्म है; लेकिन ऐसी अहिंसा नहीं जो बाबा ने सिखाई है। बाबा ने तो डबल अहिंसा का पाठ पढ़ाया (1) किसी को शारीरिक दु:ख भी नहीं देना (2) काम कटारी की हिंसा भी नहीं करनी है; लेकिन बौद्धियों को काम कटारी की हिंसा का ज्ञान नहीं था। हालांकि ये इतने कामी भी नहीं होते थे। आरम्भ में बौद्ध धर्म में इतनी काम वासना नहीं थी। अपने स्त्री के साथ बड़े मेलजोल से रहते थे; लेकिन

बाद में जब बौद्ध विहार बनने लगे, उन विहारों में स्त्री-पुरुष को इकट्ठा रखना शुरू कर दिया। तभी से व्यभिचार फैल गया और यह भी व्यभिचारी होने लगे। बड़ी तीव्रता से उनमें पतन आया। बौद्ध धर्म, जो बड़ी तेजी से फैला था, वो बड़ी तेजी से नष्ट हो गया। तो इनमें अंत में सन्यास वृत्ति भी आई और साथ में वैराग्य भी आया। बाबा ने मुरली में बोला है- सन्यासी कब आते हैं? क्रिश्चियन के कुछ पहले आते हैं।'' जबकि सन्यास धर्म तो क्रिश्चियन धर्म के बाद आता है द्वापर के अंत में; लेकिन वो तो रियल सन्यासी हैं। बौद्धी तो पहले गृहस्थी होते हैं। बाद में उन्होंने सन्यासवृत्ति अपना ली। तो इनका गुण है **अहिंसा के साथ-2 पवित्रता।** यह उतने अपवित्र नहीं होते थे इसलिए यह बड़े हेल्दी भी होते थे।

## (5) क्रिश्चियन धर्म-

अगला धर्म है क्राइस्ट का क्रिश्चियन धर्म। इस धर्म की विशेषता है-क्रोध वासना। ऐसे नहीं कि ये कामी नहीं होते। इनमें काम वासना है तो व्यभिचार भी है। अनेक बार तलाक़ देने की प्रथा और अनेक शादियाँ करने की प्रथा इनके धर्म में भी नूँध है; लेकिन ये ठण्डा मुल्क है। ये धर्म यूरोपिय देश अमेरिका आदि ठंडे देशों में फैला है। इसलिए काम वासना ज़्यादा नहीं फैलती; लेकिन क्रोध बहुत है। वो भी ठंडा क्रोध। शंकरजी जैसा क्रोध नहीं कि तीव्रता से क्रोध आया और गया और फिर एकदम प्रसन्न हो गये। इनका क्रोध तो ऐसा है जो अंदर ही अंदर सुलगता रहता है और बाहर से पता भी नहीं लगने देते कि हमारे में क्रोध है और अंदर ही अंदर ऐसा घातक प्लान बना लेते हैं कि एटम-बम्ब जैसी घातक चीज़ों का निर्माण कर लिया। ये भी नहीं सोचा कि अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं। ऐसी चीज़ से हमारे ही कुल का संहार होगा। क्रोध में आकर क्रोधी व्यक्ति अपने घर में ही आग लगा लेता है। तो ऐसे ही इनके अंदर अंदरूनी ठंडा क्रोध रहता है। तो ये क्रिश्चियन हैं महाक्रोधी। इतने तो क्रोधी हैं कि जब दुनिया का विनाश होगा तो **विनाश कार्य** में इनका सबसे बड़ा हिस्सा होगा। ये एटम-बम्बों का निर्माण भी इन्होंने किया और विस्फोट भी ये ही करेंगे।

इसके साथ इनमें एक और गुण विशेष है, वो है **पॉम्प एण्ड शो।** पॉम्प एण्ड शो की विशेष वृत्ति है। प्रदर्शन की वृत्ति। प्रदर्शन करने की वृत्ति, एडवरटाइजमेंट करने की वृत्ति ये भारतीय वृत्ति नहीं। भारत में तो अगर योगी भी हुये हैं, रिद्धि-सिद्धि अल्पकाल की प्राप्ति कराने वाले जो भी हुये हैं उन्होंने अपने को गुप्त रखने का प्रयास किया है; लेकिन इस धर्म में यह विशेषता नहीं है। तो इस धर्म में क्रोध और दूसरा प्रदर्शन करने की वृत्ति विशेष समाई हुई है।

## (6) सन्यास धर्म-

सन्यास धर्म भी भारतीय धर्म है। भारत में ही द्वापर से लेकर कलियुग अंत समय

तक फलता-फूलता है। सिर्फ लास्ट के 50/60 वर्षों में जब ये वैज्ञानिक चमत्कार ज़्यादा हुये तब से ये विदेशों में फैल जाते हैं। भारत में इनकी पोलपट्टी खुलने लगती है। तो इस धर्म का विशेष गुण क्या है? कायरता वाली पवित्रता। जैसे कोई 5/10 साल जेल में रहे और बाहर निकलने पर कहे कि मैं 5/10 साल पवित्र रहा हूँ। मैंने कितना त्याग किया है; लेकिन यह तो मजबूरी है। तो ऐसे ही इनमें ये विशेष बात है कि ये दूर रहकर पवित्रता का पालन करने में सक्षम हैं। किसी के साथ में रहकर अपने को विकारों से बचा नहीं सकते। ये कायरता वाली पवित्रता इनके अंदर है; परंतु ये पवित्र तो रहते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं मध्यांत द्वापर तक पहुँचते-2 भारतवासी जो कृष्ण की उपासना करते-2 इतने काम वासना में अंधे हो गये कि उनकी बुद्धि में ये आने लगा कि कृष्ण को 16 हज़ार रानियाँ थीं तो हम 100, 50 या 200, 400 क्यों नहीं रख सकते? राजाओं ने ऐसा व्यभिचार शुरू किया। तो यथा राजा तथा भारत की प्रजा भी व्यभिचारी बनने लगी। राजाओं के पास तो बहुत ऐश्वर्य होता है, धन-सम्पत्ति होती है। वो तो खुलेआम अनेको शादियाँ करके व्यभिचाररत रह सकते थे; लेकिन आम पब्लिक के पास इतना ऐश्वर्य नहीं होता। तो उन्होंने फिर चोरी छिपे व्यभिचार करना शुरू कर दिया। इस तरह भारत में जब तेज़ी से व्यभिचार फैलने लगा, भारत का पतन होने लगा तब शंकराचार्य परमधाम से आये फिर उन्होंने आकर ऐसा ज्ञान दिया कि भारत के राजाएँ अपना घर-घाट, राज-पाट और रानियों को त्यागकर जंगल में जाकर पवित्र जीवन बिताने लगे। उनके साथ उनकी प्रजा भी साथी बन गई। तो सन्यासियों ने वैरागी बनाया। अगर उस समय सन्यासी न आये होते तो भारत काम विकार में जल-भुनकर के राख हो गया होता। इनमें दूर रहकर पवित्रता को पालन करने की विशेष शक्ति है। साथ-2 इनमें अहंकार भी ज़्यादा होता है। त्याग और पवित्रता का बहुत अहंकार आ जाता है और उस अहंकार के कारण ही ये फिर तेजी से नीचे गिरने लग पड़ते हैं। जितना अंहकार संन्यासियों में देखा जाता है उतना अहंकार किसी में भी नहीं होता। नास्तिक धर्म की आत्माओं में ही इनकी टक्कर का अहंकार हो सकता है; लेकिन थोड़ा-बहुत अंतर है। ये कम से कम निराकार परमात्मा को तो मानते हैं। चलो शिवोऽहम् कह देते हैं; लेकिन परमात्मा के गुणों को तो मानते हैं; लेकिन इनमें जो अहंकार है वो इतना ऊपर चढ़ जाता है कि अपने को ही भगवान समझकर बैठ जाते हैं। ये बात ही बहुत घातक है।

## (7) मुस्लिम धर्म-

मुस्लिम धर्म मोहम्मद के द्वारा फैला, जब अरबियंस अर्थात् इस्लामियों की मूर्तिपूजा की अंधश्रद्धा बहुत अति को पहुँच चुकी थी। पहले इस्लामी मूर्तिपूजक थे। इस अंधश्रद्धा का मोहम्मद ने खंडन कर दिया और जितने भी इस्लामी थे, ज़्यादा से ज़्यादा मोहम्मद को फॉलो करने लग पड़े; क्योंकि इस्लाम धर्म मनुष्य द्वारा स्थापित

किया हुआ धर्म है। इसलिए मनुष्य के द्वारा स्थापित किया हुआ धर्म ज़्यादा समय सात्विक स्टेज में नहीं रह सकता। तो अंधश्रद्धा, अंधविश्वास के आधार पर उसका तेज़ी से पतन हुआ। उसको नया रूप देने के लिए मोहम्मद ने आकर मुस्लिम धर्म स्थापन किया। ऐसे नहीं कि मुस्लिम धर्म में काम वासना नहीं है। काम वासना तो दिन दुगुनी, रात चौगुनी बढ़नी है, न कि घटनी है। खून तो वही अरबियंस वाला। हिस्ट्री में एक बात हुई कि ये जो अरबियंस देश है वहाँ रेगिस्तानी इलाका है। वहाँ कुछ पैदाइश नहीं होती। अभी भी नहीं होती। अभी तेल के भंडार निकल पड़े हैं तो इसके कारण ये बहुत धनवान हो गये। नहीं तो पहले बहुत गरीबी थी; क्योंकि जब तेज़ी से काम वासना के कारण जनसंख्या बढ़ी तो वहाँ का रेगिस्तानी इलाका इनको धन-सम्पत्ति नहीं दे सका और जब यह गरीब होने लगे तो इनकी जो ऐयाशी की, ऐशो आराम की ज़िन्दगी बिताने की वृत्ति है उसमें बाधा आ गई। उसकी पूर्ति करने के लिए उनकी नज़र खुशहाल भारत देश के ऊपर गई और इन्होंने लाखों की तादाद में इकट्ठे होकर बड़ी-2 सेनाएँ बनाकर भारत के ऊपर हमला करना शुरू कर दिया। लुटेरों की तरह इन्होंने भारत वर्ष को लूटा। हिस्ट्री में भारत के ऊपर किये गये इनके आक्रमण प्रसिद्ध हैं। तो दुनिया में हिस्ट्री के अंदर कामी तो हैं ही; लेकिन साथ-2 लोलुप लोभी भी हैं। लोभ जितना इनके अंदर, इस धर्म में समाया हुआ है उतना लोभ दुनिया के किसी धर्म में समाया हुआ नहीं है।

## (8) सिक्ख धर्म-

मुसलमानों का अत्याचार द्वापर के अंत से शुरू हुआ। यानी कलियुग के आदि से ही मुसलमानों के आक्रमण शुरू हो चुके थे। पहला-2 आक्रमण मुहम्मद बिन कासिम के द्वारा कलियुग के आरम्भ में हुआ। उस समय से लेकर के मध्य कलियुग तक आते-2 मुसलमानों का वर्चस्व इतना जास्ती हो गया कि क़रीब-2 सारे भारत में मुसलमानों का राज्य फैल गया और इन लोगों के अत्याचार भी इतने बढ़ गये कि जो सीमा से बाहर थे। ज़बरदस्ती तलवार की नोंक से इन्होंने हिंदुओं को मुसलमान बनाया। तो उस अत्याचार का प्रतिकार करने के लिए परमधाम से एक ऐसी आत्मा आई जिसने भारत के सोये हुये हट्टे-कट्टे राजपूतों को जगाया और उनको ऐसा ज्ञान दिया कि वो अंग्रेजों और मुसलमानों से आज तक भी टक्कर लेते रहे हैं। उन्होंने जितनी विदेशी आक्रमणकारियों से टक्कर ली है, जितने बलिदान सिक्खों ने दिये हैं उतने हिंदुओं ने भी नहीं दिये हैं। तो सिक्ख धर्म ने हमेशा भारत का सहयोग दिया है। ये जितने भारतीय परम्पराओं, भारतीय सभ्यता के सहयोगी रहे उतना कोई दूसरा धर्म भारत का सहयोगी नहीं बन सका। बौद्धी भी सहयोगी तो रहे; लेकिन आदि में अहिंसा का पाठ पढ़ाया और बाद में उनमें कायरता भरी अहिंसा के कारण कमजोरी आ गई। विदेशी आक्रांताओं ने इनके ऊपर आक्रमण किये तो ये झुक गये और ये उनके सहज रूप में अधीन हो गये। अपने बीबी, बाल-बच्चों को भी सौंप दिया। तो बौद्धी अधीन

हो गये; इसलिए भारत के सहयोगी नहीं बन सके। बाक़ी रहे सन्यासी, उन्होंने तो गृहस्थ जीवन को ही छोड़ दिया। बिना गृहस्थ जीवन के भला राजाई कैसे चल सकती है? तो उनका भी सहयोगी होना न होना बाद में बराबर हो गया। जब तक सन्यासी सतोप्रधान थे तो अधूरी पवित्रता के द्वारा भारत के सहयोगी बने; लेकिन जब तमोप्रधान बने तो इनका कोई सहयोग नहीं रहा। एक सिक्ख धर्म ही ऐसा है कि जब 500 वर्ष पहले ये धर्म उदय हुआ तब से लेकर अंत तक ये भारत के सहयोगी रहे। राम-कृष्ण की परम्पराओं के पक्षपाती रहे। भले ही निराकार को मानने वाले रहे; लेकिन साथ में देवी-देवताओं की भी उपासना इनमें रही।

राम-कृष्ण की भी इन्होंने महिमा की है, कभी ग्लानि नहीं की। यही एक ऐसा धर्म है जो बाबा की मुरली में प्रवृत्तिमार्ग का दूसरे नं. का धर्म है। पहला नं. प्रवृत्तिमार्ग का धर्म देवी देवता धर्म और दूसरे नं. का धर्म है सिक्ख धर्म। तो नई दुनिया के फाउंडेशन में सब धर्मों के मुक़ाबले सिक्ख धर्म है जो देवी देवता सनातन धर्म का फाउंडेशन बताया गया है; क्योंकि जो देवी देवताएँ थे वो तो संग के रंग में आकर बिल्कुल ही भ्रष्टाचारी बन गये। उनको तो इतनी अक्ल ही नहीं रही। बिल्कुल तमोप्रधान बन जाते हैं; लेकिन सिक्ख धर्म कोई पुराना धर्म नहीं है। बाद में आता है। तो जो धर्म बाद में उदय होता है वो न ज़्यादा तमोप्रधान बनता है न ज़्यादा सतोप्रधान बनता है। अंत में भी इनमें कम से कम इतनी अक्ल तो है कि कमा करके अर्थात् मेहनत करके खाना है। हराम की कमाई नहीं खानी। तो ये आज भी बड़े मेहनतकश हैं। ये सिक्ख धर्म है देवी-देवता धर्म का सहयोगी धर्म; लेकिन पिछले कुछ दशकों में सिक्ख धर्म की कुछ आत्माएँ विदेशियों के प्रभाव से प्रभावित होकर आतंकवादी बन गईं। इसका कारण यह है कि हर धर्म लास्ट में पहुँचकर के कुछ न कुछ तमोप्रधान बनता ही है। ये तो ड्रामा बना हुआ है। आज भी सिक्खों का कुछ हिस्सा ऐसा है जो भारत के लिए सबसे जास्ती सहयोग देने के लिए तैयार है।

## (9) आर्यसमाजी-

आर्यसमाज का विशेष गुण धर्म है **प्रजा के प्रति मोह**। जनसंख्या की वृद्धि हो जाये। ज़्यादा से ज़्यादा लोग हमारे फॉलोअर्स बन जायें। हमारी नेतागिरी के अंदर ज़्यादा से ज़्यादा लोग बने रहें। यानी ज़्यादा से ज़्यादा वोट बनाने की परम्परा इन्हीं आर्यसमाजियों में है। इसलिए मुरलियों में इनडायरैक्टली इन आर्यसमाजियों को बाबा ने कौरव कहा है। है तो भारतीय धर्म। कौरव भी भारतीय थे; लेकिन ये अर्धनास्तिक हैं। अर्ध नास्तिक किस हिसाब से? ये निराकार को तो मानते ही हैं। यज्ञ परम्पराओं की प्रक्रियाएँ भी करते हैं; लेकिन साकार देवी देवताओं को नहीं मानते हैं। उनका कहना है इसी दुनिया में स्वर्ग है और इसी दुनिया में नर्क है। तो आर्यसमाजियों का विशेष गुणधर्म है प्रजा के प्रति मोह। कैसे? जब से महर्षि दयानंद आये तब से उन्होंने एक

ऐसा रास्ता भारत के अंदर खोल दिया, जिससे दुनिया के कोई भी धर्म की आत्मा हो, कोई भी जाति का नीच से नीच व्यक्ति हो उसको उन्होंने हिंदू बनाना शुरू कर दिया। ये नहीं देखा कि हम क्वालिटी बना रहे हैं या संख्या बढ़ा रहे हैं। क्वालिटी भले गिर जाये; लेकिन तादाद बढ़ जानी चाहिए। बुद्धि में ये बात नहीं आयी कि शेर जैसा एक बच्चा पैदा करना ज्यादा श्रेष्ठ है या गीदड़ों जैसे अनेक बच्चे पैदा करना ज़्यादा श्रेष्ठ है? हिंदू ही दूसरे-2 धर्मों में कन्वर्ट हुये हैं। दूसरे धर्म की आत्माएँ कभी हिंदू नहीं बनीं और न हिंदुओं ने उन्हें अपने में कभी मिक्स किया। भारत वर्ष की देवी देवता सनातन धर्म की कच्ची आत्माएँ टाइम टू टाइम दूसरे धर्मों में कन्वर्ट होती रहती थीं। इस्लाम धर्म आया तो इस्लाम धर्म में चले गये। इस्लाम धर्म में जब उनको सुख नहीं मिला तो इसाई बन गये। क्रिश्चियन धर्म में भी सुख नहीं मिला तो मुस्लिम धर्म में कन्वर्ट हो गये। तो ऐसे एक से दूसरे, दूसरे से तीसरे धर्म में जहाँ-जहाँ सुख पाने का अवसर देखा वहाँ-2 सतोप्रधान धर्म में घुसते चले गये; लेकिन गीता में जैसा बताया है और बाबा ने भी बताया है कि ''अपने धर्म में मर जाना अच्छा है। दूसरे का धर्म तो दु:ख देने वाला है।'' इनकी हमेशा ये ही वृत्ति रही कि हमारा अपना कोई धर्म निश्चित नहीं है। जो आया उसी धर्म को अपना लिया। जैसे आज के नेताएँ अवसरवादी हैं। जहाँ देखी तवा बरात, वहाँ अपने को चेंज कर लिया। तो ऐसी जो आत्माएँ हैं उन्होंने जब भारत में महर्षि दयानंद के द्वारा ऐसे धर्म की स्थापना की बात सुनी तो वो फट से ललचायमान हुये; क्योंकि इनके अंदर संस्कार भरे हुये हैं भारत के स्वर्गीय सुख भोगने के। उनकी आत्मा ने जितने सुख देवता धर्म में अनुभव किये उतने सुख वो किसी धर्म में अनुभव कर ही नहीं पाये। केवल धर्म कन्वर्ट करने से ही कहीं सुख थोड़े ही प्राप्त होता है।

जहाँ पक्का धर्म होता है, वहाँ माइट होती है और शक्ति से ही सुख भोगा जाता है। जहाँ आदमी में शक्ति नहीं होती तो सुख क्या भोगेगा? जहाँ धर्म के प्रति मान्यता नहीं, वहाँ शक्ति भी नहीं रह सकती। फिर वह चाहे अंदरूनी शक्ति हो, चाहे बाहरी शक्ति हो। तो जो हर धर्म में कन्वर्ट होती हुई आत्माएँ अपने को बिल्कुल कमजोर कर बैठी हैं वो आत्माएँ ही फिर भारत में आकर के आर्यसमाजी बन गईं। वो अपने धर्म की इतनी कमजोर आत्माएँ हैं कि राजसत्ता चलाने के क़ाबिल हैं नहीं। इनके राज्य में तो वो हिसाब होगा जो गायन है "टका सेर भाजी टका सेर खाजा, अंधेर नगरी चौपट राजा"। प्रजा के ऊपर प्रजा के शासन को बाबा ने बताया है बेकायदे राज्य। अनलॉफुल, अनराइटियस राज्य। तो ये धर्म भारत का सबसे नीचा गिरा हुआ धर्म है। तामसी स्टेज का धर्म है। अंतिम 100 वर्षों में पनपने वाला है। जब नास्तिक धर्म, (जो दुनिया का लास्ट धर्म है,) की बढ़ोतरी होती है उसी समय अर्धनास्तिक भी आते हैं। एक तरफ महर्षि दयानंद ने आ करके आर्यसमाज धर्म चलाया और दूसरी तरफ़ रशिया में लेनिन और स्टॅलिन ने आ करके नास्तिकवाद का आरोपण किया। जितने भी वहाँ छोटे-बड़े जार राजा थे, उनका क़त्लेआम करवा दिया। दुनिया के ये दो धर्म राजाई

को पसंद नहीं करते, न ही राजाओं को पसंद करते। अंग्रेज गवर्मेंट के समय थोड़े से राजाएँ थे जिनको उन्होंने पेंशन और उपाधि वगैरह देकर कम से कम उनका नाम तो क़ायम रखा; लेकिन जब से कौरव गवर्मेंट आई तब से ये हाल हुआ है कि राजाओं का नाम-निशान भी गुम हो गया।

## (10) नास्तिकवाद-

ये न आत्मा को मानते हैं, न परमात्मा को मानते हैं, न स्वर्ग को मानते हैं, न नर्क को। ये सिर्फ़ देह को ही सब कुछ मानते हैं। देह के विश्लेषण में ही इनकी बुद्धि गई है। देह माने मिट्टी। तो मिट्टी के अणु-अणु का इन्होंने बुद्धि से विश्लेषण कर डाला और अणु-बम्ब, एटम-बॉम्ब बना डाले। दुनिया के लिए ख़तरा पैदा कर दिया। अपने लिए भी ये आत्माएँ कन्सट्रक्शन करने वाली नहीं हैं; डिस्ट्रक्शन करने वाली आत्माएँ हैं। परमात्मा के डिस्ट्रक्शन के कार्य में ये सहयोगी बनती हैं; लेकिन परमात्मा भी चतुरसुजान है कि स्थूल कार्य के लिए ऐसी आत्माओं को निमित्त बनाता है। एक तरफ़ परमात्मा आता है भारत में ज्ञान का बीजारोपण करता है, विशेष आत्मा को ही निमित्त बनाता है और दूसरी तरफ़ रूस में एटमिक एनर्जी का निर्माण शुरू हो गया। ये ईजाद भी इन्हीं लोगों की है। अमेरिका ने तो इसको बाद में अपनाया और विस्तार किया है। तो ये हुये अहंकारी।

इन सिद्धांतों के आधार पर कोई भी आत्मा पहचानी जा सकती है। वृक्ष में जो ऊपर का अंतिम हिस्सा है, वो काटकर नीचे कलम में लगाया गया है। इसका मतलब है कि हर धर्म की चुनी हुई कुछ विशेष आत्माएँ हैं जो ब्राह्मण धर्म में आरोपण कर दी गई हैं। तो जो दूसरे-2 धर्मों से कन्वर्ट होकर आत्माएँ आईं और ब्राह्मण बनीं तो निश्चित है कि एक जैसी नहीं होतीं। उनके मुख्य तीन ग्रुप हैं जो यहाँ से फैले हैं। जड़ों के भाग में तीन ग्रुप हैं। ऐसे ही डालियों के भाग में भी तीन मुख्य ग्रुप हैं। पहला ग्रुप है देवी देवता सनातन धर्म का पक्का, जिसमें मुखिया के रूप में मात-पिता बैठे हुये दिखाये गये हैं। पिता के रूप में ब्रह्मा बाबा बिठाये गये हैं और माता के रूप में मम्मा को बिठाया गया है। इसलिए यह नहीं समझना है कि ये ही मम्मा-बाबा हैं। क्या समझना है? सृष्टि के मात-पिता, जगतअम्बा और जगतपिता, (एडम और ईव) बैठे हैं जिनके द्वारा नई सृष्टि का फाउंडेशन लगाया जाता है। तो निश्चित है कि पिता वाली आत्मा देवी देवता सनातन धर्म से होती है।

देवी देवता सनातन धर्म के भी दो रूप हैं। जैसे हर धर्म की दो मुख्य डालियाँ हो गईं। इस्लाम धर्म के साथ मुस्लिम धर्म जुड़ा हुआ है। क्रिश्चियन धर्म के साथ नास्तिक धर्म जुड़ा हुआ है। ऐसे ही जो देवी देवता सनातन धर्म है वो तो पक्का प्रवृत्ति मार्ग वाला है। तो उसमें प्रवृत्ति किसकी है? देवता धर्म और क्षत्रिय धर्म की। क्षत्रिय धर्म की पार्ट बजाने वाली जो विशेष आत्मा है वो रामवाली आत्मा है। वो हो गई प्रजापिता

(एडम) के रूप में पार्ट बजाने वाली। देवता होते हैं मृदुल स्वभाव वाले। तो उनका जो मुखिया है कृष्ण वाली आत्मा- मीठी आत्मा। वो हो गई माता के रूप में पार्ट बजाने वाली आत्मा, जगतमाता अर्थात् जगत् अम्बा। ये जो देवी देवता सनातन धर्म का बीच वाला मुख्य भाग है ये आदि से लेकर कलियुग अंत तक इस तरह की जो फॉलो करने वाली आत्माएँ हैं, वो अपने धर्म में पक्की रहती हैं। वे अपने जीवन में कभी भी अपने धर्म को छोड़ने वाली नहीं बनतीं। इसलिए बाबा बोलते हैं कि तुम बच्चे हो आदि सनातन देवी देवता धर्म के पक्के। मतलब कभी दूसरे धर्म में कन्वर्ट न होने वाले और आस-पास जो ब्राह्मण बैठे हुये हैं, बाईप्लॉट जड़ें दिखाई दे रही हैं उनमें राइटियस साइड की जो बाइप्लॉट जड़ें हैं वो भारतीय धर्मों की जड़ें हैं, जो ऐसा रस लेती हैं जिनसे भारतीय धर्मों का पोषण होता है। भारतीय धर्म की डालियाँ दिखाई गई हैं राइट साइड में। उन महात्मा बुद्ध को, शंकराचार्य को, गुरूनानक को, महर्षि दयानंद को और उनके द्वारा स्थापित धर्मों को रस कहाँ से मिलता है? ये सभी जितने भी धर्म हैं वो पवित्रता को विशेष महत्त्व देने वाले हैं। इसलिए सभी राइटियस हैं। पवित्रता को विशेष महत्त्व देने वाले जो राइटियस धर्म कहे जाते हैं इनको रस कहाँ से मिलता है? इनको ज्ञान रस मिलता ही है इन राइट साइड की जड़ों से और जड़ों को जन्म देने वाले भी कोई बीज होते हैं। जिन्होंने यज्ञ के आदि में बीज बन करके इन जड़ों में बीजारोपण किया था। तो ये दूसरा हिस्सा हुआ राइट साइड का और तीसरा हिस्सा है लेफ्ट साइड का। बाइप्लॉट की जड़ें, जो लेफ्ट साइड की जड़ें हैं वो ऐसी जड़ें हैं, यज्ञ के अंदर ऐसा फाउंडेशन लगाने वाली ब्राह्मण आत्माएँ हैं, जो दूसरे लेफ्टिस्ट धर्मों से आई हुई हैं। लेफ्टिस्ट धर्मों में कन्वर्ट होकर अनेक जन्म रही हुई हैं। वो आत्माएँ जब ब्राह्मण धर्म में आती हैं तो वो अपने गुणधर्म को सहज नहीं छोड़ पातीं। कौन सा गुण धर्म? कामुक वृत्ति को नहीं छोड़ पातीं, क्रोध वृत्ति को नहीं छोड़ पातीं, लोभ वृत्ति को नहीं छोड़ पातीं, अंहकार की वृत्तियों को नहीं छोड़ पातीं। ये तीन ग्रुप दिखाये गये हैं। इस तरह वृक्ष के मुख्य तीन हिस्से- एक है थुर भाग देवी दे.स.धर्म का पक्का। ये हैं स्वदेशी और स्वधर्मी आत्माएँ और दूसरा है राइट साइड का भारतीय धर्मों का भाग। है तो ये स्वदेशी धर्म; लेकिन विधर्मी है। विधर्मी का मतलब विपरीत धर्म वाले; क्योंकि दे.दे.सनातन धर्म का थुर तो ऊपर जा रहा है; लेकिन उन्होंने देवी देवता सनातन धर्म के विपरीत दिशा यानी विरोधी दिशा पकड़ ली है। तीसरा भाग है- लेफ्ट साइड वाले। ये न स्वदेशी हैं, न स्वधर्मी हैं। विपरीत धर्म वाली हैं। ये विधर्मी के साथ-2 विदेशी भी हैं। दे.दे.सनातन धर्म को इनसे जास्ती नुक़सान पहुँचा है। जितना इन्होंने नुक़सान पहुँचाया है उतना राइट साइड वालों ने नहीं पहुँचाया। ये तीन ग्रुप हो गये। जड़ों से ही ये बात साबित हो जाती है कि ऊपर के जो धर्मपिताएँ हैं, वो इन जड़ों से रस लेने वाली आत्माएँ हैं। परमात्मा संगमयुग में ज्ञान का रस जो दे ही रहा है; लेकिन उस रस को अपने-2 तरीके से मनमत के आधार पर और अपने गुरुओं की मत के आधार पर ये बाइप्लॉट जड़ों पर बैठी हुई

आत्माएँ अपनाने के लिए मजबूर हैं। वे परमात्मा की बताई गई धारणाओं को डायरैक्ट नहीं अपनायेंगे। ये अपने गुरुओं के थ्रू अपनायेंगे। जैसे गुरू इनको डायरैक्शन देंगे, उस डायरैक्शन के आधार पर अपनायेंगे। श्रीमत को डायरैक्ट अपनाने वाले न होंगे।

इस तरह से ये बात क्लीयर हो जाती है कि ब्राह्मणों की दुनिया में जब से शिवबाबा आये और आकर के यज्ञ की स्थापना की, उसी समय से स्थापना करने वाली आत्माओं के साथ-2 नं.वार डिस्ट्रक्शन करने वाली आत्माओं का भी यज्ञ के अंदर प्रवेश होने लग पड़ता है। इसलिए अ.वाणी में बाबा ने बोला था कि ''यज्ञकुण्ड से स्थापना के साथ-2 विनाश ज्वाला भी प्रज्वलित हुई। तो विनाश ज्वाला को प्रज्वलित करने वाले कौन? ब्रह्मा, बाप और ब्राह्मण बच्चे।'' माँ-बाप के बीच में अगर बच्चे दख़लंदाज़ी करने लगे तो उन दख़लंदाज़ी करने वाले बच्चों को विदेशी कहा जायेगा या स्वदेशी? निश्चित रूप से वो ऐसे विदेशी बच्चे यज्ञ में प्रवेश कर गये जिन्होंने माँ-बाप के बीच में फ्रिक्शन डलवा दिया। बाबा ने कहा है -''रावण जब से आते हैं तब से भारत में लड़ाई शुरू होती है।'' (मु.8.8.68 पृ.3 मध्यांत) तो द्वापरयुग से रावण आया। भारतवासियों की आधारमूर्त और बीजरूप आत्माएँ आपस में लड़ मरीं। ऊपर से आने वाली इस्लाम धर्म की आत्माओं ने लेफ्ट साइड की आधारमूर्त जड़ों में प्रवेश किया। इस्लाम ने तो उनकी दृष्टि-वृत्ति को व्यभिचारी बना दिया। दृष्टि-वृत्ति को व्यभिचारी बनाने वालों का जिन-2 धर्मों ने सहयोग दिया वो हैं- आर्यसमाजी, नास्तिक वगैरह। तो वो सहयोग देने वाले और सहयोग लेने वाले आधारमूर्त विशेष, इस्लाम धर्म की आत्माएँ और उनके फॉलोअर्स हैं। उनकी दृष्टि-वृत्ति का करप्शन ब्राह्मण धर्म की जो पक्की थीं अर्थात् जो देवता धर्म और क्षत्रिय धर्म की पक्की थीं उन्होंने द्वापर के आदि में करप्शन स्वीकार नहीं किया और वो उनसे भिड़ गये और खदेड़ करके अरब देशों तक भगा दिया। अरब खंड में जाकर वो एकदम स्वतंत्र हो गये और व्यभिचार करने लगे। ये इतने तो व्यभिचारी होते थे कि अपनी सगी बहनों से भी शादी कर लेते थे। यज्ञ के अंदर किसी भी प्रकार के विघ्न आते हैं तो उसका मूल कारण अपवित्रता है- ऐसा बाबा ने मुरली में बोला है। ब्राह्मणों की दुनिया में काम महाशत्रु है। इसका प्रभाव इस्लाम धर्म की आत्माओं के थ्रू आता है। जो धर्म इनके सहयोगी बनते हैं वो सब उस वायब्रेशन को फैलाने के निमित्त बन जाते हैं और भारत के दुश्मन बन जाते हैं। भारत की प्रवृत्ति को तोड़ देते हैं। राम और सीता को जुदा करने वाले कौन हुये? ये रावण का विशेष कार्य है। यज्ञ के अंदर आदि से ही वो रावण घुस गया है। कहते हैं स्वर्ग में कौन गया? पांडवों के साथ-2 कुत्ता गया। तो वही कुत्ता द्वापरयुग से फिर अपना प्रभाव प्रत्यक्ष रूप में दिखाता है। जब मम्मा-बाबा शरीर छोड़ देते हैं तो ये सारी यज्ञ की सत्ता को अपने सहयोगियों के साथ अपने हाथ में समेट कर बैठ जाता है; क्योंकि रावण अकेला नहीं होता। काम विकार के साथ क्रोधी भी सहयोगी बनेंगे, लोभी, मोही, अहंकारी भी सहयोगी बनेंगे। तो यज्ञ के अंदर पतन होता है और इन देहधारी धर्म गुरुओं के द्वारा

सबसे जास्ती पतन होता है।

ऐसे नहीं कि राइट साइड की जड़ें भारत की सहयोगी धर्मवाली हैं। नहीं, वो भी विपरीत आचरण करने लग पड़ती हैं। इसका कारण है जो भारतीय धर्म हैं वो इस्लाम धर्म के मुक़ाबले कमजोर हैं; क्योंकि बौद्ध धर्म बाद में आने वाला है। क्रिश्चियन धर्म के मुक़ाबले सन्यास धर्म कमजोर है। वृक्ष में सन्यास धर्म की जड़ मोटी दिखाई गई है; क्योंकि इनका आधार पवित्रता है। कलियुग के अंत में क्रिश्चियन्स का अंतिम 200 वर्ष में बहुत फैलाव हो जाता है। भारत के सन्यासी विदेशों में जाकर इन क्रिश्चियन्स के अधीन हो जाते हैं। विदेशी संस्कृति को पूरा ही अपना लेते हैं और बहुत ही व्यभिचारी बन जाते हैं। जितने ये शुरू में पवित्र होते हैं बाद में उतना ही दूसरे धर्म वालों से कहीं ज़्यादा अपवित्र हो जाते हैं। सिर्फ़ एक रजनीश की बात थोड़े ही है। सभी सन्यासियों का ये हाल है। नहीं तो ये जंगलों में रहते थे। शहरों में घुसने की दरकार क्या थी? हालांकि ये विदेशी धर्म नहीं है; फिर भी ये विपरीत आचरण करने वाले हैं। शास्त्रों में दिखाया है दानव देवताओं के मुक़ाबले हमेशा पावरफुल रहे। अगर भगवान उनके सहयोगी न बनें तो देवताएँ कभी दानवों से जीत नहीं सकते। हमेशा अधीन ही पड़े रहते। राइट साइड के सिक्ख धर्म को छोड़कर बाक़ी जितने भी राइटियस धर्म हैं वो लेफ्टिस्ट धर्मों के अधीन हो जाते हैं। बौद्धियों में कायरता वाली अहिंसा है। जब विदेशियों के आक्रमण हुये, इन्होंने फट से अपने हाथ उठा दिये। अपने शस्त्र छोड़ दिये। विदेशी आक्रमणकारी इनकी बीबी, बच्चों को उठाकर ले गये तो भी इन्होंने अहिंसा परमोधर्म का नारा लगाया और अधीन हो गये। दास-दासी बन गये। तो भारत के दुश्मन हुए या दोस्त? ये भी दुश्मन हो गये। सन्यासियों की बात अभी बताई। ये आरम्भ में तो सतोप्रधान होते हैं; लेकिन बाद में ये बड़ी तेज़ी से नीचे गिरते हैं और जितने ही भारतीय कुल की परम्पराओं को, त्याग और तपस्या को पहले अपनाने वाले होते थे उतने ही ये ज़्यादा संग्रह करने वाले बन जाते हैं। जितने गृहस्थियों के पास वैभव नहीं होते उससे कई गुना अधिक वैभव इनके पास इकट्ठे हो जाते हैं। भारत के कोई-2 ऐसे गृहस्थी होंगे जिनके पास हवाई जहाज होंगे; लेकिन यहाँ के सन्यासी ऐसे भी हैं जिनके पास अपने व्यक्तिगत हवाई जहाज, हेलिकॉप्टर्स भी हैं। तो ये इतने संग्रही बन जाते हैं। जितने ये तपस्वी थे उतने भोगी बन जाते हैं। गृहस्थियों की भोग-वासना को तो फिर भी पकड़ा जा सकता है; लेकिन ये तो इतने चालाक होते हैं कि भोगी भी बनते हैं और पकड़ में भी नहीं आते। तो ये हैं भारत के दुश्मन, इसलिए विधर्मी हैं।

आर्यसमाजी तो धर्म को ही नहीं मानते। जब धर्म को ही नहीं मानते अर्थात् किसी धारणा को ही नहीं मानते, एक धर्म से दूसरे, दूसरे से तीसरे धर्म में कन्वर्ट भी होते हैं। तो इनकी भारत में जो नीति है वह आज भी कौरव, काँग्रेसी गवर्मेंट की या इनके फॉलोअर्स की नीति है कि धर्मनिरपेक्ष राज्य हमें चाहिए। हमें ऐसा राज्य चाहिए जिसमें हमें किसी धर्म की अपेक्षा नहीं। धर्म क्या चीज़ होती है- इससे राज्य का कोई कनेक्शन

नहीं। तुम धर्म की बात अपनी अलग करो। तुम्हारा राज्य सत्ता से क्या मतलब? धर्म को जब राजनीति से अलग कर दिया जाता है तो न धर्म में ताकत रहती, न राजनीति में ताकत रहती है। अंग्रेजों से हिंदुओं ने अर्थात् हिंदुस्तान ने छुटकारा पा लिया। गांधी जी ने क्या किया? अंग्रेजों से मुक्ति दिलाई; लेकिन इन कौरव काँग्रेसियों के पंजे में हमको अच्छी तरह फँसा दिया। नाम रख दिया 'कौरव'। 'कौ' माना कौआ, 'रव' माना शोरगुल। कौवों की तरह शोरगुल बहुत करते हैं- हम इतनी सुख-समृद्धि लायेंगे, भाषणबाजी करना, टेलीविजन में, रेडियो में, पब्लिक में भाषणबाजी, हम इतने नलकूप लगायेंगे, इतने गाँवों में हमने पानी, बिजली की व्यवस्था कर दी है और पानी, बिजली की व्यवस्था कहीं पर भी सही नहीं है। गरीब पब्लिक को और ही ज़्यादा परेशानी है। तो कौवों की तरह शोरगुल ज़्यादा करते हैं। जैसे कौवे गंद खाने वाले होते हैं वैसे ये भी गंद खाने के लिए बड़े-2 होटल तैयार करते हैं। 5 स्टार होटल, नाम कितना बुलन्द; लेकिन उन होटलों में जितना गंद चलता है वो तो किसी को पता ही नहीं। तो न इनके पास प्योरिटी रह सकती है और ना प्रॉस्पेरिटी रह सकती है। इनके राज्य में प्रजा सुखी नहीं रह सकती; क्योंकि अनलॉफुल राज्य है।

इस प्रकार ये लेफ्ट साइड के और राइट साइड के बाइप्लॉट जितने भी धर्म हैं वो कमजोर होने के कारण भारतीय परम्पराओं के विपरीत गति अपनाने लग पड़ते हैं। कमजोर क्यों हुये? क्योंकि जब परमपिता परमात्मा आ करके ज्ञान का बल देता है तब उस ज्ञान को ये अपनी मनमत के आधार पर मिक्स कर देते हैं। अपने से ऊँचे गुरुओं की मत के आधार पर चल पड़ते हैं। इस्लाम का इन सबके ऊपर प्रभाव पड़ता है। इनकी जो कुप्रवृत्तियाँ हैं उनमें काम वासना प्रधान है। जिसके कारण बुद्धि विकारी बनती है तो उनमें से ज्ञान निकल जाता है। ज़रूर यज्ञ के आदि से ही कोई ऐसी आत्माएँ यज्ञ के अंदर प्रवेश कर गईं जो कामी इस्लामी धर्म की बीज और आधारमूर्त जड़ें थीं। इनके प्रवेश करने के कारण ही मात-पिता में संघर्ष हुआ और दोनों जुदा हो गये। अंजाम हार्टफेल हो गया और यज्ञ की शासन सत्ता कामी, क्रोधी, लोभी, मोही, अहंकारियों के हाथ में आ गई। जो भारतीय राइटियस धर्म की आधारमूर्त और बीजरूप आर्यसमाजी आत्माएँ थीं वो इन इस्लामियों के मुक़ाबले कमजोर पड़ती हैं। तो ये भी अधीन हो जाती हैं। जैसे पति के मरने पर माता असहाय हो जाती है या पति के सन्यास ग्रहण कर लेने पर माँ बच्चों के अधीन हो जाती है वैसे ही ब्रह्मा माता भी ब्राह्मण बच्चों की दुनिया में यज्ञपिता प्रजापिता के देह त्याग के बाद अधीन होकर रही।

"पराधीन सपनेहु सुख नाहीं" दादा लेखराज ब्रह्मा ने सहन तो किया; परंतु जैसे खुशी-2 सहन करना चाहिए और खुशी-2 उसका अंजाम होना चाहिए वो नहीं हुआ। आख़िर में ब्रह्मा माँ का हार्टफेल हुआ और दु:ख-दर्द लेकर शरीर छोड़ गये। जैसे बिच्छु-टिण्डन जब पैदा होते हैं तो अपनी माँ का पेट फाड़ करके पैदा होते हैं। तो ऐसे ही इस धर्म में जो आधारमूर्त और बीजरूप यज्ञ के अंदर घुसे हुए हैं, वो बिच्छुनी की तरह

लम्बे डंक वाले हैं। जहाँ देखते हैं ये कोमल स्वभाव का है, हमारे प्रभाव में आ जायेगा तो उसको डंक ज़रूर मारेंगे और अपना काम बनायेंगे। स्वार्थ का पोषण करेंगे; लेकिन दूसरी आत्माओं को दु:ख ज़रूर देंगे। इसलिए बाबा ने मु. में बोला है ''विधर्मियों के प्रति शक्ति स्वरूप बनना है।'' अगर शक्ति स्वरूप न बने और ईश्वरीय सिद्धान्तों में लूज बने रहे, सिद्धांतों में ढील देते रहे तो तुम्हारे ऊपर हावी हो जायेंगे। ये देवी-देवता सनातन धर्म की स्थापना में सहयोगी बनने वाले नहीं। ये विपरीत आचरण करने लग पड़ेंगे। इसलिए माँ भी अधीन हो जाती है; क्योंकि बाप का साया उसके ऊपर तो है नहीं। देवी देवता सनातन धर्म वाली जो सहनशील आत्माएँ हैं उनके ऊपर बाप जैसी सशक्त आत्माओं का हाथ रहता ही है। बाप गुप्त हो जाता है और वो आसुरी बच्चे कोमल स्वभाव वाले कृष्ण की सोल को ही सर्वे सर्वा बना देते हैं कि कृष्ण उर्फ़ ब्रह्मा गीता का भगवान है; क्योंकि पोलाइट स्वभाव का है। ये हमको डंक मारने देता है। जो डंक मारने दे, भगवान हो गया। जो सामना करे उसको गुम कर दो। जब ऐसा होता है और अति हो जाती है तब उस गुप्त पार्ट बजाने वाले परमात्मा को संसार में प्रत्यक्ष होना ज़रूरी हो जाता है, "जब-जब होये धर्म की ग्लानि, बढ़े असुर अधम अभिमानी तब-तब धरि प्रभु मनुज शरीरा"। ब्रह्मा का शरीर छूट जाता है तो परमात्मा किसी और तन में तो कार्य करता है; लेकिन गुप्त रूप में कार्य करता है। ब्रह्मा का पार्ट था माँ का। वो टेढ़ा पार्ट था ही नहीं। तो पहचानने का कोई प्रश्न ही नहीं था। 'वक्र चंद्रमा ग्रसे न राहू' टेढ़े चंद्रमा को राहू नहीं पकड़ पाता। जब चंद्रमा सीधा हो जाता है अर्थात् सम्पूर्ण हो जाता है तब राहू भी उसके ऊपर हमला बोल देता है। इसलिए तो गायन है "टेढ़ी अंगुली किये बगैर घी भी नहीं निकलता"। जब तक विधर्मियों के साथ शक्ति स्वरूप नहीं बनेंगे तब तक ये सुधरने वाले नहीं हैं अर्थात् ब्रह्मा की 100 साल की आयु पूरी होने के बाद राम बाप के थ्रू परमात्मा विकराल रूप धारण करता है। ये क्षत्रिय धर्म की सशक्त आत्मा है। जन्म-जन्मांतर की राजा बनने वाली विशेष आत्मा है। जब प्रत्यक्षता में आती है तो ये चोर भागते हैं। जैसे कि प्रदर्शनी अंक में दिखाया गया है कि कैसे ज्ञान सूर्य के प्रगट होने पर पाँच विकार रूपी चोर भाग रहे हैं।

इस प्रकार एक ही धर्म ऐसा रह गया जो परमात्मा का पहला-2 सहयोगी बनता है वह है- 'सिक्ख धर्म'। आदि सनातन धर्म के भी दो छेड़े हैं (देवता धर्म और क्षत्रिय धर्म) और क्षत्रिय धर्म की भी कुछ कम बुद्धि वाली आत्माएँ होती हैं जो सिक्ख धर्म में कन्वर्ट हो जाती हैं। सिक्ख धर्म कलियुग का लास्ट धर्म है। तमोप्रधान समय में आया हुआ है। विदेशियों से, असुरों से मुक़ाबला करने के लिए निमित्त बनता है। इसलिए बाबा ने बोला है ''त्रिमूर्ति के चित्र में शंकर की जगह मम्मा को बिठाने से बात सहज हो जाती है''; क्योंकि असुर संहारिणी उन असुरों का सुधार करती हैं जब वो शक्तियाँ शिव की बन जाती हैं। किसी मनुष्य की शक्ति बनकर नहीं रहतीं, शिव की शक्ति बनती हैं तब उन असुरों का संहार करती हैं।

सिक्ख धर्म की जो विशेष आत्मा है, जिसको फाउंडर बनाया जाता है वो माता के रूप में फाउंडर बनती है। ब्रह्मा की जो विशेष आत्मा है, शरीर छोड़ने के बाद पहले-2 तो गुप्त रूप में पार्ट बजाती है; लेकिन प्रत्यक्षता तब होती है जब जगदम्बा का पार्ट प्रत्यक्ष रूप में बजाने वाली आत्मा सम्पन्न बन जाती है 'ब्रह्मा सो विष्णु'। यज्ञ के आदि में कोई एक माता नहीं थी जो यज्ञ को कन्ट्रोल करने वाली थी। मु.25.7.67 पृ. 2 के अंत में बोला है कि "दस वर्ष (साथ में ) रहने वाले ध्यान में जाय मम्मा-बाबा को ड्रिल कराते थे। उनमें बाबा प्रवेश कर डायरैक्शन देते थे।" और मु.28.5.74 पृ.2 अंत में बोला है - "मम्मा-बाबा को भी ड्रिल सिखलाते थे। डायरैक्शन देती थीं ऐसे-2 करो। टीचर हो बैठती थीं। हम समझते थे यह तो बहुत अच्छा नम्बर माला में आवेंगी। वह भी गुम हो गए। यह सब समझना पड़े न। हिस्ट्री तो बहुत बड़ी है।" यानी ऐसी बच्चियाँ भी थीं जिनमें बाबा का प्रवेश होता था। बाबा कन्या के तन पर सवारी नहीं करते। इससे साबित है वो कन्या नहीं थीं, वो माता थीं। तो उनमें से एक माता के लिए तो अ.वाणी.21.1.69 पृ.24 आदि में बोला हुआ है "भारत माता (शिव) शक्ति अवतार अंत का यही नारा है।" शुरू का नहीं। तो सन् 76 में बाप का प्रत्यक्षता वर्ष मनाया गया और विदेशियों ने बाप को पहचाना और प्रत्यक्ष किया। विदेशी ही तो बाप को प्रत्यक्ष करते हैं। तो जो बीजरूप विदेशी हैं वो बाप को प्रत्यक्ष करते हैं। वो माँ के बिगर ज्ञान-यज्ञ की तरफ़ आकर्षित नहीं हो सकते; क्योंकि आसुरी स्वभाव व संस्कार के जो हैं वो लक्ष्मी के पीछे फिदा होते हैं। ज्ञानामृत के पीछे फ़िदा नहीं होते हैं। जब अमृतरस बांटा गया तो असुरों की नज़र लगी हुई थी मोहिनी रूप के ऊपर और अमृत पीना भूल गये। उसके चम्बे में आ गये। जो पाना था वो पा नहीं सके। वो बातें कहाँ की हैं? ब्राह्मणों की दुनिया की ही बात है। कोई तो है कुखवंशावली और कोई मुखवंशावली। कोई तो ऐसे हैं जो ब्रह्मा के मुख से ज्ञान सुन करके अपने जीवन को बदलने लग पड़ते हैं और कोई तो ऐसे हैं जो मुख से सुने हुये ज्ञान के प्रति आकर्षित नहीं होते हैं; लेकिन मुख के प्रति आकर्षित होते हैं। देह के प्रति आकर्षित होते हैं। चाहे तो वो ब्रह्मा की चिकनी-चुपड़ी देह हो और चाहे ब्रह्माकुमारियों की चिकनी-चुपड़ी देह हो। वो देह के प्रति आकर्षित ज़रूर होते हैं। ज्ञान के प्रति उनका लगाव होता ही नहीं। ऐसे जन्म-जन्मांतर के उनके अंदर संस्कार भरे पड़े हैं। तो ऐसी जो आसुरी आत्माएँ हैं वो परमात्मा के कार्य में सहयोगी कैसे बन सकती हैं? वो स्थापना का कार्य क्या करेंगी जो यज्ञ के अंदर घुसकर जैसे आस्तीनों के साँप दिखाई देते हैं। यज्ञ पिता रुद्र किसे कहा जा सकता है? शंकर को। उसकी बाँहों में घुसे हुये सर्प दिखाये जाते हैं। आस्तीन के साँप अंदर ही घुसकर बैठते हैं और उनकी दृष्टि-वृत्ति जो है वो परखी भी नहीं जा सकती। कोई सहज परख भी नहीं सकता। उनका लक्ष्य अच्छा नहीं होता। तो 'जैसा लक्ष्य वैसे ही उनके अंदर लक्षण' होते हैं। वो ईश्वरीय यज्ञ के सहयोगी बनने के बजाय असहयोगी बन जाते हैं। परमात्मा बाप को प्रत्यक्ष करने के बजाय अपने को प्रत्यक्ष

करने लग पड़ते हैं। परमात्मा बाप को गुप्त कर देते हैं। कृष्ण रूपी रचना को आगे कर देते हैं, रचयिता बाप को छुपा देते हैं।

देवी देवता सनातन धर्म के बाद इस्लाम धर्म की स्थापना हुई जो लेफ्ट साइड की फर्स्ट जड़ है। इस पर बैठा हुआ ब्रह्माकुमार जन्म लेते-2 जब द्वापर के आदि तक पहुँचता है तो उसमें इब्राहिम की सोल प्रवेश करती है और उसकी दृष्टि-वृत्ति को व्यभिचारी बना देती है और उसके जितने भी फॉलोअर्स होते हैं उसके पीछे चले जाते हैं। उसके साथ जितने भी ब्राह्मण वत्स बाइप्लॉट जड़ों पर बैठे हैं वो सब सतयुग के नारायण बनने की योग्यता रखते हैं। ये कम कलाओं वाले नारायण बनते हैं। ये आत्माएँ कम जन्म लेने वाली हैं और कम कलाओं वाली हैं। इसलिए भारतवर्ष में 8 नारायणों की पूजा नहीं होती। लक्ष्मी-नारायण और बिरला मंदिर आदि में भी दो प्रकार के नारायणों की मूर्तियाँ पूजी जाती हैं। उनकी मूर्तियाँ बनी हुई हैं जिनको नर ना. व लक्ष्मी ना. का मंदिर कहते हैं। इन मंदिरों में एक तरफ़ विष्णु की मूर्ति रखी हुई है जिसको नर ना. कहा जाता है और दूसरी सतयुगी ल.ना. की मूर्ति रखी हुई है। तो यह नारायणों की दो मूर्तियाँ पूजनीय हैं, महिमावंत हैं। बाक़ी जितने भी नारायण हैं वह महिमा वाले नहीं हैं। उनकी न पूजा होती है, न मंदिर बनते हैं। ये गिरती कला वाले हैं। खुद भी गिरती कला में जाते हैं और दूसरों को भी ले जाते हैं। परमधाम से इब्राहिम के साथ-2 उसकी फॉलोअर्स आत्माएँ भी उतरती हैं। वो भी किसी न किसी शरीर में प्रवेश करती हैं।

बाबा ने बोला हुआ है "ऊँच ते ऊँच बाप को ज़रूर ऊँच ते ऊँच में प्रवेश करना पड़ेगा।" तो जितना ऊँचा धर्मपिता उतने ऊँचे आधार में उसको प्रवेश करना पड़ेगा। तो ये नियम बन जाता है कि सबसे ऊँचा धर्मपिता शिव परमात्मा तो ऊँच ते ऊँच प्रजापिता ब्रह्मा में प्रवेश करता है। उसके बाद जो भी नं.वार धर्मपिताएँ ऊपर से आने वाले हैं वो ज़रूर अपने ही नं. के ऊँचे देवता में प्रवेश करेंगे। सतयुग में 8 गद्दियाँ हैं। संगम को मिलाकर नौ गद्दियाँ हैं। तो राम-कृष्ण वाली आत्माओं में तो परमात्मा शिव का प्रवेश होता है। परमात्मा जिस तन में मुकर्रर प्रवेश करता है उसको कोई भी प्रभावित नहीं कर सकता। वो किसी के प्रभाव में बँधने वाला नहीं है। इसलिए बोला है "राम बाप है एक, बाक़ी सब हैं सीताएँ माना अधीन होने वाली आत्मा रूपी सीताएँ।" महात्मा बुद्ध सतयुग के सेकेंड नारायण में प्रवेश करता है। क्राइस्ट फोर्थ ना. में प्रवेश करता है। इसी तरह जो जिस नं. के धर्म का धर्मपिता है उसी नं. के नारायण में प्रवेश करता है; लेकिन दसवें नं. का धर्मपिता नास्तिक धर्म का है। न वो बाप को मानता है, न परमात्मा को, न आत्मा को, न रचयिता को मानता, न उनकी रचना को। उनके लिए तो दैहिक सुख ही उनका आधार है। उनका लक्ष्य ही दैहिक सुख पाने का होता है। तो ऐसी आत्माएँ जो न रचयिता को मानतीं, न उसकी रचना को मानतीं, तो उन्हें बाप से कोई राजाई का वर्सा नहीं मिलता। दुनिया का नास्तिक धर्म ही अहंकारी धर्म है जो वर्सा नहीं ले पाता। आर्यसमाजी जो अर्धनास्तिक हैं, साकार देवी-देवताओं को भले

ही न मानें; लेकिन निराकार भगवान बाप को तो मानते हैं। तो बाप को आशा रहती है कि कम से कम भाइयों की तो परवरिश करेगा। चलो देवताओं को नहीं मानता तो कोई बात नहीं। उनको भी नाममात्र की राजाई मिल जाती है।

इस प्रकार परमात्मा की दृष्टि में सब विकार माफ़ है। कामी-इस्लामी, क्रोधी-क्रिश्चियन, लोभी-मुस्लिम, मोही-महर्षि भी माफ़; लेकिन अहंकारी कभी माफ़ नहीं होते। अहंकारी को परमात्मा से प्राप्ति नहीं होती। जो संगमयुग का नारायण है वो तो ताजधारी होता ही नहीं। जीवनभर उसको संघर्ष ही करना है। तो वो होना न होना दुनियावी दृष्टि से बराबर ही है। आठ नारायण में जो फर्स्ट नारायण है वो सोलह कला सम्पूर्ण है। उसमें तो परमात्मा शिव की प्रवेशता हुई; लेकिन वो सफल तब होता है जब उसको अपने प्रवृत्तिमार्ग का जोड़ा राम सहयोगी के रूप में मिल जाता है। यानी सौ वर्ष की आयु जब पूरी होती है तो वो आत्मा उसमें प्रवेश करके प्रवृत्ति मार्ग वाली बन जाती है। तो उसको निर्देशन सही मिल जाता है कि हमें क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए। फर्स्ट नारायण सतयुगी देवी देवता सनातन धर्म का ही है। बाकी सेकेंड ना. से आठवें नं. ना. तक सात धर्मों के आधारमूर्त हैं।

लास्ट धर्म नास्तिक का धर्मपिता लेनिन है। लेनिन जिस जड़ में प्रवेश करता है वो आधारमूर्त ब्राह्मण है। झाड़ में वो सबसे छोटी और सबसे टेढ़ी लेफ्टिस्ट जड़ दिखाई देती है। यूँ तो ये परमात्मा पार्ट बजाने वाले के सबसे नज़दीक बैठी हुई दिखाई देती है; लेकिन स्थूल में क़रीब होना ही बुद्धि के क़रीब होना है, ये कोई ज़रूरी नहीं है। कोई हर समय कंधे पर सवार हो करके रहे; लेकिन कोई ज़रूरी नहीं है कि परमात्मा बाप अंदर से उसको पसन्द करते हैं; क्योंकि बाप के अंदर के प्यार और बाहर के प्यार की बड़ी युक्ति होती है। वो दुनियावी तरीके से पावरफुल है; लेकिन अहंकारी है। उन अहंकारियों को बाप पसंद नहीं करता। बुद्धिमानों की बुद्धि तो परमात्मा स्वयं ही है तो किसी के दिमाग़ को क्या पसंद करेगा? नास्तिकों ने जार राजाओं को क़त्लेआम करवा दिया था। उन्हें राजाई पसंद नहीं थी। वो अपने आगे किसी की राजाई नहीं देख सकते। परमात्मा राजाओं को पसंद करता है। जो दुनिया के बड़े-2 राजा हैं परमात्मा उनका नं.वार आधार लेता है। नास्तिक विरोध करते हैं। वो अपनी आँखों से किसी की राजाई नहीं देख सकते-इतने अहंकारी हैं। हमारे ब्राह्मणों की दुनिया में कोई ऐसा डुप्लीकेट ना. होगा जो यज्ञ के अंदर घुस करके अच्छा-ख़ासा व्यभिचारी बनने वाला होगा। जैसे कम्युनिस्टों में माँ, माँ नहीं, बहन, बहन नहीं। वहाँ तो राष्ट्र के लिए ही सारी सम्पत्ति अर्पण हो जाती है। बच्चे भी अर्पण हो जाते हैं। बच्चा पैदा हुआ, हॉस्टल में डाल दिया। माँ स्वस्थ हुई तो अपने काम में चली गई। बच्चा शिशु केंद्र में पल रहा है। फिर बड़ा हुआ कॉलेज में, हॉस्टल में डाल दिया। और बड़ा हुआ ट्रेनिंग हॉस्टल में और उसके बाद डायरैक्ट चला जाता है, गवर्मेंट की प्रॉपर्टी बन जाता है। तो उस बच्चे को ये नहीं मालूम मेरी माँ कौन है, बहन कौन है। वो बच्चा बड़ा हो गया। होटलों में खाना खा रहा

है, कारखानों में काम कर रहा है। होटल में जब रह रहा है तो जो भी साथ में संगिनी आ जाये उसके साथ रात बितायेगा। जो उस दिन उसकी पत्नी हो गई वो हो सकता है उसकी बहन या माँ हो। उसको क्या पता? तो जानवरों की ज़िंदगी हो गई ना। खून खराब हुआ ना। तो ये दुनिया का सबसे जास्ती भ्रष्ट धर्म है।

ऊपर से आने वाले धर्मपिताएँ जो कि पवित्र आत्माएँ होतीं हैं; इसलिए गर्भ से जन्म नहीं ले सकतीं। पहला जन्म उनको गर्भ से नहीं मिलेगा। पहले जन्म में वो किसी में प्रवेश करके सुख भोगती हैं, दु:ख नहीं भोग सकतीं। इसलिए बाबा ने कहा- ''500 करोड़ मनुष्य आत्माओं में से प्रत्येक मनुष्य आत्मा को परमात्मा बाप आकर सद्गति देते हैं।'' एक जन्म की सद्गति तो सबको देते हैं। बाक़ी फिर जिस तन में प्रवेश किया उसके संग का रंग सबको तेज़ी से लगता है; क्योंकि बहुत पतित हो जाते हैं। उन्हीं देवात्माओं में ऊपर से आने वाली सोल प्रवेश करती है। जैसे इब्राहिम जिसमें आये उन्होंने ब्राह्मण जीवन में दृष्टि-वृत्ति को सबसे जास्ती करप्ट किया। बाबा ने कभी भी नहीं कहा कि जाति-2 की दृष्टि-वृत्ति का लेन-देन, ये योग है; लेकिन जो व्यभिचारी होंगे उनका स्थूल कर्मेंद्रियों का व्यभिचार बंद किया जायेगा तो सूक्ष्म दृष्टि का व्यभिचार ज़रूर शुरू कर देंगे। वे व्यभिचार के बिगर रह नहीं सकते। जितना सूक्ष्म व्यभिचार होगा उतना उस आत्मा के वायब्रेशन ख़राब होते जायेंगे और तेज़ी से पतन होता जायेगा। गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या पत्थरबुद्धि बन गई। गौतम अर्थात् सबसे जास्ती इन्द्रियों का सुख जिसने भोगा। वही इब्राहीम की सोल द्वापर में जड़ों पर बैठे उस ब्रह्मावत्स में प्रवेश करती है, जो सेकेंड ना. बनता है। वही सबसे जास्ती इन्द्रियों का सुख भोगता है। उसकी पत्नी (अहिल्या) सहयोगिनी होती है। दूसरे नं. की नारायण वाली आत्मा हो गई गौतम। इन अंतिम 7 नारायणों का ही सप्त ऋषियों के रूप में गायन है। उनमें गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या पत्थरबुद्धि इसलिए बन गई; क्योंकि विकारियों को यज्ञ में ले आई। अवश्य ही उसका विकारियों से कनेक्शन होगा। नहीं तो यज्ञ में बाप के सामने विकारियों को लाने का क्या मतलब? बाप तो कहते हैं पवित्र बनकर के भूँ-2 करो और उन कीड़ों को भ्रमरी बनाकर ले आओ। वो तो जिससे लगाव लग गया उसी को उठाकर के ले आई। तो पत्थर बुद्धि बन गई। मुरली में बोला है ''कोई पूर्वजन्म की वेश्या है, भले ही इस जन्म में ब्राह्मण बन जाये; लेकिन फिर भी वो अपने पूर्वजन्म के संस्कारों के अनुसार फिर वेश्या बन जायेगी''। भले ही इस जन्म में ब्राह्मण बन गई, ज्ञान ले लिया; लेकिन पूर्वजन्म के संस्कार हैं ना। तो ये सब थोड़े ही खतम हो जायेंगे।

देवी देवता सनातन धर्म का जो स्तर है वो तो सबसे जास्ती सुधरे हुये होकर रहे। राइट साइड के जन्म-जन्मांतर तक उनसे कम सुधरे हुये हैं और जो लेफ्ट साइड के हैं वो जन्म-जन्मांतर तक उनसे भी कम सुधरे हुये हैं। लेफ्टिस्ट धर्मों वाली आत्माएँ जन्म-जन्मांतर तक लेफ्टिस्ट धर्मों में कन्वर्ट होकर रही हैं। वो तो सबसे जास्ती बिगड़ गईं। जो आदि सनातन देवी देवता धर्म के थुर भाग के पक्के हैं वो पहले सुधरेंगे। फिर

राइटियस हैं। उनके बाद फिर लेफ्ट साइड के; क्योंकि इनकी दृष्टि-वृत्ति, स्वभाव-संस्कार ज़्यादा बिगड़ा हुआ है। ये सिर्फ़ ज्ञान सुनने-सुनाने से मानने वाले नहीं। इनके साथ सख़्ती से पेश आया जायेगा तब सुधरेंगे; क्योंकि ब्राह्मण बनने के बाद भी ये आत्माएँ लम्पट, वेश्याएँ, गणिकाएँ बन जाती हैं। गीत तो भगवान के गाती है और संग करती दूसरों का। उसको कहते हैं गणिका। ये गणिकायें भगवान के गुण गायेंगी, बहुत अच्छे-2 भजन गायेंगी। तो ये सारे चरित्र हैं कहाँ के? इन गणिकाओं, भीलनियों, अहिल्याओं, कुब्जाओं, जिनका बैकबोन बापदादा टूट गया, बापदादा उनमें प्रवेश करके सेवा भी नहीं कर सकता। वैसे बाबा कहते हैं -"मैं सब बच्चों में प्रवेश करके सेवा करता हूँ; लेकिन उन कुब्जाओं में प्रवेश कर सेवा नहीं कर सकता।" दिनांक 31.1.74 पृ.3 की मुरली के अंत में बाबा ने बोला है- "वेश्याएँ भी पुरुषार्थ कर माला का दाना भी बन सकती हैं।" उन दुनियावी वेश्याओं की तो बात ही नहीं। वो कोई विजयमाला का दाना नहीं बनेंगी। रुद्रमाला के अंदर भी कोई ऐसी आत्माएँ हैं जो वेश्या बन करके रहती हैं और भारत का पतन करने के लिए निमित्त बनती हैं। तो उन्हीं को माला का दाना बनना है। सुधरेंगी तभी तो माला का दाना बनती हैं। तो सनातन धर्म की जितनी भी 5/10 करोड़ आत्माएँ हैं त्रेता के अंत तक, उनमें सबसे जास्ती पतित आत्मा इब्राहीम की आधारमूर्त/बीजरूप आत्माएँ हैं। उनमें से ऊपर से आने वाली सोल उस कमजोर आत्मा पर अधिकार जमा लेती है। मज़बूत को नहीं पकड़ती। जैसे बिच्छू डंक कहाँ मारता है? जहाँ नरम देखेगा वहीं डंक मारेगा। कठोर वस्तु में, पत्थर में डंक नहीं मारेगा। बीज है बाप और आधार है रचना। बीज की रचना है जड़ अर्थात् आधारमूर्त।

बीजरूप आत्माएँ रुद्रमाला के मणके हैं। कोई लेफ्ट साइड के मणके, कोई राइट साइड के मणके और कोई देवी देवता सनातन धर्म के भी पक्के बीज हैं। ऐसे नहीं कि रुद्रमाला में सारे ही विधर्मी हैं, सारे ही विदेशी हैं। नहीं। पक्के स्वदेशी भी हैं। यानी दुनिया के हर धर्म के बीज रुद्रमाला में समाये हुये हैं। ये तीसरी दुनिया है। ये जो बीजरूप आत्माएँ हैं ये बड़ी सशक्त और जटिल आत्माएँ हैं। स्वभाव-संस्कार की भी बड़ी जटिल हैं। ये उन आधारमूर्त जड़ों से भी कहीं ज़्यादा पावरफुल हैं। उन नारायणों से भी ज़्यादा पावरफुल हैं जो सतयुग में जाकर नारायण बनते हैं। इनके ऊपर जो देह अभिमान का छिलका चढ़ा हुआ होता है वो सिवाय परमात्मा बाप के धर्मराज बने बिगर उतर ही नहीं सकता। जैसे मूसल होता है, धान और ओखली होती है तो उस मूसल और ओखली के बीच में कूट-2 कर पिट-2 कर उनका वो देहअभिमान का छिलका उतरता रहता है। एक तरफ ओखली, दूसरी तरफ़ मूसल फिर उसमें कुटने-पीटने के बाद पवित्र आत्मा रूपी चावल मस्तक के ऊपर लगाने योग्य बन जाते हैं। ये तो अहिंसक युद्ध है। परमात्मा की ये टेक्निक है। बहुत रमतू रमजबाज है। अरे! कृष्ण की ओखली भूल गये? ओखली से कृष्ण को बाँध दिया था। यशोदा ने क्या किया था? जब कृष्ण बहुत शैतानी करने लगे तो ओखली से बाँध दिया। जैसे माँ-बाप देखते हैं कि बच्चा

बहुत शैतान है तो उसकी शादी कर देते हैं। ऐसे ही यशोदा मैया ने ओखली से बाँध दिया। अब जितनी भी शैतानी करो। तो एक तरफ़ मूसल और दूसरी तरफ़ ओखली और बीच में जितने आकर पड़े, वो सब दाने। तो समझ लो कि ओखली में सिर दिया तो मूसलों से डरना क्या? खूब रात-2 भर जागो और शिवरात्रि जागरण मनाओ तो सर अर्थात् उनकी बुद्धि भच्चा होकर पिस जाती है और सारे पाप धुल जाते हैं। देह अभिमान का छिलका सारा ही उतर जाता है।

गायन है- 'मुट्ठी भर चावल सुदामा ने दिये।' और कुछ था ही नहीं उनके पास। तो 108 आत्माएँ एक मुट्ठी में और 108 दूसरी मुट्ठी में अर्थात् रुद्रमाला और विजयमाला का संगठन बना करके परमात्मा के कार्य में अर्पण कर दिया। झाड़ के चित्र में ये माला दिखाई गई है।

धर्मपिताएँ जिसमें प्रवेश करते हैं वो हो गये आधारमूर्त जड़ें और जड़ों को जन्म देने वाले हो गये बीजरूप आत्माएँ और बीजों को भी जन्म देने वाला हो गया प्रजापिता।

**ओमशान्ति। ओमक्रांति।**

**।।ॐ शान्ति।।  ।। परम+आत्मा प्रत्यक्षता बॉम्ब ।।  शिवबाबा याद है।**

# नगाड़ा नं.10

# 18 जनवरी सन् 69 से हम ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में (यज्ञ में) भक्तिमार्गीय रावण राज्य की शूटिंग चल रही है

अ.बापदादा ने ता.30.5.73 की अव्यक्त वाणी पृ.78 के आदि में कहा है "84 जन्मों की चढ़ती कला (रामराज्य) और उतरती कला (रावणराज्य) उन दोनों के संस्कार इस (संगम के) समय आत्मा में भरते हो।" स्पष्ट है कि ब्रह्मा बाबा के शरीर रूपी रथ द्वारा साकार बनकर वाणी चलाने वाले एकमात्र सद्गुरू शिवबाबा ही 21 जन्मों की सद्गति अर्थात् चढ़ती कला की शूटिंग कराते हैं। जबकि मम्मा-बाबा के शरीर छूटने के बाद सन् 69 से कुछ समय के लिए ब्राह्मण वत्सों को अपनी अवस्था का साक्षात्कार कराने हेतु वानप्रस्थी हुये ज्ञान सूर्य शिवबाबा के छिप जाने से ब्रह्मा की अज्ञान अंधेरी रात अर्थात् रावण राज्य शुरू हो जाता है। चूंकि ज्ञान यज्ञ में वाणी से परे चले जाने के कारण परमपिता परमात्मा शिव का शासन तो रहता नहीं। अतएव अनेकानेक अधूरे ब्राह्मणों की साकारी शासनसत्ता में 'यथा राजा तथा प्रजा' के नियमानुसार 63 जन्मों

की दुर्गति अर्थात् उतरती कला की शूटिंग हो जाती है।

शिवबाबा ने ता.14.2.74 पृ.1 की मुरली के मध्य में कहा है "वास्तव में गुरू तो एक ही होता है सद्‌गति के लिए। बाक़ी सब हैं दुर्गति के लिए।" ● "यह ढिंढोरा पिटवाते रहो- **एक सद्‌गुरू निराकार द्वारा सद्‌गति, अनेक मनुष्य गुरुओं द्वारा दुर्गति।"** (मु.11.3.69 पृ.1 अंत) ● "भगवान ने जब योग सिखाया तो स्वर्ग बन गया। मनुष्यों के योग सिखलाने से तो स्वर्ग से नरक बन गया।" (मु. 22.4.72 पृ.3 अंत)

● "मनुष्य योग सिखाकर रोगी बना देते हैं। बाबा के (पाकिस्तान में) योग (सिखाने) से हम एवर हेल्दी बन जाते हैं।" (रात्रि मु.1.5.73 पृ.1 अंत)

बाबा ने कहा है- "पाकिस्तान स्वर्ग को कहेंगे।" यही कारण है कि कराची की स्वर्गीय शूटिंग वाली भट्ठी में साकार सद्‌गुरू के संग का लगातार रंग लगने से तत्कालीन ब्रह्मावत्सों की शारीरिक-मानसिक अवस्था और आज की रोगी और तामसी शारीरिक-मानसिक अवस्था में रात-दिन का फर्क पड़ गया है।

## रावणराज्य की शूटिंग कब से चल रही है?

संगमयुगी देहधारी धर्मगुरुओं द्वारा द्वापर-कलियुगी नारकीय रावणराज्य की 'विशेष सामूहिक शूटिंग' तो ब्रह्मा बाबा के शरीर छोड़ने पर ही शुरू हुई थी। फिर भी 'सामान्य सामूहिक शूटिंग' ज्ञान की अधिष्ठात्री शिवशक्ति सरस्वती के 24 जून सन् 65 को शरीर छोड़ने के बाद से ही शुरू हो चुकी थी; क्योंकि सरस्वती को विशेष रूप से यज्ञमाता के रूप में कन्याओं-माताओं की सम्भाल के लिए रखा गया था; किंतु उनके न रहने पर भी साकार बाप शिव के ब्रह्मा तन में उपस्थित रहने के कारण किसी को रावणराज्य की भासना नहीं हो सकी। जबकि जड़ मूर्तियों के मंदिरों में अल्पकाल के लिए दु:ख और अशांति का लोप हो जाता है, तो जहाँ साक्षात् परमात्मा शिव ब्रह्मा के साकार तन में विराजमान हों वहाँ दु:ख की लेशमात्र अनुभूति कैसे हो सकती है? मम्मा-बाबा के बाद हम ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में मनुष्य गुरुओं द्वारा चलाई गई भक्तिमार्गीय रावणराज्य की शूटिंग के अकाट्य और प्रत्यक्ष प्रमाण इस प्रकार हैं (देखिये 30"x 40" वाला पुराना सीढ़ी का चित्र)

**(1) त्रेता अंत का अर्ध विनाश-** बाबा ने मुरली में कहा है "वाममार्ग में जाने पर ही स्वर्ग नष्ट होकर धरतीकम्प होता है। छोटी प्रलय होती है रावणराज्य के शुरू में।" ज्ञान की अधिष्ठात्री सरस्वती और अति स्नेही ब्रह्मा बाबा के शरीर छोड़ने के समय देहाभिमानी और अज्ञानी मनुष्य गुरुओं द्वारा सच्चे किंतु कच्चे ब्राह्मण वत्सों को पहले की तरह भरपूर ज्ञान और स्नेह की प्राप्ति नहीं हुई। उस समय प्रत्येक ब्राह्मण के दिल और दिमाग़ के अंदर मुरलियों में बताई हुई मम्मा-बाबा की आयु को लेकर माया के भूकम्प अर्थात् संशय उठ रहे थे जिनका सही समाधान तत्कालीन अज्ञानान्धकार फैलाने वाले मनुष्य गुरुओं के पास नहीं था। अत: सन् 65/66 से 68 के बीच ढेर के

ढेर ब्राह्मण वत्सों की ज्ञान यज्ञ से अकालमृत्यु हो गई।

**(2) सोमनाथ स्थापना-** द्वापरयुग (की शूटिंग) में लगभग 100 वर्ष बीतने पर राजा विक्रमादित्य की आत्मा (ब्रह्मा) के निमित्त आदेश द्वारा अपार (मधुबनी) धनराशि लगाकर गुजरात में (ज्ञान) सागर के कंठे पर (अर्थात् मधुबन के सबसे नज़दीक) 'सर्व सेंटर्स के बीजरूप अहमदाबाद' शहर में सच्चे सोमनाथ मंदिर (प्रभुपार्क केंद्र) की स्थापना कराई गई। संगमयुगी शूटिंग में यह कार्य ज्ञान की देवी सरस्वती के शरीर छोड़ने के ठीक 1 वर्ष (=100 वर्ष) बाद मई सन् 66 में अज्ञान के सागर पंडे पुजारियों के हाथों सम्पन्न हुआ था। स्वयं ब्रह्मा बाबा उस सेंटर में कभी नहीं जा सके। सिर्फ उनका स्थूल धन और मंसा संकल्प का भरपूर बीजमात्र ही उस सेवाकेंद्र में लग सका। जबकि अन्यान्य सभी वर्तमानकालीन सेवाकेंद्रों की स्थापना के निमित्त धनदाता दूसरे लोग हैं।

**(3) जड़चित्रों की प्रदर्शनी का भक्तिमार्गीय पॉम्प एण्ड शो-** द्वापरयुग के कोई 500 वर्ष तक खास माया की नगरी बम्बई तरफ़ (अजन्ता-एलोरा-एलिफैंटा की गुफाओं और मंदिरों आदि में) ढेर के ढेर जड़ चित्रों, मूर्तियों आदि का निर्माण होता है। इसी प्रकार 40 वर्ष की देव वर्णीय सतयुगी शूटिंग में द्वापरयुगी शूटिंग के दौरान ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में भी ढेर के ढेर प्रदर्शनी के चित्र बनने लगे, जिनकी संख्या आगे चलकर बहुत अधिक हो गई। बम्बई में पहली प्रदर्शनी का निर्माण मनुष्य गुरुओं द्वारा सन् 65 में हुआ था। उस समय ज्ञान की देवी मम्मा सरस्वती मृत्युशैया का आलिंगन कर रही थी। बाबा ने ता.13.6.72 पृ.2 की मुरली के अंत में कहा है "प्रदर्शनी की राय बाबा ने थोड़े ही निकाली। यह रमेश बच्चे का इन्वेंशन है।" स्पष्ट है कि ढेर के ढेर बनावटी चित्र मनमत और मनुष्यमत पर बनाये गये हैं। शिवबाबा की श्रीमत पर नहीं बनाये गये। अत: बाबा ने ता.8.5.74 पृ.1 की मुरली के मध्य में कहा है "आसुरी मत पर अनेक ढेर के ढेर चित्र बने हैं।" ● "भक्ति मार्ग के सारे चित्र झूठे और बनावटी हैं।" (मु.28.9.69 पृ.4 मध्य)

**(4) गीता का भगवान-** रावणराज्य के शुरू में दुनिया की सबसे बड़ी भूल यह हुई कि निराकारी स्टेज वाले शिव-शंकर भोलेनाथ रचयिता बाप की जगह 84 के चक्र में आने वाले देहधारी बच्चे 'श्रीकृष्ण' रूपी रचना का नाम संस्कृत की गीता में डाल दिया गया। इसका फाउंडेशन संगमयुग में तब पड़ना शुरू होता है जब 40 वर्ष की सतयुगी शूटिंग में सन् 65 से 68 के बीच द्वापरयुगी शूटिंग के दौरान कृष्ण वाली आत्मा अर्थात् ब्रह्मा का नाम 'पिताश्री' सच्ची गीता (मुरलियों) के फ्रंट पेज पर 'शिवबाबा याद है?' से पहले छापना आरम्भ कर दिया गया। इसका स्पष्ट अर्थ यह हुआ कि बाद में श्रेष्ठ बनने वाले पिता+श्री ब्रह्मा ही शिव के साकार रूप गीता का भगवान रचयिता हो गये; जबकि ब्रह्म+माँ तो पहली रचना रूपी बड़ी माता है। जो खुद ही भूले हुये हैं, वे दुनियावी धर्मगुरुओं की भूल कैसे सुधारेंगे? 'पहले घर का सुधार फिर पर का सुधार।'

**(5) शास्त्र निर्माण-** 40 वर्ष की सतयुगी शूटिंग में द्वापरयुगी शूटिंग के दौरान ढेर के ढेर चित्रों के दर्शन और प्रदर्शन करने से व्यभिचारी बन जाने के कारण ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में ईश्वरीय ज्ञान के साथ भिन्न-2 मनुष्यमत की मिलावट करके 'भविष्य पुराण' (की तरह 'विश्व का भविष्य') अथवा 'योगवाशिष्ठ' (की तरह 'योग की विधि और सिद्धि') जैसे मोटे-2 ग्रंथ-शास्त्र मान-सम्मान और धन कमाने की स्वार्थबुद्धि से द्वापर के आदि में लिखे जाते हैं। इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण इन गद्दीनशीन धर्म गुरुओं के बड़े-बड़े व्यक्तिगत बैंक बैलेंस हैं। जितना किसी गृहस्थ ब्राह्मण परिवार के पास भी शायद नहीं होगा।

**(6) बाप की बायोग्राफी में बच्चे का नाम-** जिस प्रकार निराकार बाप शिव की बायोग्राफी 'श्रीमद् भागवत् कथा' अर्थात् गोपियों को भगाने की कहानी में बाप के स्थान पर देहधारी बच्चे 'श्रीकृष्ण' रूपी रचना का नाम डाल दिया गया उसी प्रकार संगमयुग में ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में प्रकाशित 'एक अद्भुत जीवन कहानी' के प्रथम पृष्ठ पर कृष्ण वाली आत्मा अर्थात् ब्रह्मा का नाम और रूप ('पिताश्री') डाल दिया गया। क्या सिंध हैदराबाद में 3/4 सौ कन्याओं-माताओं को भगाने का अद्भुत कार्य बूढ़े दादा लेखराज (पिताश्री) ने किया था? या करनकरावनहार निराकारी शिव ने यह कार्य सम्पन्न किया था?

**(7) पतित पावन आओ-** जिस प्रकार द्वापरयुग प्रारम्भ होते ही भक्तजन भगवान को पुकारना शुरू कर देते हैं उसी प्रकार सन् 1969 में ब्रह्मा माँ के शरीर छोड़ने के बाद से ही ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया के भक्तजन 'ज्ञान की कमी और पहचान की कमी' रह जाने के कारण मम्मा-बाबा के जड़ चित्रों के सामने बैठ 'पतित पावन आओ' की मनसा-वाचा रट लगाकर बापदादा को संदेशियों द्वारा बार-2 आने का निमंत्रण देते रहते हैं। सन् 69 से पहले रामराज्य की शूटिंग काल में ब्रह्मा के तन में शिवबाबा को बुलाने या निमंत्रण देने की दरकार नहीं पड़ती थी। वे बिना बुलाये ब्रह्मा तन में मुरली चलाने आ जाते थे और अब रावणराज्य की शूटिंग में तो बुलाने पर भी नहीं आते। सिर्फ सूक्ष्म शरीरधारी ब्रह्मा की सोल द्वारा संगमयुगी भक्तप्रवर पंडे पुजारियों को साक्षात्कार कराने के लिए भावना का अल्पकालीन भाड़ा दे दिया जाता है। उस साक्षात्कार से कोई फ़ायदा या प्राप्ति विशेष तो होती नहीं। दिन प्रति दिन और ही नीचे गिरते जाते हैं।

**(8) द्वापर से विकारी राजाएँ अर्थात् प्रशासक-प्रशासिकाएँ ही वज़ीर रखते हैं-** स्वर्ग की शूटिंग करने वाले मम्मा-बाबा ने कभी किसी मनुष्य को अपने पास बुलाकर राय नहीं ली; क्योंकि जिसके तन में स्वयं परम पवित्र बुद्धिमानों की बुद्धि परमात्मा विराजमान हो उसे किसी विकारी मनुष्य से राय लेने की क्या ज़रूरत? परंतु ब्रह्मा बाबा के देह अवसान के बाद यज्ञ में अपने को सेवाधारी के बजाय प्रशासक-प्रशासिका समझने वालों ने निर्विकारी-निश्चयबुद्धि न होने के कारण बड़े-2 रायबहादुरों

को मधुबन हेड ऑफिस में निमंत्रण पर बुलाकर सलाह-मशविरा लेना शुरू कर दिया। बाद में धीरे-2 कौरव गवर्मेंट की तरह ढेर के ढेर मंत्रियों को इकट्ठा करके घड़ी-2 मधुबन में मीटिंग्स होने लगी। जबकि बाबा ने ता.20.5.77 पृ.1 की मुरली में कहा है-"मुरली द्वारा सर्व समस्याओं का हल मिल सकता है।" फिर भला इतने लोगों को टाइम-मनी और एनर्जी वेस्ट करने के लिए क्यों दूर-2 से बुलाकर इकट्ठा किया जाता है? यह भी ड्रामा में कलियुगी शूटिंग की भावी। इसका भी कोई न कोई तो निमित्त बनना ही चाहिए। बाबा ने मुरलियों में साफ़ कहा है "प्राइममिनिस्टर, प्रेसिडेन्ट आदि हैं तो उनके कितने वज़ीर हैं। ज़रूर (मुरली का राज़ समझने की) अक्ल नहीं है तब तो वज़ीर रखते हैं न एडवाइज देने लिए"। (मु.10.5.74 पृ.3 अंत) ● "राय लेते हैं बेवकूफ; क्योंकि उनमें (श्रीमत समझने की) अपनी अक्ल नहीं है।" (मु.5.6.74 पृ.2 मध्यादि) ● "बेवकूफ बनने पर राजाओं ने वज़ीरों से भी राय ली।" ● "जब बहुत पाप आत्मा बन जाते हैं तब वज़ीर, गुरु आदि रखना पड़ता है।" (मु.10.3.74 पृ.3 अंत)

**(9) राज्यसत्ता-धर्मसत्ता अलग-2 हाथों में-** हम ब्रह्माकुमार-कुमारियों के लिए रावणराज्य की यह एक परमप्रसिद्ध निशानी है जिसे हम प्रदर्शनी के चित्रों में भी रामराज्य के कॉन्ट्रास्ट में दिखाते रहे हैं; परंतु बहिर्मुखी वृत्ति होने के कारण इस बात को भी अब तक हमने दुनिया वालों पर ही लागू करना सीखा है; लेकिन अपनी संगमयुगी दुनिया के ब्राह्मण परिवार पर लागू नहीं किया। सारे राष्ट्र या देश को अपनी मुट्ठी में धर बैठने वाली धृतराष्ट्री और अंधे (धृतराष्ट्र) की औलाद अंधों ने कल्पपूर्व भी अपने घर-परिवार के दोषों पर कभी दृष्टिपात नहीं किया था।

ध्यान रहे कि रामराज्य की शूटिंग काल अर्थात् मम्मा-बाबा के ज़माने में देश के सभी सेवाकेंद्रों का संचालन मधुबन हेड ऑफिस से अकेले ब्रह्मा-सरस्वती द्वारा किया जाता था; परंतु बाद में ब्रह्मा बाबा को देहत्याग किये 1 वर्ष भी नहीं बीता कि बाप के द्वारा दी गई अंतिम समय की सारी शिक्षाओं को ठुकराते हुये, अपनी ही कमजोरी और आपसी भेदभाव के कारण देश के सेवाकेंद्रों का संचालनसूत्र अलग-2 ज़ोनल सेवाकेंद्रों की संचालिकाओं के हाथों में सौंप दिया गया। एक देश तो क्या, सारे विश्व (500/700 करोड़) का शासनसूत्र एक विश्वमहाराजन के हाथों सौंपने का अंतिम लक्ष्य भुला दिया गया या यूँ कहें कि विश्व महाराजन बनने का लक्ष्य कथनी तक ही सीमित रहा, करनी में नहीं। **बाबा ने मु.8.8.74 पृ.3 के अंत में स्पष्ट शब्दों में कहा है "रावण जब (सत्ता में) आते हैं तो पहले-2 घर में से लड़ाई शुरू होती है। जुदा-2 हो जाते हैं। उसमें ही लड़ मरते हैं। अपना-2 प्रोविंस अलग कर देते हैं।"**

**(10) युगल देवताओं की व्यभिचारी पूजा-** मम्मा-बाबा के रहते स्वर्गीय शूटिंग में हरेक सेवाकेंद्र पर याद करने के लिए सामने की ओर शिवबाबा का चित्र ही लगाया जाता था; परंतु मम्मा-बाबा के देहत्याग के बाद सन् 69/70 में ढेर के ढेर

चित्रों और शास्त्रों के हिमायती होने से व्यभिचारी याद की शूटिंग करने वाले भक्तप्रवर पंडे-पुजारियों ने भविष्य में युगलमूर्त ल.ना. बनने वाले मम्मा-बाबा के बड़े-2 जड़ चित्र लोगों के दर्शन, स्मरण और महिमा करने के लिए सर्वप्रथम मधुबन में स्थापित करा दिये। बस, फिर क्या था। 'यथा राजा तथा प्रजा' के नियमानुसार सभी सेवाकेंद्रों में मम्मा-बाबा (ल.ना.) के इन युगलमूर्त जड़चित्रों की स्थापना हो गई। जबकि ख़ास देहरूपी जड़मूर्ति से बुद्धियोग तुड़वाने के लिए अवतरित शिवबाबा ने मुरलियों में यह सख़्त डायरैक्शन दिया है -**"समझाने के लिए त्रिमूर्ति (आदि चित्रों) में तो ब्रह्मा का चित्र है ही। अलग रखने की कोई दरकार नहीं।"** ● **"इस ब्रह्मा के पास तो कुछ भी नहीं है। .... इनका चित्र रखने की भी दरकार नहीं।"**(मु. 27.2.75 पृ.2 आदि) बाबा ने ता.28.2.74 पृ.2 की मुरली के मध्य में भक्तिमार्ग की निशानी बताते हुये कहा है- **"भक्तिमार्ग में मनुष्यों की बुद्धि में अनेकों की याद आती है। शिव के (सच्चे-2) मंदिर (अर्थात् सेवाकेंद्रों और संगमयुगी भक्तों के घर-2) में जाओ तो वहाँ और भी ढेर चित्र रखे हुए होंगे। तो व्यभिचारी ठहरे न। सबके आगे सिर झुकाते रहते। (मम्मा-बाबा-दीदी-दादी आदि देहधारी) गुरुओं की भी मूर्ति बनाकर रखते हैं।"**

**(11) सिंगल देवताओं की व्यभिचारी पूजा-** युगलमूर्त देवताओं की अपेक्षा विपरीत लिंग वाली अकेली मूर्ति देहअभिमानियों को अधिक आकर्षित करती है। अत: जैसे द्वापर के मध्यांत तक सिंगल देवता कृष्ण की उपासना का आरम्भ हो गया ठीक वैसे ही हमारे स्त्रीबहुल यज्ञ में पुरुष चोले वाले ब्रह्मा की उपासना अधिक होने लगी। प्रत्येक सेवाकेंद्र से मम्मा का चित्र या तो हटा दिया गया या बहुत छोटे साइज में इधर-उधर रख दिया गया।

ध्यान रहे कि सीढ़ी के चित्र में युगलमूर्त देवताओं के भक्तों को ही ज़िम्मेवारी का ताज दिखाया गया है। जबकि सिंगल देवताओं के उपासकों को ताजहीन दिखाया गया है; क्योंकि उन्होंने संगमयुग में भी पवित्रता का ताज धारण करने के नियमों का उल्लंघन खुद किया था और दूसरों से भी कराया था। इसलिए बाबा ने उन्हें ता.7.3.74 पृ.2 की मुरली के आदि में सीढ़ी के चित्र में चित्रित दैत्य कहा है "कनिष्ठ हैं दैत्य। कनिष्ठ मनुष्य बैठ उत्तम मनुष्यों की महिमा गाते हैं। मंदिर बनाकर ताज वालों को बिगर ताज वाले नमन करते हैं। सीढ़ी में शायद कुछ ऐसा है चित्र।" ● "बाबा बहुत कड़े-2 अक्षर देते हैं। देवियों को भी कटारी, इतनी भुजाएँ क्यों देते हैं? जैसे रावण को भुजाएँ दी हैं वैसे देवियों को भी दी हैं। तुमको तो इतनी भुजाएँ हैं नहीं; परंतु रावण सम्प्रदाय है ना; इसलिए भुजाएँ भी दे दी हैं। रावण सम्प्रदायवासी ही उनकी पूजा करते हैं। देवियों की पूजा गोया रावण की पूजा। फिर इनसल्ट कितनी करते हैं। देवियों को सजाकर पूजा आदि कर फिर कहते हैं 'डूब जा'। नहीं डूबती तो ऊपर चढ़कर भी डुबोते हैं। कितनी नॉनसेन्स बुद्धि, आसुरी बुद्धि है।" (मु. 7.4.68 पृ.2 आदि)

**(12) कम कला वाले देवताओं की पूजा-** द्वापर अंत में कम कलाओं वाले

युगलमूर्त देवताओं की उपासना दिखाई गई है। यहाँ ध्यान रहे कि राम-सीता के अलावा सतयुग की अंतिम सात गद्दियों के सारे ही युगलमूर्त ल.ना. फेल होकर कम कलाओं वाले त्रेतायुगी देवता बनते हैं। राम-सीता सहित ये सभी फेलियर देव आत्माएँ किसी न किसी नाम-रूप से हमारी संगमयुगी दुनिया के मन-मंदिरों में, घर-गृहस्थी रूपी मंदिरों या सेवाकेंद्रों में भगत बने नामधारी ब्राह्मणों के द्वारा भगवान की तरह अभी पूजी जा रही हैं। भक्तों के लिए उनकी मनमत भगवान की श्रीमत है और उनके महावाक्य भगवान के महावाक्य हैं।

**(13) हनुमान उपासना और गणेश पूजा-** जिनकी कमर में स्थूल काम विकार की निशानी पूँछ और जिनके मुख में दृष्टि-वृत्ति की चंचलता रूपी देहभान की निशानी सूँड़ प्रत्यक्ष रूप में दिखाई पड़ती है। ऐसे जानवरों सा खूँख़ार स्वभाव धारण करने वाले हाफकास्ट ब्राह्मणों को मंदिरों रूपी सेवाकेंद्रों में बिठाकर उनकी भगवान की तरह पूजा-उपासना और महिमा की जाती है। यह अज्ञान का महामोहान्धकार अन्धश्रद्धालु और अंधविश्वासी भक्तजनों द्वारा 40 वर्ष की सतयुगी शूटिंग में कलियुगी शूटिंग के दौरान सन् 73/74 से शुरू होता है।

**(14) मनुष्य द्वारा मनुष्य की पूजा-** साधारण से साधारण ज्ञानरंग से रंगा हुआ रंगीला मनुष्यगुरू जिसे कोई गद्दी न मिली हो वह यदि किसी व्यक्ति को सफ़ेदपोश ब्रह्माकुमार बनाने में सफल हो जाता है तो वह भी भगवान की तरह अपनी पूजा करवाने में नहीं चूकता। यहाँ तक कि उस तथाकथित भगवान का वह पुजारी निमित्त बनी टीचर की ही नहीं बल्कि अपने उस रंगीले गुरू की भेंट में सद्गुरू शिवबाबा की मुरली रूपी महावाक्यों की भी खुलेआम अवहेलना कर जाता है। सीढ़ी के पुराने चित्र में चित्रित इस तरह की 'व्यभिचारी भक्ति' की पराकाष्ठा वाला गुरू-चेले का चोली-दामन का साथ हर सेवाकेंद्रों में देखने को मिलेगा।

**(15) पाँच तत्वों की पूजा माना भूतपूजा-** कलियुग मध्यान्त की शूटिंग में अग्नि-जल-जड़ वृक्ष (मिट्टी) आदि जड़ तत्वों की पूजा दिखाई गई है। 5 तत्वों के संघात (समूह) का सर्वश्रेष्ठ नमूना मनुष्य का शरीर है। इन 5 तत्वों से बने जड़ शरीर रूपी मूर्ति की पूजा को बाबा ने 'भूत पूजा' कहा है। यज्ञ की सामूहिक सेवा करना दूसरी बात है; परंतु किसी से व्यक्तिगत सेवा लेना या देना श्रीमत के विपरीत है। चाहे वह कपड़ा धोने, बर्तन माँजने, खाना बनाने, या तेल मालिश करने आदि किसी भी प्रकार की व्यक्तिगत सेवा क्यों न हो। शिवबाबा ने ता.26.10.76 पृ.3 की मुरली के अंत में साफ़ कहा है "कई हट्टी-कट्टी ब्राह्मणियाँ कपड़े भी धुलवाती हैं। बर्तन भी साफ़ करवाती हैं। वास्तव में उनको सभी कुछ अपने हाथ से करना है। तबीयत की बात अलग है। यहाँ सभी सुख ले लेंगे तो वहाँ (अब आने वाले संगमयुगी 21वें हीरे तुल्य सर्वश्रेष्ठ जन्म में) सुख गँवा देंगे। यहाँ ही नवाब बन जाती हैं।" प्राय: करके गद्दीनशीन देहधारी धर्मगुरुओं द्वारा सेवाकेंद्रों में भोली-भाली माताओं और घर-गृहस्थ छुड़वाकर अधीन

बनाई गई कन्याओं से यज्ञसेवा के नाम पर इस प्रकार की जोर-ज़बरदस्ती वाली भूत (प्रेत)/व्यक्तिगत पूजा कराई जा रही है जिसका सर्वथा बहिष्कार होना ही चाहिये; क्योंकि बाबा ने मुरली में कहा है- "शरीर पूजा का मतलब हिरण्यकश्यप की पूजा।"

**ओमशांति। ओमक्रांति।**

**।।ॐ शान्ति।। ।।परम+आत्मा प्रत्यक्षता बॉम्ब।। शिवबाबा याद है।**

# नगाड़ा नं.11

# सावधान! हम ब्राह्मणों के संगमयुगी यज्ञ में रावणराज्य की कलियुगी तामसी शूटिंग

हम ब्राह्मणों के यज्ञ में चलने वाली भक्तिमार्गीय रावणराज्य की कलियुगी तमोप्रधान निशानियाँ इस प्रकार हैं:-

**(16) सच्चे सोमनाथ की लूट-** 40 वर्ष की सतयुगी शूटिंग में द्वापरयुग की शूटिंग के दौरान सन् 1966 में गुजरात का जो सबसे पहला प्रभुपार्क पालड़ी सेवाकेंद्र रूपी सच्चा सोमनाथ मंदिर राजा विक्रमादित्य की आत्मा ब्रह्मा द्वारा मधुबन ज्ञान सागर के कंठे पर अखूट धन-सम्पत्ति लगाकर बनाया गया था वही भारत का जगप्रसिद्ध मंदिर सतयुगी शूटिंग में कलियुग की शूटिंग के दौरान ब्राह्मण परिवार में मुस्लिम धर्म के संस्कारों वाली आत्माओं द्वारा लूट लिया जाता है। लगातार मुसलमानी आक्रमणों की चोट सहन करते-2 भयंकर तोड़-फोड़ के बावजूद भी आज तक किसी तरह एक साधारण मंदिर जैसी गीता पाठशाला के रूप में उसका अस्तित्व बना हुआ है; क्योंकि उसी एकमात्र मंदिर की स्थापना में जगतपिता शिव-शंकर और जगतमाता ब्रह्मा के धन और संकल्प शक्ति का भरपूर अविनाशी बीज पड़ा हुआ है जो मिट नहीं सकता।

**(17) गुड्डी पूजा डूबी जा की शूटिंग-** जैसे भक्तिमार्ग में चलने वाले सारे ही कर्मकांड रूपी आडम्बर संगमयुग की यादगार है अर्थात् हम ब्राह्मणों ने जो कर्म किये हैं उन्हीं की यादगार है, ठीक वैसे ही गुड्डियों की पूजा करके उन्हें डुबो देने की दर्दनाक प्रक्रिया भी संगमयुगी भक्तों द्वारा चैतन्य गुड़ियों रूपी ब्रह्माकुमारियों के साथ संगमयुग के अंत में होने वाले सलूक का ही यादगार है। कितना विचित्र ड्रामा है कि सिर्फ़ पतित होने से बचाने के लिए जिन कन्याओं-माताओं को गृहस्थी रूपी कलियुगी कीचड़ से उठाकर आश्रमों रूपी सजे-सजाये मंदिरों में लाकर रखने के लिए जो गृहस्थी ब्रह्माकुमार-कुमारी रूपी संगमयुगी भक्तजन निमित्त बनते हैं वे अपनी ही अंधश्रद्धा के कारण अनावश्यक रॉयल्टी से भरपूर भोजन-वस्त्र और तीमारदारों की व्यवस्था करके उन कन्याओं-माताओं को ज़रूरत से ज़्यादा सर-माथे पर चढ़ाने की भारी भूल

कर बैठते हैं। वे अल्पकाल के लिए साक्षात् भगवती देवी का रूप धारण करने वाली इन गुड़ियों की पूजा में लाखों रुपये बरबाद करते हुये इतने अलमस्त हो जाते हैं कि अपनी गृहलक्ष्मी और बालगोपालों की दुर्दशा का भी ध्यान नहीं रखते।

ता.19.10.75 की अ.वा. पृ.201 के आदि में बाबा ने कहा है "गुड़ियों के खेल में इतने मस्त कि यदि कोई (बाप के) घर का सही रास्ता बतावे तो कोई सुनने के लिए तैयार नहीं"; परंतु आख़िरीन धूम-धड़ाके से प्रत्यक्ष होने वाले ज्ञान सागर बाप के ज्ञान दर्पण में जब उन देवियों के वेश में जन्म-जन्मांतर के आसुरी संस्कार तथा बाप से विमुख करने का पार्ट प्रत्यक्ष होता है तो उनका सारा पद-मान-मर्तबा उन देवी पूजा करने वाले भक्तजनों द्वारा ज्ञान सागर के ज्ञानजल में डुबो दिया जाता है। यहाँ तक कि यदि वे गुड़ियाँ साधारण प्रयत्न से नहीं डूबतीं तो बुद्धि रूपी पाँव से ज़बरियन दबाकर डुबो दिया जाता है।

**(18) पतित-पावनी जय मेरी गंगा मैया-** (संगमयुगी) भगत लोग (चैतन्य ज्ञान) सागर की अनुपस्थिति में (चैतन्य ज्ञान) नदियों को ही पतित-पावनी समझ बैठते हैं। बाबा ने ता.22.2.76 पृ.3 की साकार मुरली में कन्याओं-माताओं को नदी कहा है। जब कभी किसी नगर (अर्थात् उस सेंटर) के नज़दीक से कोई नामी-ग्रामी (चैतन्य ज्ञान) नदी गुज़रती है तो कलियुगी (शूटिंग करने वाले) भक्तजन (ज्ञान) सागर (बाप की मुरलियों) के शुद्ध बरसाती (ज्ञान) जल को भी छोड़ जाते हैं और भाँति-भाँति के तमोप्रधान मनुष्यों (की दृष्टि-वृत्ति) का कचड़ा धारण करने वाली उस नदी को पतित-पावनी समझकर गऊ-मुख (मुरली) का स्नान करने के लिए सच्चे-2 शिवालय (अर्थात् सेवाकेंद्र) को भी श्मशान घाट बना देते हैं।

बाबा ने मुरली में साफ़ कहा है "उन (ज्ञान) नदियों में तो गंदे नालों (रूपी भ्रष्टाचारी मनुष्यों की गंदी दृष्टि-वृत्ति) का गंदा कचड़ा पड़ता रहता है। स्वच्छ होकर (आबू जैसे) पहाड़ों से आती हैं। फिर (मेले मलाखड़ों से) मलेच्छ होकर (ज्ञान) सागर में जाती हैं।"

**(19) कुम्भ के मेलों में मैला-** महाकामी और क्रोधी होने के कारण जिनकी कामेन्द्रिय (से की गई गंदी हरकतों) का आवरण प्राय: करके सब (ब्रह्मा वत्सों) के सामने खुला रहता है ऐसे धक्कड़ी अर्थात् (यज्ञ में) धाक जमाने वाले बेपरवाह नागाओं द्वारा 40 वर्ष की सतयुगी शूटिंग में तमोप्रधान अवस्था वाली शूटिंग की शुरूआत (सन् 73 के अंत में) कुम्भ के मेलों द्वारा (रूहानी) गवर्मेंट के लाखों रुपये के खर्चों से कराई जाती है। इसलिए ता.7.1.77 पृ.1 की मुरली के आदि में बाबा ने कहा भी है "जो कुम्भकरण की अज्ञान नींद में बहुत जास्ती सोये हुए हैं वही कुम्भ का मेला मनाते रहते हैं। यह नागे साधु लोग कुम्भ का मेला लगवाते हैं.....उन्हों की फिर मीटिंग होती है।"

भक्तिमार्गीय रावणराज्य में ही (चैतन्य ज्ञान) नदियों के किनारे प्राय: नामी-ग्रामी शहरों में घड़ी-2 मेले-मलाखड़े लगते रहते हैं। स्वर्गीय रामराज्य की शूटिंग काल

मम्मा-बाबा के जमाने में ऐसा नहीं होता था। वहाँ तो ज्ञान नदियों की बजाय चैतन्य ज्ञान सागर के किनारे मधुबन 'स्वर्ग आश्रम' में आत्मा-परमात्मा का सच्चा मिलन-मेला होता था जिससे आत्मा की कट उतरती थी। जबकि मेलों में आने वाले ढेर के ढेर तमोप्रधान मनुष्यों (की गंदी दृष्टि-वृत्ति) का कचड़ा ढोने वाली (ज्ञान) नदियों में स्नान करने से लोग और ही गंदे हो जाते हैं। इसलिए बाबा ने मुरली में साफ़ कहा है "यह (मधुबन) है आत्माओं और परमात्मा का मेला। उन (नदियों के) मेलों में तो मैले हो पड़ते हैं।" 4 मई सन् 74 पृ.1 की मुरली के अंत में बाबा ने कहा है "अभी तो भक्ति की कितनी धूमधाम हो गई है। मेले-मलाखड़े भी लगते हैं तो मनुष्य जाकर दिल बहला आवे।"

**(20) तीर्थ यात्राएँ-** शिवबाबा और उनके रूहानी पंडे अर्थात् सच्चे पांडव तो बुद्धिरूपी पाँव से बेहद की मधुरता और वैराग्य वृत्ति से भरपूर स्वीटहोम अर्थात् रूहानी मधुबन (परमधाम) की यात्रा करना सिखाते हैं। जबकि जिस्मानी अर्थात् देहाभिमानी पंडे-पुजारी जिस्मानी भरण-पोषण के लिए आबू तीर्थ तथा अन्य सेवाकेंद्रों की जिस्मानी यात्राएँ कराते हैं।

शिवाचार्योवाच भी है "बाबा थोड़े ही तुमको कहेंगे कि जिस्मानी (मधुबन की) यात्रा पर चलो या जाओ।" (मु.13.5.73 पृ.1 अंत) बाबा ने मुरली में कहा है -"यह गुरू आदि जो भी हैं जिस्मानी यात्रा पर ले जाने वाले हैं।" ● "जिस्मानी पंडों को (मधुबन आदि) तीर्थ कितने याद पड़ जाते हैं; क्योंकि घड़ी-घड़ी जाते हैं।" (मु. 4.9.73 पृ.1 मध्य)

● "परमात्मा कोई (आबू) पहाड़ (पर) तो नहीं बैठा है।.....(मम्मा-बाबा के) जड़ चित्रों का दर्शन करने जाते हैं।" (मु.4.9.73 पृ.3 आदि)

● "बाप कहते हैं जो (तीर्थों के) धक्के खाते हैं वे मुझे नहीं जानते हैं। उन (जिस्मानी गुरू-भक्तों) को पता नहीं है कि बाप (पढ़ाई) पढ़ाकर वर्सा दे रहे हैं विश्व का मालिक बनाने। तुम (यज्ञ से देश निकाला पाये हुये पांडव) अभी धक्के खाने से छूट गये हो।" (वर्सा पाने के लिए तीर्थों में गुरुओं के धक्के खाने की दरकार नहीं) मु.2.6.73 पृ.3 मध्य)

**(21) (दृष्टि-वृत्ति का) व्यभिचार और भ्रष्टाचार-** सन् 69 से पहले निराकार राम बाप के राज्य में भरपूर शुद्ध और सहज ही (योगरूपी) खुराक मिलती थी। जबकि इस माया रूपी रावण के राज्य में हठपूर्वक कठोर पुरुषार्थ करने पर भी लोगों को सड़ी-गली कचड़े वाली खुराक भी (बुद्धिरूपी) पेट भर नहीं मिल पाती; क्योंकि प्रजा के उद्धारमूर्त बन बैठे फूड मिनिस्टर्स (रूपी योगमास्टर्स ही दृष्टिगत) भ्रष्टाचार फैलाने के निमित्त बन पड़ते हैं। ध्यान रहे कि शिवबाबा ने कभी किसी मुरली में यह नहीं कहा कि छोटी-छोटी नौजवान कन्याओं/माताओं के द्वारा सामने बैठे भाँति-भाँति के मनुष्यों को इन जिस्मानी आँखों से घंटों तक दृष्टि का दान देना ही सहज राजयोग

है। शिवबाबा ने तो मुरलियों में बार-2 इस बात का विरोध ही किया है। कोई माने या न माने यह दूसरी बात है; क्योंकि बाबा ने कहा है "इन गुह्य बातों को जो इस (हट्टी आदि सनातनी) कुल के होंगे वे मानेंगे और जो ईश्वरीय कुल के न होंगे, वे विघ्न डालेंगे.........लड़ेंगे। कहेंगे यह तो (मम्मा-बाबा से दृष्टि देने की) रसम चली आ रही है।"

पुराने सीढ़ी के चित्र में "हाय बचाओ शिवबाबा" के नाम की पुकार लगाने वाली द्रौपदी रूपी (सच्ची) ब्रह्माकुमारी का लज्जा रूपी आवरण खींचते हुये कोई सफ़ेदपोश वेशभूषा वाला दु:शासन रूपी परम प्रसिद्ध (झूठा) ब्रह्माकुमार दिखाया गया है जिसने शरीर रूपी वस्त्र को गंदा करके उस द्रौपदी को पतित अवस्था में डाल रखा है। उस दु:शासन के बुद्धि रूपी हाथ में नैन कटारी दिखाई गई है जिसका तात्पर्य है कि दृष्टि-वृत्ति को विकारी बनाने के लिए प्राय: करके वे कीचक समान पुरुष ही ज़िम्मेवार हैं, जो ईश्वरीय सेवा के बहाने से अपना घर-बार छोड़कर मंदिरों रूपी आश्रमों के एकांत वातावरण में हर समय द्रौपदी रूपी ब्रह्माकुमारियों का संग करने के लिए पीछे पड़ जाते हैं। वरना क्या अपने घर-गृहस्थ में रहकर ईश्वरीय सेवा में सम्पूर्ण समर्पण नहीं हुआ जा सकता? ख़ास ऐसे पुरुषों ने ही ब्रह्माकुमारी आश्रमों में सहज राजयोग के नाम पर शिवबाबा की श्रीमत के ख़िलाफ़ नैनकटारी चलाने का व्यभिचारी धन्धा चलाया हुआ है; क्योंकि शिवबाबा ने कहा है सभी पुरुष दु:शासन हैं। कन्याएँ-माताएँ प्राय: करके द्रोपदियाँ हैं। काम विकार के लिए पुरुष ही पहल करता है। स्त्रियों में लज्जा और भावना रहती है। ता.7.3.78 पु. 2 मध्य की मुरली में बाबा ने कहा है- "पहले पहले चंचलता पुरुषों में आती है। स्त्रियों में लाज रहती है।"

यहाँ सीढ़ी के चित्र में चित्रित दु:शासन ने अपने बुद्धि रूपी पाँव से द्रौपदी के बुद्धि रूपी पाँव को दबोच रखा है जिसका तात्पर्य है कि विकारी बुद्धि पुरुष वर्ग ही भोली-भाली कन्याओं-माताओं के सहज बुद्धि पर हावी होकर मनमानी एक्टीविटी पर उतर जाता है। कितना विचित्र ड्रामा है। कन्याओं-माताओं की रक्षा के लिए रखे जाने वाले रक्षक (guards) ही तमोप्रधान कलियुगी शूटिंग में भक्षक बन जाते हैं। शायद इसलिए अ.बापदादा ने सावधानी दी थी कि "पांडवों को गार्ड बनाकर शक्तियों की रखवाली के लिए निमित्त बनाया हुआ है। पांडवों को पीछे रहकर शक्तियों को आगे करना है। गाइड नहीं बनना है। गार्ड बनना है। जब पांडव गाइड बनते हैं तो गड़बड़ होती है। इसलिए पांडव सेना को गार्ड बनना है।" (अ.वा.2.4.70 पृ.235 मध्य)

**(22) नेति नेति की शूटिंग-** शिवाचार्योवाच है कि (ईश्वरीय ज्ञान के मूँझे हुये गहन प्रश्न किये जाने पर सन् 51 से 68 तक 18 वर्ष नित्यप्रति 18 अध्यायी सच्ची गीता-मुरलियाँ सुनने/सुनाने वाले) "प्राचीन ऋषि-मुनि जो शास्त्रों(रूपी मुरलियों) की अथारिटी होते हैं वह रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अंत को नहीं जानते।"
●"कहते हैं नेति-नेति, तो नास्तिक ठहरे न।" (बाबा ने अभी राज़ नहीं खोला है ऐसा

कहकर बाप का नाम ही बदनाम कर देते हैं) जबकि अ.बापदादा ने साफ़ कहा है कि बाप ने अपने पास कुछ भी नहीं रखा है। ● "भक्त लोगों को जब कोई कार्य मुश्किल लगता है तो भगवान के ऊपर रख देते हैं ना! सहज में स्वयं और मुश्किल में भगवान। अब तो बाप ने सर्वशक्तियों का और सर्व कर्तव्यों का आपको निमित्त बना दिया है ना!......जो बाप की ज़िम्मेवारियाँ रही हुई हैं वह अब तुम बच्चों की हैं।" (अ.वा. ता.24.4.74 पृ.30 आदि)

**(23) पितर प्रवेश-** मम्मा-बाबा ही हमारे इस बेहद ब्राह्मण परिवार के पितर हैं। इन पितरों की आत्मा का हम ब्राह्मणों में प्रवेशता का पार्ट, पतन की ओर जाने वाले भक्तिमार्गीय रावण राज्य (की शूटिंग) में ब्राह्मणों के व्यभिचारी बन जाने के कारण बिल्कुल बंद हो जाता है। बाबा ने मु. में कहा है "(आबू आदि) तीर्थों में पहुँचकर आत्माओं को बुलाकर बहुत पूछते थे; परंतु अब तो आत्माओं के तमोप्रधान होने से आत्मा की प्रवेशता नहीं होती।" ●"कोई मरता है तो पितर खिलाते हैं। फिर उनसे बैठ पूछते हैं फलानी चीज़ कहाँ छोड़ गए हो? आगे बोलते थे। सभी बुलाते थे। अभी तो तमोप्रधान हो गए हैं। आगे खास तीर्थों पर जाते थे, आत्मा को बुलाते थे। (मु.17.4.70 पृ.2 मध्य) सर्वविदित है कि संगमयुग में सतयुगी शूटिंग में द्वापरयुगी शूटिंग के दौरान किसी में मम्मा और किसी में बाबा की 'पधरामनी' के समाचार मिलते ही रहते थे। बाद में यह पार्ट बंद हो गया। ऐसे ही अ.बापदादा की 'पधरामनी' पहले बहुत होती थी। धीरे-2 कम होते-2 अब एक ही सीजन में सिर्फ़ महीने में एक/दो बार उनका आना होता है। अ.वा.24.12.72 पृ.387 अंत में अ.बापदादा ने कहा भी था "अब व्यक्त द्वारा अव्यक्त मिलन भी (धीरे-2) समाप्त होता जावेगा।"

**(24) दूध की जगह खून की नदियाँ-** जहाँ राम (अर्थात् ब्रह्मा) राज्य में मुफ़्त (ज्ञान) दूध की शुद्ध नदियाँ बहती थीं वहीं माया रूपी रावणराज्य में भारी कीमत चुकाने पर भी (रूहानी) बच्चों के लिए शुद्ध दूध (रूपी मुरलियों) में कटौती होने के कारण (बुद्धि रूपी पेट का) समुचित आहार न मिलने से (व्यर्थ संकल्पों के) खून की नदियाँ बहा करती हैं।

**(25) पुराने शास्त्र-चित्र-भंडार नाश-** कलियुग की शूटिंग में मुसलमानों, इसाइयों और अंधश्रद्धालु भक्तों द्वारा प्राचीनतम् शास्त्र, चित्र, मूर्तियों आदि के भंडार या तो समूल नष्ट कर दिये जाते हैं या फिर मनमाने ढंग से काट-छांट दिये जाते हैं। यहाँ तक कि घोर कलियुगी (शूटिंग) काल में गुह्य ज्ञान के राज़ खुलने पर प्राचीन शास्त्र (अर्थात् मुरलियाँ) चित्रादि अति दुर्लभ हो जाते हैं।

**(26) स्वर्ण नियंत्रण और चोर बाजारी-** इसी माया रूपी रावणराज्य में शिवाचार्योवाच है कि खुले आम सच्चे सोने के (ज्ञान) गहने पहनने पर (रूहानी) गवर्मेंट प्रतिबंध लगा देती है। पहनने वालों की गुप्त जाँच-पड़ताल और धर-पकड़ होने से फिर बड़े-2 महारथियों द्वारा अंदर ही अंदर चोर बाजारी और तस्करी चलती रहती

है। (मु.8.10.74 पृ.3 मध्यांत)

**(27) भाषाभेद और मतभेद-** कलह+युग (की शूटिंग) में भाषाभेद और आपसी मतभेद यहाँ तक बढ़ जाते हैं कि खुले आम कलहयुगी कलह-क्लेश, मुक़दमेबाज़ी और तानाशाही की चर्मसीमा आ जाती है। परिणामस्वरूप छोटे-2 रजवाड़ों (अर्थात् सेवाकेंद्रों) का स्वतंत्र अस्तित्व कायम हो जाता है। यहाँ तक कि कलियुग अंत में प्रजा का प्रजा पर शासन हो जाता है।

**(28) धर्म सत्ताधीशों और राज्य सत्ताधीशों की सभाएँ-** चित्र में एक ओर अंदर-बाहर से रंगे हुये धर्म गुरुओं को तथा दूसरी ओर सफ़ेदपोश बगुला पुरुषार्थियों के रूप में (यज्ञ की) राज्य सत्ता सम्भालने वाले काँग्रेसियों को जुदा-2 मीटिंग करते हुये दिखाया गया है। अपने को ज्ञान की अथॉरिटी समझने वाले धर्मगुरू लोग तो मोटे-2 धर्मग्रंथ, शास्त्र, चित्र आदि छपाने और उनका प्रचार-प्रसार आदि करने के दुनियावी साधनों का संग्रह करने के लिए धर्म-सम्मेलनों, सभा सोसाइटी आदि का निर्माण करने में जुटे हुये हैं जबकि अपने को सदाकालीन राजाई की अथॉरिटी समझने वाले (यज्ञ के) सफ़ेदपोश राज्य सत्ताधारी अपनी हिलती हुई गद्दियों को जमाये रखने के लिए बार-2 प्रमुखों की मीटिंग्स बुलाकर बालू के ढेर पर खड़े हुये अपने संगठन रूपी किले को मजबूत बनाने के असफल प्रयास में लगे हुये हैं। तभी तो ता.6.9.79 को संदेशी ब्र.कु. गुलज़ार द्वारा मधुबन में लाये गये मासिक संदेश में बाबा ने कहा है कि अब शीघ्र ही दोनों सत्ता वाले अपनी गद्दियाँ छोड़ हैंड्स अप करेंगे; क्योंकि सारे के सारे ही अयोग्य हैं।

**(29) भिखारी भारत-** धर्म और राज्य सत्ता दोनों से ही अलग, देश निकाला पाये हुये तथा सच्चाई-सफ़ाई पूर्वक ईश्वरीय आदेश पर तन-मन-धन और सर्व सम्बंधों की यज्ञ में बाज़ी लगाने वाले पांडव बनाम राम-सम्प्रदाय के प्रतीक और प्रतिनिधि के रूप में आदि सनातनी भारत (अर्थात् राम) को काँटों की शैया रूपी जंगल में दीन-हीन दशा में (बेहद के) विदेशियों की भीख पर गुजारा करते हुये दिखाया गया है। बाबा ने ता.21.9.74 पृ.2 की मु. के मध्य में कहा भी था-"इस (कलियुगी शूटिंग के) समय वह (कृष्ण उर्फ़ ब्रह्मा) कहाँ होगा? ज़रूर बेगर (में प्रविष्ट) होगा। जैसे क्राइस्ट के लिए भी कई समझते हैं कि वह बेगर के रूप में है।"

**(30) युगानुरूप भारतियों और विदेशियों की जनसंख्या में वृद्धि-** संगमयुग में 40 वर्ष की सतयुगी शूटिंग की अवधि में भी सतोप्रधान सतयुगी शूटिंगकाल कराची में यज्ञवत्सों की जनसंख्या अत्यंत सीमित रही। इसके बाद माउंट आबू आने से लेकर मम्मा-बाबा के जीवित रहने (अर्थात् सन् 51 से 68) तक के त्रेतायुगी सतोसामान्य अवस्था की शूटिंग में भी यज्ञवत्सों और ब्राह्मण परिवारों की संख्या सीमित रही; किंतु बाद में व्यभिचारी रावणराज्य के आरम्भ होते ही प्रदर्शनी, सम्मेलन आदि उत्सवों की भरमार होने से कच्चे-पक्के यज्ञवत्सों की देश में ही नहीं, विदेशों में भी बाढ़ आने लगी।

इसी तरह संगमयुग में 40 वर्ष की सतयुगी शूटिंग की अवधि के तामसी शूटिंग काल में भी मेले-मलाखड़ों से व्यभिचारी वृत्ति बढ़ने के कारण जनसंख्या विस्फोट हो पड़ा, जिसे कन्ट्रोल करने के लिए अंडर ग्राउंड रूहानी मिलिट्री के गुप्त नौजवानों को फैमिली प्लानिंग करनी पड़ रही है।

**(31) रामराज्य की राजधानी स्थापना-** ऊपर बताये गये 'फुल बैगर टू फुल प्रिंस' बनने वाले भिखारी भारत (अर्थात् राम के संगमयुगी शरीर शंकर) द्वारा परमपिता परमात्मा शिव अपने दिलतख़्त रूपी दिल्ली शहर में रामराज्य की राजधानी स्थापना का अलौकिक कर्तव्य हम बच्चों के बुद्धि रूपी क्षेत्र में इस यज्ञ के आदि में सिंध (हैदराबाद और कराची) में हुई सतयुगी शूटिंग की तरह अब सन् 1976/2006 से फिर सम्पन्न करा रहे हैं। चूँकि यह कार्य राम के संगमयुगी शरीर द्वारा निराकार शिव ही सम्पन्न करते हैं। अत: शिवाचार्योवाच है कि- "सतयुग को रामपुरी कहा जाता है। अक्षर कहते हैं; परंतु यह नहीं जानते कि राम कौन है?" (मु.6.3.75 पृ.2 अंत)

● "जिस नाम से (रामराज्य की) स्थापना होती है तो ज़रूर उनका नाम ही रखेंगे।" (मु.25.5.74 पृ.1 मध्य)

**(32) सोने की लंका में रावणराज्य का महाविनाश 1976/2006 से-** (देखिये सीढ़ी के नीचे वाले भाग में) शिवाचार्योवाच है- "रावण राज्य तो ज़रूर ख़लास होना चाहिए। यज्ञ में भी प्योर ब्राह्मण चाहिए ना।" (मु.11.1.75 पृ.3 अंत)

● "विनाश ज्वाला इस रुद्र ज्ञान यज्ञ से ही प्रज्वलित हुई है।" (मु.10.10.73 पृ.3 अंत) स्पष्ट है कि ज्ञानयज्ञ कुण्ड से विनाश ज्वाला निकलेगी तो यज्ञ कुण्ड के किनारे बैठने वाले कच्चे ब्राह्मणों को ही पहले सेंक लगेगा। दुनिया वालों को विनाश ज्वाला बाद में लगेगी। "चैरिटी बिगन्स एट होम" के नियमानुसार कचड़े का सफ़ाया भी पहले ब्राह्मण परिवार से आरम्भ होना चाहिए। सन् 66 में की गई 10 वर्षीय घोषणा (जिसकी सूचना तत्कालीन भारत सरकार को भी दी गई थी) के अनुसार हम ब्राह्मणों की वर्तमान संगमयुगी दुनिया में आसुरी प्रवृत्ति वाली ब्राह्मण आत्माओं का महाविनाश 1976/2006 से सम्पन्न हो रहा है। दूसरी ओर 108 प्रथम श्रेणी के विजयी बच्चों सहित ब्रह्मा की 1000 भुजाओं रूपी मददगार बच्चों के बुद्धि रूपी क्षेत्र में सच्चखंड (रूपी सत्यज्ञान) की संगठित और गुप्त राजधानी भी अब शीघ्र सम्पन्न होने जा रही है। अत: सब ब्रह्माकुमार-कुमारियों को दिल्ली राजधानी के दिल तख़्त पर अपना गुप्त राजभाग लेने के लिए ईश्वरीय निमंत्रण स्वीकार हो।

**ओमशान्ति। ओमक्रान्ति।**

● सबसे श्रेष्ठ दृष्टि है अनुभव की। अनुभव के नेत्र से जो देखते हैं वो कभी भी किसी के कहने से हलचल में नहीं आ सकते। देखा हुआ फिर भी सोचना पड़ेगा - पता नहीं ठीक देखा, नहीं देखा। लेकिन 'अनुभव की आँख' से देखने, अनुभव करने वाली चीज़ सदा ही यथार्थ होती है। (अ.वा. 31.12.92 पृ.154 मध्य)

||ॐ शान्ति|| || परम+आत्मा प्रत्यक्षता बॉम्ब|| शिवबाबा याद है।

# नगाड़ा नं.12

# शंकर समान ज्वालामूर्त संगठन का सार (माला) बनाने के लिए राजधानी राजयोग शिविर

## (केवल आध्यात्मिक ब्र.कु. जिज्ञासुओं के लिए)

इसी स्तम्भ में दिये अव्यक्त बापदादा के महावाक्यों के आधार पर दिल्ली की एडवांस पार्टी की बाँधेली माताओं के द्वारा दिसम्बर सन् 1981 की 27 से 30 ता. को श्रीनगर, दिल्ली-35 में राजधानी राज+योग शिविर के प्रथम अधिवेशन का सफल आयोजन किया गया। इस आयोजन का लक्ष्य था बीजरूप रुद्रमाला के विशेष प्रिय आत्माओं को संगठित करने हेतु नम्बरवार मणकों की गुप्त राजधानी प्रख्यात करने के लिए निर्बंधन और निर्भीक ब्राह्मणों का निर्विघ्न और अविनाशी संगठन का सार (माला) बनाना।

ड्रामा प्लेन अनुसार सन् 1980/81 से सम्पूर्ण भारत के कोने-2 से चुने जा रहे रूहानी पार्लियामेंट के सदस्यों में से आमतौर पर सिर्फ़ उत्तर भारत के 50/55 भाई-बहनों को इस पहले अधिवेशन में उपस्थित होने के लिए दिसम्बर सन् 81 के तीसरे सप्ताह में अचानक ही आमंत्रित किया गया। उनमें से शिविर में ऐसे मौके पर नं.वार उपस्थित होने वाले यज्ञ प्रति ज़िम्मेवार कुल बंधनमुक्त सदस्यों की संख्या (निमंत्रण देने वाली दिल्ली की माताओं को छोड़कर) 12 थीं। जिनमें 8 यू.पी. से और शेष 4 दिल्ली के स्थानीय सदस्य थे। इन सभी उपस्थित 12 सदस्यों ने अधिवेशन के अंत में ध्वनि सम्मति से एकमत होकर अपने-2 हस्ताक्षर आपस में एक-दूसरे को देते हुये नीचे लिखे 12 प्रस्ताव पास किये, जो इस प्रकार हैं:-

**प्रस्ताव नं.1** - ब्रह्मा मुख से माउंट आबू में उच्चारी गई बापदादा की प्रमाणिक मुरलियों एवं अव्यक्त वाणियों को ही श्रीमत् कहा जायेगा। अन्य किसी देहधारी द्वारा उच्चारे हुए वाक्यों को श्रीमत नहीं कहा जा सकता। **"श्रीमत से सद्गति, मनुष्यमत से दुर्गति।"**

**प्रस्ताव नं.2 - ब्रह्मा (बड़ी माँ) और प्रजापिता- यह दोनों अलग-2 आत्माएँ हैं।**

**प्रस्ताव नं.3** - सतयुगी राधा-कृष्ण की आत्मायें संगमयुग में ब्रह्मा-सरस्वती का और त्रेतायुगी राम-सीता की आत्माएँ संगमयुग में शंकर-पार्वती/संगमयुगी ल.ना. का प्रैक्टिकल पार्ट बजाती हैं।

**प्रस्ताव नं.4** - बापदादा द्वारा मुरलियों में की गई पूर्व घोषणा के अनुसार

त्रिमूर्ति शिव की दूसरी मूर्ति शंकर द्वारा ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में से आसुरी स्वभाव-संस्कार वाली आत्माओं का स्पष्ट विनाश (अर्थात् अनिश्चय बुद्धि विनश्यते रूपी विघटन) सन् 76 से ही हो रहा है।

**प्रस्ताव नं.5** - मम्मा-बाबा के शरीर छोड़ने के बाद ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में ब्रह्मा और ब्राह्मणों की अज्ञान अंधकार रूपी रात्रि अर्थात् उतरती कला चल रही है।

**प्रस्ताव नं.6** - शंकर-पार्वती संगमयुग के इसी ईश्वरीय जन्म में इसी पुरुषार्थी शरीरों द्वारा नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनते हैं और सतयुग में उनके बच्चे ही राधा-कृष्ण बनेंगे अर्थात् राम-सीता की आत्माएँ सतयुगी फर्स्ट जन्म में माँ-बाप के रूप में राधा-कृष्ण के फर्स्ट क्लास दास-दासी का पार्ट बजाती हैं।

**प्रस्ताव नं.7** - सतयुग फर्स्ट जन्म के राधा-कृष्ण जैसे सभी देवताई बच्चों के माँ-बाप की कंचन काया इसी संगमयुगी ईश्वरीय जन्म के वर्तमान शरीरों द्वारा बनेगी।

**प्रस्ताव नं.8** - संगमयुगी राधा-कृष्ण और सतयुगी राधा-कृष्ण का पार्ट अलग2 है। शंकर-पार्वती ही संगमयुगी राधा-कृष्ण हैं।

**प्रस्ताव नं.9** - नं.वार अंतिम 7 सतयुगी ल.ना. ही द्वापर एवं कलियुग में परमधाम से उतरने वाले नं.वार सात विधर्मी धर्मपिताओं के आधारमूर्त बनते हैं।

**प्रस्ताव नं.10 -संगमयुग में आधारमूर्त तथा बीजरूपी आत्माओं में से काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के सबसे अधिक वशीभूत होने वाले** ब्रह्मावत्स ही संगमयुग में क्रमशः 5 स्त्रीमुख (आधारमूर्त आत्माएँ) और 5 पुरुषमुख (बीज रूप आत्माओं) वाले दशानन रावण का साक्षात् पार्ट बजाते हैं।

**प्रस्ताव नं.11** - मम्मा-बाबा के शरीर छोड़ने (अर्थात् साकार दुनिया वालों की नजरों से गुप्त होने) के बाद हम ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में गद्दीनशीन देहधारी गुरुओं द्वारा भक्तिमार्गीय रावणराज्य की शूटिंग चल रही है।

**प्रस्ताव नं.12** - जिस्मानी आँखों से दृष्टि लेने-देने का धंधा संगमयुगी देहधारी गुरुओं की अपनी मनमत है। शिवबाबा की श्रीमत नहीं। बाबा ने भी तारीख 15.4.74 पृ.4 की मु. के अंत में साफ़ कहा है, "बाप कहते हैं, मैं एक-2 आत्मा को सकाश देता हूँ। सामने बैठ लाइट देता हूँ। तुम तो ऐसे नहीं करेंगे।"

उक्त प्रोग्राम के सम्बंध में अव्यक्त बापदादा के महावाक्य इस प्रकार हैं:-

## (1) प्रोग्राम का लक्ष्य-

**(i) एक भी (छोटा सा) पावरफुल संगठन होने से एक-दूसरे को खींचते हुए (नव रत्नों के 12-12 के ग्रुप मिलकर अंत में 9X12=) 108 की माला का संगठन एक हो जावेगा। (सिर्फ़) एक मत का धागा हो और संस्कारों की समीपता हो तब ही माला भी**

**शोभेगी।** (अ.वा.9.12.75 पृ.272 मध्य)

(ii) **एक-दो मिलकर 12 हो जावेंगे ऐसा हाई जम्प लगाओ, तब ही बाप समान बेहद के सेवाधारी बनेंगे।................अलग-2 ग्रुप बनाओ। जैसे शुरू में पुरुषार्थियों के ग्रुप थे। हम शरीक (एक जैसे) पुरुषार्थियों के ग्रुप हों।** (अ.वा.23.11.79 पृ.43 अंत, 44 आदि)

(iii) पंजाब (में बीज बोने) वालों को 12 ही मास के 12 ही फल देने चाहिए। (अ.वा.7.1.80 पृ.183 अंत)

(vi) **तुमको रुद्रमाला में पिरोना है।......तुम अब जानते हो यह है रुद्रमाला और ज्ञानी तू आत्माओं की माला। (मु.8.3.73 पृ.3 मध्यांत)**

(v) **पहले-पहले रुद्र की माला बनती है। (मु.17.12.69 पृ.2 आदि)**

(vi) नॉलेजफुल स्टेज अर्थात् सारी नॉलेज के हरेक प्वाइंट के अनुभवी स्वरूप बनना। (अ.वा.15.3.81 पृ.46 आदि)

(vii) ''विस्तार तो अच्छा बना रही हो। अब संगठन का सार (माला) बनाना है।......अब ऐसा (संगठन का) किला मज़बूत करो। इतना किला पक्का हो जो माया की हिम्मत ही न रहे।'' (अ.वा.28.11.79 पृ.62 मध्य, 63 अंत)

(viii) ''ऐसा अविनाशी संगठन बनाओ जो कोई भी कम्पलेंट न रहे। वृद्धि बहुत कर रहे हो, सिर्फ़ विघ्न-विनाशक बनो और बनाओ।'' (अ.वा.3.12.79 पृ.80 अंत, 81 आदि)

(ix) ''अब विस्तार ज़्यादा हो रहा है इसलिए वारिस छिप गये हैं। अब उनको प्रत्यक्ष करो। समझा-(जिसके अज्ञान की रात गुज़र गई हो) गुजरात को क्या करना है। दूसरे सम्पर्क में लावें, आप सम्बंध में लाओ तो नम्बरवन हो जायेंगे। इस वर्ष का प्लैन भी बता दिया। अभी विस्तार में बिज़ी हो गये हैं। जैसे वैराइटी वृक्ष बढ़ता है तो बीज छिप जाता है और फिर अंत में बीज ही निकलता है। विस्तार में ज़्यादा बिज़ी हो गये हो। अब फिर से बीज अर्थात् (108) वारिस क्वालिटी निकालो। जो आदि में (माला बनाते थे) सो अंत में करो।'' (अ.वा.21.1.80 पृ.230 अंत, 231 आदि)

(x) ''शुरू में भी स्थापना के समय अख़बार में क्या डलवाया था? लोगों ने कहा, 'ओम (आ+उ+म=ब्र.वि.शंकर) मण्डली' गई कि गई और बाप ने डलवाया ''ओम मंडली सारे वर्ल्ड में (दि) रिचेस्ट है, मालामाल है, सब भूख मर सकते हैं; लेकिन बाप के बच्चे भूखे नहीं मर सकते; क्योंकि (डायरैक्ट अमरनाथ शिवशंकर से) 'अमर भव' का वरदान मिला हुआ है।'' (अ.वा.30.1.79 पृ.252 मध्य)

(xii) ''यह 80 का वर्ष विशेष हर (ज्ञानी तू) आत्मा को यथा योग्य वर्सा देने का वर्ष है।.....इस वर्ष में......तन-मन-धन, समय आदि जो भी है, सब लगाकर फाइनल सर्व आत्माओं में से सिलेक्ट करो.....जो जिसके योग्य है उनको वैसा ही

संदेश दे फाइनल करो। अभी सेवा की फाइल फाइनल करो.....सिलेक्शन की मशीनरी तेज़ करो। देखेंगे, कितने में फाइल तैयार करते हो? पहले विदेश फाइल तैयार करता है या देश? जिसको जिस धर्म में जाना है, स्टैम्प लगा दो। (अ.वा.18.1.80 पृ.219 से 221)

(xii) ''ब्रह्मा बाप के तीव्र पुरुषार्थ के संस्कार को तो जानती हो, आज भी बाबा बोले- अब माला तैयार करो। माला तैयार होना अर्थात् खेल ख़तम।......100 की माला फिर भी 90 परसेंट बन गई; लेकिन 8 की माला में बदली बहुत थी.....मतलब तो आज ब्रह्मा बाप को माला तैयार करने का तीव्र संकल्प था। (अ.वा.18.1.79 पृ.230 मध्य, 231 अंत)

## (2) संगठन का जैसा लक्ष्य वैसा लक्षण

(i) ''नॉलेजफुल बंधन में कैसे रह सकते हैं? जैसे दिन और रात इकट्ठा नहीं रह सकते.....जब ब्रह्माकुमार-कुमारी बन गये तो बंधन कैसे हो सकता? ब्रह्मा बाप निर्बंधन है तो बच्चे बंधन में कैसे रह सकते?'' (अ.वा.19.3.81 पृ.75 आदि)

(ii) ''**निमित्त मात्र डायरैक्शन प्रमाण प्रवृत्ति में रह रहे हो, सम्भाल रहे हो; लेकिन अभी-2 ऑर्डर हो कि चले आओ तो चले आयेंगे या बंधन आयेगा? सभी स्वतंत्र हो? बिगुल बजे और भाग आयें, ऐसे नष्टोमोहा हो?** ज़रा भी 5 परसेंट भी अगर मोह की रग होगी तो 5 मिनट देरी लगायेंगे और (नं.) ख़त्म हो जायेगा; क्योंकि सोचेंगे, निकलें या न निकलें। तो सोच में ही समय निकल जायेगा। इसलिए सदा अपने को चैक करो कि किसी भी प्रकार का देह का, सम्बंध का, वैभवों का बंधन तो नहीं है। जहाँ बंधन होगा वहाँ आकर्षण (खींचतान) होगी। इसलिए बिल्कुल स्वतंत्र। इसको ही कहा जाता है- बाप समान कर्मातीत स्थिति।'' (अ.वा.10.12.79 पृ.104 अंत)

(iii) ''निर्बंधन आत्मा ही ऊँची स्थिति का अनुभव कर सकेगी। बंधन वाला तो नीचे ही बंधा रहेगा, निर्बंधन ऊपर उड़ेगा। सभी ने अपना पिंजड़ा तोड़ दिया है। बंधन ही पिंजड़ा है।.......कोई भी मेरापन है तो पिंजड़े में बंद हो। अभी पिंजड़े की मैना नहीं, स्वर्ग की मैना हो गई।.......जब बाप के बच्चे बने तो बच्चा अर्थात् स्वतंत्र।
(अ.वा.5.12.78 पृ.106 आदि,मध्य)

(iv) ''जो हर कल्प की अति समीप आत्माएँ वा पद्मापद्म भाग्यशाली आत्माएँ हैं उनकी रूप-रेखा और वेला क्या होती है वह जानते हो? ऐसी आत्माएँ सेकिंड में पहुँची और बाप की बनीं।........अभी भी परिवर्तन की मार्जिन है। अभी टू लेट का बोर्ड नहीं लगा है।......लास्ट चांस है। इसलिए बीती सो बीती करो, भविष्य को श्रेष्ठ बनाओ। इसलिए बापदादा फिर भी सबको चांस दे रहे हैं, फिर उलहना नहीं देना- हम कर सकते थे; लेकिन किया नहीं, समय नहीं मिला, सरकमस्टांसिज नहीं थे। अभी भी रहमदिल बाप के रहम का हाथ सबके ऊपर है इसलिए अपने ऊपर भी रहमदिल

बनो। (अ.वा.21.12.78 पृ.143 से 145)

**(v)** निर्भीकता- ''शेर की विशेषता है अकेले होते हुए भी अपने को बादशाह समझते हैं अर्थात् निर्भय होते हैं। तो पंजाब के (बीजरूप) निवासी ऐसे निर्भय हैं ना।.....पंजाब (राजधानी की) स्थापना के आदि में अपना विशेष शक्ति रूप का दृश्य अच्छा दिखलाया। अनेक प्रकार की हलचल में भी अचल रहे हैं; क्योंकि पंजाब की धरनी (माता) विशेष धर्म की धरनी है, ऐसे धर्म की धरनी में आदि सनातन धर्म की स्थापना करना इसमें सामना करके विजयी बने हैं।.....बड़े (संगठित) आवाज़ से ललकार करो, छोटे आवाज़ से करते हो तो छोटा आवाज़ वहाँ के (संगमयुगी) गुरुद्वारों के आवाज़ में छिप जाता है। (अ.वा.19.12.78 पृ.136-137)

**(vi)** अनेकों में फँसना यह आयरन एज है। अथॉरिटी से और सत्यता से बोलो (एक ओंकार), संकोच से नहीं। सत्यता प्रत्यक्षता का आधार है। (बाप की) प्रत्यक्षता करने के लिए पहले स्वयं को प्रत्यक्ष करो, निर्भय बनो। एक बल, एक भरोसे पर अचल और अटल रहने वाले- यह अनुभव अनेकों को निश्चयबुद्धि बनाने वाला होता है।
(अ.वा.23.1.79 पृ.239 अंत, 240 आदि)

## (3) लक्ष्यपूर्ति का तरीका -

(i) **''अपने महावीरों का ऐसा विशेष ग्रुप बनाओ जो दृढ़ संकल्प द्वारा जाननहार और करनहार का साक्षात् स्वरूप बन करके दिखाएँ.....यू.पी. जोन विशेष भाग्यशाली रहा......मेले भी हुए, सम्मेलन भी हुए। अभी कोई नई रूप-रेखा बनाओ।''**
(अ.वा.5.12.78 पृ.103 से 105)

(ii) **''छोटे-2 ग्रुप बनाकर चारों ओर पहले कुछ अपने सहयोगी बनाओ, स्टूडेण्ट्स कॉम्पीटीशन रखी ना, फिर उसमें से एक चुना। ऐसे हर स्थान पर छोटे-2 ग्रुप बनें और फिर उन सबका एक स्थान पर संगठन हो फिर नाम बाला होगा।''**
(अ.वा.14.11.78 पृ.61 अंत, 62 आदि)

(iii) ''देहली निवासियों को तैयार होना चाहिए....अभी से तीव्र तैयारियाँ करने लग जाना है......देहली पर सबको चढ़ाई करनी है। देहली की धरनी (माताओं) को प्रणाम ज़रूर करना है। देहली का विशेष पार्ट (राजधानी की) स्थापना में है....... **देहली के तरफ़ सभी की नज़र है, बाप की भी नज़र है......**देहली की महावीर पांडवसेना तो बहुत है। पांडवों को मिलकर हर मास कोई सबूत देना चाहिए; क्योंकि देहली के सपूत मशहूर हैं। सपूत अर्थात् (सेवा का) सबूत देने वाले। देहली से सेवा की प्रेरणा मिलनी चाहिए। जैसे सेंट्रल गवर्मेंट है तो सेंटर द्वारा सर्व स्टेशन्स को डायरैक्शन मिलते हैं वैसे सेवा के प्लैन्स वा सेवा को नवीनता में लाने के लिए पार्लियामेंट होनी चाहिए। यही (रूहानी संगठन का किला रूपी) पांडव भवन, पांडव गवर्मेंट की पार्लियामेंट है। **तो पार्लियामेंट में सब तरफ़ के सर्व मेम्बर्स की राय से नये रूल तैयार होते हैं। देहली से हर**

**मास विशेष प्लैन्स आउट होने चाहिए तब समाप्ति समीप आवेगी.....**पहले तो प्लानिंग पार्टी बनाओ जिसमें चारों ओर के महारथी और शक्तियों का भी सहयोग लो। सेवा के प्रति समय प्रति समय देहली में संगठन होना ही चाहिए।''

(अ.वा.26.12.78 पृ.153 से 156 मध्य)

(iv) सेवा में समय दो। जब तक तैयार नहीं होते हो तब तक राज्य आने में देरी है। सेवा का कोई नया प्लैन बनाया है?......**ब्राह्मणों का संगठन होना ही, हाज़िर होना ही सेवा है। यह कोई कम बात नहीं है। समय पर हाज़िर होना, एवररेडी होना।.....** संगठित रूप में आवाज़ बुलंद होना यह भी सेवा है।'' (अ.वा.9.3.81 पृ.32 आदि)

(v) ''**हद की प्रवृत्ति में अपना ज़्यादा समय देते हो या बेहद में? बनना है बेहद का मालिक और समय देते हद में, तो क्या होगा? बेहद के मालिक बनने वाले बेहद की सेवा में ज़रूर लगेंगे। हद निमित्त मात्र, सारा अटेंशन बेहद की सेवा में। बेहद में जाकर सेवा करो, सर्विस में नया मोड़ लाओ।**'' (अ.वा.1.2.79 पृ.261 अंत)

(vi) ''**पर्सनल प्रोग्राम बनाते तो आवाज़ बुलंद नहीं हो सकता। अब फिर जब ऐसी (संगठित) सेवा करेंगे तब महायज्ञ की समाप्ति समारोह करेंगे। अभी तो आरम्भ किया है।**'' (अ.वा.19.3.81 पृ.72 मध्य)

(vii) ''(ईश्वरीय ज्ञान से) वंचित हुई आत्माओं को सम्पर्क और सम्बंध में कैसे लायें?......बाप का कर्तव्य असम्भव को भी सम्भव करने का है......कितनी वंचित आत्माओं को बाप का परिचय दे तृप्त आत्मा बनाने वाली हो?''

(अ.वा.3.2.79 पृ.262 से 266)

(viii) ''**हर ब्राह्मण बच्चों के घर में बाप (की टीचरशिप) का यादगार (गीता-पाठशाला) ज़रूर होनी चाहिए।** जैसे घर-2 में राजा-रानी का फोटो लगाते हैं ना। तो ब्राह्मणों के घर में यह विशेष (बाप के प्रैक्टिकल कर्म की) यादगार हो। जो भी आये उसको बाप का परिचय देते रहो।'' (अ.वा.14.11.79 पृ.22 अंत)

(ix) ''**शक्तियाँ हैं ही पांडवों के लिए ढाल। ढाल मज़बूत होगी तो वार नहीं होगा। इसलिए माताओं को आगे रखने में पांडवों को खुश होना चाहिए। अगर स्वयं आगे रहेंगे तो डण्डे खाने पड़ेंगे। शक्तियों को आगे रखेंगे तो पाण्डवों की भी महिमा है।**

(अ.वा.4.12.79 पृ.89 अंत)

## (4) लक्ष्यपूर्ति में बापदादा एडवांस पार्टी के प्रत्यक्ष मददगार हैं

(i) ''आजकल बापदादा कौन सा काम कर रहे हैं? फाइनल माला बनाने के पहले मणकों के सिलेक्शन का (नं.वार) सेक्शन बना रहे हैं। तब तो ज़ल्दी-2 पिरोते जायेंगे ना।'' (अ.वा.28.1.80 पृ.251 अंत)

(ii) ''यह भी तिलक का गायन है ना कि भक्तों को भगवान (संगमयुग में प्रैक्टिकल) तिलक लगाने आया। तो इस वर्ष आज्ञाकारी बच्चों को स्वयं बाप आपके

सेवा स्थान (गीता पाठशाला) अर्थात् तीर्थ स्थान पर सफ़लता का तिलक देने आयेंगे। बाप तो रोज़ (कहीं न कहीं) चक्कर लगाने आते ही हैं। अगर बच्चे सोये हुये हों, वह उनकी ग़फ़लत है।......तो ज्योति जगाकर बैठो तब तो बाप आयेंगे। कइयों को जगाते भी हैं फिर सो जाते हैं। आवाज़ भी अनुभव करते हैं फिर भी अलबेलेपन की नींद में सो जाते हैं।'' (अ.वा.6.2.80 पृ.279 अंत, 280 आदि)

**(iii)** ''बापदादा भी छोटी-2 सभाएँ करते हैं ना। जैसे आप लोग कभी ज़ोन हैड्स की मीटिंग करते हो।......बापदादा भी वहाँ ग्रुप बुलाते हैं।......पेपर्स को वैरीफाय तो फिर भी (न.वार) बच्चों से करायेंगे......भाई, भाई से वैरिफाय तो करायेंगे ना।'' (अ.वा.16.1.80 पृ.213मध्य)

**(iv)** ''पांडव नाम से दिलशिकस्त आत्मा स्वयं को उत्साह दिलाती है कि 5 पांडवों के समान बाप का साथ लेने से विजयी बन जायेंगे। थोड़े हैं तो कोई हर्जा नहीं।.......**बाप के भाग्य को तो आत्माएँ वर्णन करती हैं; लेकिन आप (मणकों) के भाग्य को बाप वर्णन करते हैं। इससे बड़ा भाग्य न हुआ है, न होगा।''**

(अ.वा.4.2.80 पृ.267, 270)

**(v)** ''भक्त, भगवान के आगे परिक्रमा लगाते हैं; लेकिन भगवान अब क्या करते हैं? भगवान बच्चों के (आगे) पीछे परिक्रमा लगाते हैं। आगे बच्चों को करते पीछे खुद चलते हैं। सब कर्म में चलो बच्चे, चलो बच्चे कहते रहते हैं। यह विशेषता है ना। बच्चों को मालिक बनाते, स्वयं बालक बन जाते, इसलिए रोज़ मालेकम् सलाम कहते हैं।......जिस समय ऑर्डर करते हो और हाज़िर हो जाते हैं।

(अ.वा.18.1.81 पृ.9 अंत, 10 आदि)

**(vi) एडवांस पार्टी-** ''एडवांस पार्टी का भी कार्य कोई कम नहीं है। सुनाया ना वह जोर-शोर से अपने प्लैन बना रहे हैं। वहाँ भी नामीग्रामी हैं।'' (अ.वा.25.1.80 पृ.246 आदि) ● ''एडवांस (पार्टी) का ग्रुप, उसमें भी जो विशेष नामी-ग्रामी आत्माएँ हैं उनका संगठन बहुत मज़बूत है। (दिल्ली राजधानी में कृष्ण का) श्रेष्ठ जन्म, फर्स्ट जन्म दिलाने के लिए (बुद्धि रूपी) धरनी तैयार करने का वंडरफुल पार्ट इन आत्माओं द्वारा तीव्र गति से चल रहा है।'' (अ.वा.18.1.80 पृ.222 अंत)

## (5) सन् 81 से ही लक्ष्य पूर्ति का श्रीगणेश

(i) ''संगठित रूप का, ज्वाला रूप शांतिकुण्ड का महायज्ञ रचना है।.......... इस वर्ष (रुद्रमाला की यादगार विकलांग वर्ष सन् 81) स्वयं की शक्तियों द्वारा, स्वयं के गुणों द्वारा, निर्बल आत्माओं को बाप के समीप लाओ। ...... इच्छा रूपी एक टांग अब प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे रही है; लेकिन उन्हें अपनी शक्ति से हिम्मत की दूसरी टांग दो। तब बाप के समीप चल करके आ सकेंगे।......लंगड़ों को चलाना है...... इसी

वर्ष में......संगठित रूप में प्रत्यक्षता का, एक बल, एक भरोसे का नारा लेकर सेवा की स्टेज पर आना है।'' (अ.वा.20.1.81 पृ.13 से 15)

(ii) ''सुनना और सुनाना भी बहुत हो गया। साकार रूप में सुनाया, अव्यक्त रूप में भी कितना सुनाया, एक वर्ष नहीं; लेकिन 13 वर्ष। अभी तेरहवें में तेरा ही होना चाहिए ना। तेरा हूँ।'' (अ.वा.21.3.81 पृ.80 मध्य) (तो जिस धर्मराज बाप का हूँ वह आकर हिसाब भी तो लेगा ना; लेकिन) "अभी वह समय नहीं है। अभी तो चल जाता है, कोई हिसाब लेने वाला ही नहीं है; लेकिन थोड़े समय के बाद अपने आपको ही पश्चाताप होगा।" (अ.वा.18.1.79 पृ.232 मध्य) (क्योंकि) "अभी थोड़े समय के अंदर धर्मराज का रूप प्रत्यक्ष अनुभव करेंगे; क्योंकि अब अंतिम समय है।'' (अ.वा.22.10.70 पृ.310 अंत)

(iii) ''विशेष इस वर्ष (80/81) में रहे हुए गुप्त वारिसों को प्रत्यक्ष करो। अब तक जो किया है वह बहुत अच्छा किया है, अभी और भी चारों ओर की आत्माएँ वन्स मोर करें। वाह-2 की ताली बजायें- ऐसा विशेष कार्य भी यू.पी. वाले करेंगे।'' (अ.वा.12.12.79 पृ.110 अंत)

(iv) ''**यह है विधि-विधाताओं की सभा......विधि-विधाताओं की विशेष शक्ति है.......सत्यता अर्थात् रियलिटी.......सत्य बाप का सत्य परिचय मिलने से अथॉरिटी से कहते हो परम-आत्मा हमारा बाप है।** (रुद्रमाला के) वर्से के अधिकार की शक्ति से कहते हो बाप हमारा और हम बाप के।.......आप पाँच पांडव अर्थात् कोटों में कोई थोड़ी सी आत्माएँ चैलेंज करते हो.......नये-2 आये हैं ना! ऐसे तो नहीं समझते हम थोड़े हैं; लेकिन ऑलमाइटी अथॉरिटी आपका साथी है। सत्यता की शक्ति वाले हो। 5 नहीं हो; लेकिन विश्व का रचयिता आपका साथी है। इसी फलक से बोलो।'' (अ.वा.11.4.81 पृ.141 से 145)

(v) ''सभी अपने को इस (संगमयुगी) विश्व के अंदर (सागर के 60 हज़ार पुत्र रूपी) सर्व आत्माओं में से चुनी हुई श्रेष्ठ आत्मा समझते हो? यह समझते हो कि स्वयं बाप ने हमें अपना बनाया है? बाप ने (सन् 78 पृ.2 के अनुसार) विश्व के अंदर से कितनी थोड़ी (16 हज़ार 108) आत्माओं को चुना और उनमें से हम श्रेष्ठ (108) आत्माएँ हैं। यह संकल्प करते ही क्या अनुभव होगा? अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति होगी।.....इसको कहा जाता है नवीनता। नया दिन, नई रात, नया परिवार... सब कुछ नया। (अ.वा.9.3.81 पृ.34 आदि)

(vi) ''देहली क्या करेगी? जमुना के किनारे पर अभी राजयोग महल बनेंगे......यू. पी. को धर्मयुद्ध का खेल दिखाना चाहिए। सुनाया ना, अभी तो सिर्फ़ (संगमयुगी) धर्म नेताएँ जो ऊँची आँखें करके सामना करते थे, अभी आँखें नीचे की हैं; लेकिन अब सिर झुकाना है। अब आप लोगों की स्टेज पर आते हैं; लेकिन अपनी स्टेज पर (मधुबन में) आपको चीफ गेस्ट कर बुलावें, तब कहेंगे कि सिर झुकाया है। (अ.वा.24.12.79 पृ.146 अंत)